ISBN: 978-93-341-2449-1

डॉ० शशिभूषण मिश्र का साहित्यिक एवं शैक्षिक योगदान



●राजीव अग्रवाल

●विकास तिवारी

डॉ० शशिभूषण मिश्र का साहित्यिक एवं शैक्षिक योगदान

डॉ. राजीव अग्रवाल

एसोसिएट प्रोफेसर

शिक्षक-शिक्षा विभाग

अतर्रा पी०जी० कॉलेज, अतर्रा (बाँदा)

विकास तिवारी

एम.ए. (राजनीति शास्त्र, अंग्रेजी साहित्य तथा शिक्षाशास्त्र), एम.एड.

डॉ० शशिभूषण मिश्र का साहित्यिक एवं शैक्षिक योगदान

राजीव अग्रवाल

विकास तिवारी

E-book संस्करण: 2024

मूल्य: ₹49

ISBN: 978-93-341-2449-1

प्रकाशक:

विकास तिवारी

ग्राम एवं पोस्ट जमालपुर, जिला-बाँदा उत्तर प्रदेश-210001

Mob. 9415062806

ई-मेल: vikastiwari9415@gmail.com

प्राक्कथन

किसी भी राष्ट्र अथवा समाज के विकास का सर्वाधिक महत्वपूर्ण साधन मानव है। कोई भी राष्ट्र तब ही उन्नति कर सकता है, जब उस राष्ट्र के सभी नागरिकों को विकास के सर्वोत्तम अवसर मिलें तथा वे उन अवसरों का लाभ उठाने के लिए समर्थ हो। मानव को पृथ्वी का सबसे विलक्षण, विचारशील तथा सक्रिय प्राणी माना जाता है। अपनी मानसिक क्षमता, चिन्तन प्रक्रिया तथा सृजनात्मक शक्ति के आधार पर मानव ने न केवल ब्रह्माण्ड की परिधि को लाँघा है वरन् अपनी सभ्यता तथा संस्कृति का विकास करते हुए आनन्ददायक जीवन व्यतीत करने की दिशा में अग्रसर हुआ है, परन्तु मानव जाति के विकास का आधार शिक्षा प्रणाली ही है।

शिक्षा मानव विकास की वह प्रक्रिया है, जो व्यक्ति का सर्वांगीण विकास कर उसे सफलता के सर्वोच्च शिखर पर पहुँचाती है। शिक्षा जीवन पर्यन्त चलने वाली प्रक्रिया है, जो जन्म से शुरू होकर मृत्यु तक चलती रहती है। मनुष्य सदैव कुछ-न-कुछ सीखता रहता है। शिक्षा व्यक्ति की शारीरिक, मानसिक, सामाजिक, नैतिक, चारित्रिक, संवेगात्मक तथा आध्यात्मिक शक्तियों का विकास कर इस योग्य बनाती है कि वह संसार में अपनी एक अलग पहचान बनाता है। वास्तव में शिक्षा ज्ञान के प्रचार-प्रसार का एक माध्यम है और इसका उद्देश्य एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक जीवन के सभी मूल्यों को पहुँचाने तथा भावी पीढ़ी को आने वाली चुनौतियों का सामना करने के लिए तैयार करना है।

प्रस्तुत पुस्तक का शीर्षक है, **डॉ० शशिभूषण मिश्र का साहित्यिक एवं शैक्षिक योगदान।** इस पुस्तक को पांच अध्यायों में विभाजित किया गया है।

प्रथम अध्याय का शीर्षक अध्ययन परिचय है, जिसके अन्तर्गत, वर्तमान शिक्षा प्रणाली की समस्याएँ, समस्या का प्रादुर्भाव, अध्ययन के उद्देश्य, शोध विधि, अध्ययन का महत्व एवं सार्थकता पर प्रकाश डाला गया है।

द्वितीय अध्याय में अध्ययन से सम्बन्धित साहित्य का सर्वेक्षण किया गया है, जिसके अन्तर्गत शैक्षिक योगदान से सम्बन्धित कतिपय शोध अध्ययनों की समीक्षा एवं निष्कर्ष प्रस्तुत किए गए हैं।

तृतीय अध्याय में डॉ० शशिभूषण मिश्र का जीवन परिचय, वंश परम्परा, अध्ययन यात्रा, अध्यापन यात्रा, साहित्यिक सम्मेलनों एवं राष्ट्रीय संगोष्ठियों में सहभागिता एवं सम्मान, उनकी यात्राएँ, उनकी विशेषताएँ, उनका शैक्षिक योगदान, उनका हिन्दी के उन्नयन हेतु साक्षात्कार तथा डॉ० शशिभूषण मिश्र एवं उनके साहित्य के सम्बन्ध में अन्य विद्वानों की सम्मतियों के विभिन्न पहलुओं का वर्णन किया गया है।

चतुर्थ अध्याय में डॉ० शशिभूषण मिश्र की साहित्य सर्जना का उल्लेख किया गया है। जिसके अन्तर्गत पुस्तकों एवं पत्रिकाओं में प्रकाशित लेखों, प्रकाशित एवं सम्पादित पुस्तकों तथा सम्पादित पत्रिकाओं का वर्णन किया गया है।

पञ्चम अध्याय पुस्तक का अन्तिम अध्याय हैं, जिसमें निष्कर्ष, शैक्षिक निहितार्थ, अध्ययन के सुझाव, शैक्षिक उपादेयता एवं भावी शोध हेतु सुझाव प्रस्तुत किए गए हैं।

प्रस्तुत पुस्तक लघु शोध-प्रबन्ध पर आधारित है। प्रत्येक शोध कार्य सोद्देश्य होता है और शोध कार्य के परिणामों के उचित क्रियान्वयन पर ही यह उद्देश्य सार्थक हो सकता है। इस कार्य के लिए शोध कार्य को जनमानस के लिए सुलभ बनाने की नितांत आवश्यकता होती है। एक पुस्तक के रूप में शोध कार्य को प्रकाशित करने से यह कार्य सुगमता से पूर्ण हो सकता है। शोध कार्य के पुस्तक के रूप में प्रकाशन से वैज्ञानिक ज्ञान में वृद्धि होती है तथा अन्य बुद्धिजीवियों को अनेक क्षेत्रों में नवीन अनुसंधान करने की प्रेरणा भी प्राप्त होती है। प्रस्तुत पुस्तक इसी दिशा में किया गया एक प्रयास है। यह पुस्तक निश्चित ही जनमानस में डॉ० शशिभूषण मिश्र जी की साहित्यिक एवं शैक्षिक उपादेयता पर प्रकाश डालने में सहायक सिद्ध होगी।

इस पुस्तक के सृजन में सन्दर्भ ग्रन्थ सूची में उल्लिखित विभिन्न पुस्तकों का सहयोग लिया गया है, हम उन सभी के प्रति कृतज्ञता प्रकट करते हैं।

प्रस्तुत पुस्तक में अनेक त्रुटियाँ होना स्वाभाविक है। अतएव यदि अनुभवी विद्वतगण अवगत कराने का कष्ट करेंगे तो, हम अत्यन्त आभारी रहेंगे और आगामी संस्करणों में उन त्रुटियों को दूर कर सकेंगे।

राजीव अग्रवाल

विकास तिवारी

अनुक्रमणिका

अनुक्रमणिका

अध्याय	विषय वस्तु	पृष्ठ संख्या

अध्याय	विषय वस्तु	पृष्ठ संख्या

परिशिष्ट

प्रथम अध्याय

अध्ययन परिचय

1.1अध्ययन की पृष्ठभूमि

1.1.1 शिक्षा: एक विकास की प्रक्रिया

1.1.2 वर्तमान भारतीय शिक्षा प्रणाली की समस्याएँ

1.2 समस्या का प्रादुर्भाव

1.3 समस्या कथन

1.4 अध्ययन के उद्देश्य

1.5 अध्ययन का सीमांकन

1.6 शोध विधि

1.6.1 वर्णनात्मक अध्ययन

1.6.2 केस अध्ययन विधि

1.7 अध्ययन का महत्त्व एवं सार्थकता

प्रथम अध्याय
अध्ययन परिचय

1.1 अध्ययन की पृष्ठभूमि

शिक्षा मानव विकास का मूल साधन है। इसके द्वारा मनुष्य की जन्मजात शक्तियों का विकास, उसके ज्ञान एवं कला-कौशल में वृद्धि एवं व्यवहार में परिवर्तन किया जाता है और उसे सभ्य, सुसंस्कृत एवं योग्य नागरिक बनाया जाता है। यह कार्य मनुष्य के जन्म से प्रारम्भ हो जाता है। बच्चे के जन्म के कुछ दिन बाद ही उसके माता-पिता एवं परिवार के अन्य सदस्य उसे सुनना और बोलना सिखाने लगते हैं। लगभग 5 वर्ष की आयु पर बालक को विद्यालय भेजना प्रारम्भ किया जाता है। विद्यालय के साथ-साथ उसे परिवार एवं समुदाय में भी कुछ न कुछ सिखाया जाता रहता है और सीखने-सिखाने का यह क्रम विद्यालय छोड़ने के बाद भी चलता रहता है और जीवन पर्यन्त चलता रहता है। अपने वास्तविक अर्थ में समाज में सदैव चलने वाली सीखने-सिखाने की यह सप्रयोजन प्रक्रिया ही शिक्षा है।

शिक्षा शब्द संस्कृत भाषा की 'शिक्ष्' धातु में 'अ' प्रत्यय लगाने से बना है। 'शिक्ष्' का अर्थ है सीखना और सिखाना, इसलिए 'शिक्षा' का अर्थ हुआ सीखने-सिखाने की क्रिया। यदि हम शिक्षा के लिए प्रयुक्त अंग्रेजी शब्द एजूकेशन (Education) पर विचार करें तो भी उसका यही अर्थ निकलता है। एजूकेशन शब्द लैटिन भाषा के एजूकेटम (Educatum) शब्द से बना है और एजूकेटम उसी भाषा के ए (E) तथा ड्यूको (Duco) दो शब्दों से मिलकर बना है जिनका क्रमश: अर्थ 'अन्दर से' तथा 'आगे बढ़ाना' है, इसलिए एजूकेशन का अर्थ हुआ-बच्चे की आन्तरिक शक्तियों को बाहर की ओर प्रकट करना।

हम शिक्षा शब्द के प्रयोग को देखें तो यह दो रूपों में प्रयोग में लाया जाता है। व्यापक रूप में तथा संकुचित रूप में; व्यापक अर्थ में शिक्षा किसी समाज में सदैव चलने वाली सोद्देश्य सामाजिक प्रक्रिया है। जिसके द्वारा मनुष्य की जन्मजात शक्तियों का विकास, उसके ज्ञान एवं कौशल में वृद्धि एवं व्यवहार में परिवर्तन किया जाता है और इस प्रकार उसे सभ्य, सुसंस्कृत एवं योग्य नागरिक बनाया जाता है। मनुष्य क्षण-प्रतिक्षण नए-नए अनुभव प्राप्त करता है व करवाता है, जिससे उसका दिन-प्रतिदिन का व्यवहार प्रभावित होता है। उसका

यह सीखना-सिखाना विभिन्न समूहों, उत्सवों, पत्र-पत्रिकाओं, रेडियो, टेलीविजन आदि से अनौपचारिक रूप से होता है। यही सीखना-सिखाना शिक्षा के व्यापक तथा विस्तृत रूप में आते हैं। जे०एस० मैकेन्जी (J.S. Mackenzie) के अनुसार "व्यापक दृष्टि से शिक्षा जीवनपर्यन्त चलने वाली प्रक्रिया है और जीवन के प्रत्येक अनुभव के द्वारा इसका विकास होता है।"

संकुचित अर्थ में शिक्षा किसी समाज में एक निश्चित समय तथा निश्चित स्थानों (विद्यालय, महाविद्यालय, विश्वविद्यालयों) में सुनियोजित ढंग से तथा औपचारिक रूप से चलने वाली एक सोद्देश्य सामाजिक प्रक्रिया है। जिसके द्वारा विद्यार्थी निश्चित पाठ्यक्रम को पढ़कर सम्बन्धित परीक्षाओं को उत्तीर्ण करना सीखता है। इस शिक्षा के उद्देश्य, पाठ्यचर्या और शिक्षण विधियाँ, सभी निश्चित होते हैं। यह शिक्षा बच्चे की एक निश्चित आयु पर प्रारम्भ होती है और एक निश्चित काल तक होती है। जे०एस० मैकेन्जी (J.S. Mackenzie) के अनुसार "संकुचित दृष्टि से शिक्षा का अर्थ अपनी शक्तियों का विकास और सुधार के लिए किए गए किन्हीं भी चेतना पूर्ण प्रयासों से लिया जा सकता है।"

1.1.1 शिक्षा: एक विकास की प्रक्रिया

मनुष्य का जन्मजात व्यवहार पशुवत् होता है। शिक्षा के द्वारा उसके इस व्यवहार में परिवर्तन एवं परिमार्जन किया जाता है। अधिक विस्तृत दृष्टिकोण से देखें तो मनुष्य अपने अनुभवों को भाषा के माध्यम से सुरक्षित रखता है और उनको आने वाली पीढ़ी के हाथों सौंप देता है। आने वाली पीढ़ी इस ज्ञान के आधार पर और आगे बढ़ती है और इसमें अपने अनुभव तथा विचार जोड़ देती है। इस प्रकार किसी समाज की सभ्यता एवं संस्कृति का विकास होता है। शिक्षा के आभाव में यह सब सम्भव नहीं है। स्पष्ट है कि शिक्षा विकास की प्रक्रिया है। संसार का प्रत्येक प्राणी अपनी जाति के प्राणियों के बीच रहकर, अनुकरण द्वारा, उनके अनुसार चलना-फिरना, खाना-पीना और बोलना आदि सीखता है। पशु-पक्षी जन्म के कुछ दिन पश्चात ही अपनी जाति के प्राणियों की भाँति उनकी समस्त क्रियाएँ सीख लेते हैं परन्तु उनकी सीखने-सिखाने की यह प्रक्रिया केवल परिस्थितियों के साथ समायोजन कर आत्मरक्षा के कार्यों तक सीमित रहती है जबकि मनुष्य की शिक्षा उसे केवल परिस्थितियों के साथ समायोजन करना ही नहीं सिखाती अपितु उसमें अपने अनुकूल परिस्थितियों का

निर्माण करने की क्षमता का विकास भी करती है। शिक्षा के द्वारा मनुष्य के रहन-सहन, खान-पान एवं विचारों और जीवन को सुखमय बनाने के लिए साधन तथा उपसाधनों के निर्माण में सदैव परिवर्तन होता रहता है। इस परिवर्तन का दूसरा नाम विकास है।

1.1.2 वर्तमान शिक्षा प्रणाली की समस्याएँ

- **शिक्षा का व्यवसायीकरण**

माध्यमिक शिक्षा के व्यवसायीकरण को लेकर भारत सरकार ने कई आयोगों का गठन ही नहीं किया अपितु उनकी सलाह पर कार्य भी किया। परन्तु फिर भी स्थिति में ज्यादा सुधार नहीं हुआ। इसके सम्बन्ध में कोठारी आयोग 1964 ने कहा है- बार-बार सलाह देने के पश्चात भी दुर्भाग्य की बात यह है कि विद्यालय स्तर पर व्यवसायिक शिक्षा को एक घटिया किस्म की शिक्षा समझा जाता है और अभिभावक तथा विद्यार्थियों का सबसे आखरी चुनाव होता है। शिक्षा का व्यवसायीकरण का सामान्य शब्दों में अर्थ होता है। किसी व्यवसाय में प्रशिक्षण अर्थात विद्यार्थी को एक व्यवसाय सिखाना ताकि वह अपना जीवन यापन सुगमता से कर सके। शिक्षा के साथ-साथ उन कोर्सों की भी व्यवस्था की जाए जो छात्रों को शिक्षा के साथ-साथ किसी व्यवसाय में भी कुशल व्यक्ति बनाएँ।

- **शिक्षा का राजनीतिकरण**

'शिक्षा' मानव विकास का मूल साधन है। हमारी मनोवृत्ति का निर्माण हमारे जीवन, आचरण एवं परिवेश के अनुरूप ही होता है। हमारे जीवन तथा कार्यशैली का मूल आधार हमारी 'शिक्षा' है। किसी भी राष्ट्र का विकास उस देश की शिक्षा पद्धति पर निर्भर होता है। शिक्षा की प्राथमिक भूमिका एक छात्र के पढ़ने, समझने और समझ में सुधार के माध्यम से शिक्षित करना ही है। देश की उन्नति के लिए हर व्यक्ति जिम्मेदार है और इस जिम्मेदारी का विकास शिक्षा द्वारा ही सम्भव है। राजनीतिशास्त्रियों का विचार केन्द्र राज्य और उसका शासनतन्त्र होता है। ये व्यक्ति और समाज, दोनों को राज्य और उसके शासनतन्त्र के सन्दर्भ एवं परिप्रेक्ष्य में देखते, समझते हैं। शिक्षा को ये राष्ट्र के निर्माण का साधन मानते हैं। राष्ट्र का निर्माण होता है श्रेष्ठ नागरिकों से और श्रेष्ठ नागरिकों का निर्माण होता है शिक्षा से। इनकी दृष्टि से- 'वास्तविक शिक्षा वह है जो श्रेष्ठ नागरिकों का निर्माण करती है।'

भारतीय शिक्षा का राजनीतिक एजेंडों के साथ जुड़ने का एक लम्बा इतिहास रहा है। हाल के वर्षों में यह प्रवृत्ति तीव्र हो गई है, जिसका प्रभाव शैक्षणिक जीवन एवं संस्थागत अखण्डता के विभिन्न पहलुओं पर पड़ता है। राजनेता अपने कैरियर को बेहतर बनाने के लिए समय-समय पर कॉलेजों की स्थापना करते रहे हैं। सरकारों ने शैक्षणिक संस्थानों को राजनीतिक रूप से लाभप्रद स्थानों पर स्थापित करने, शिक्षण संस्थाओं का नामकरण और पुनर्नामकरण करने तथा नियुक्तियाँ और पदोन्नतियाँ करने में राजनीतिक हस्तक्षेप से शैक्षणिक स्वतंत्रता प्रभावित हुई है।

शिक्षा के राजनीतिकरण से शैक्षणिक स्वतंत्रता में कमी, विचारों की विविधता में कमी, छात्र सक्रियता का राजनीति से प्रभावित होना, शोध वित्तपोषण में कमी, रोजगार में कमी तथा आदर्श नागरिकों के निर्माण की समस्याएँ दृष्टिगोचर होती हैं। विद्यार्थियों को क्या पढाया जाए इस विषय पर सत्ताधारी दल अपना एजेंडा कोर्स में लागू करने लगता है परिणामस्वरूप पाठ्यक्रम में अनावश्यक और अवैज्ञानिक विषयों को भर दिया जाता है। आज के समय में शिक्षा का स्तर तथा विकास राजनीति के घेरे में है। ऐसे में शिक्षा का स्तर कैसे सुधारा जाए यह विचारणीय है। वर्तमान शिक्षा व्यवस्था में ऐसी खामियाँ हैं जिनके चलते शिक्षण संस्थाओं में गुणवत्तापूर्ण शिक्षा नहीं मिल पा रही है। इनका सबसे बड़ा कारण शिक्षा का राजनीतिकरण है।

- **शिक्षा व्यवस्था में क्षरण को पश्चिमी पद्धति जिम्मेदार**

वर्तमान शिक्षा व्यवस्था क्षरण की ओर है। इसके लिए केवल छात्र ही नहीं बल्कि अभिभावक एवं शिक्षक भी जिम्मेदार हैं। जिसमें शिक्षकों ने वर्तमान शिक्षा व्यवस्था पर अपने-अपने विचार दिए। पुरातन गुरु-शिष्य परम्परा हमारी देशी शिक्षा पद्धति थी जिसमें छात्र अनुशासन में बंधकर गुरू का सम्मान करते थे। शिक्षा पाते थे। परन्तु अब ऐसी स्थिति नहीं है। शिक्षा का बाजारीकरण हो गया है। जिसका कारण वर्तमान शिक्षा प्रणाली क्षरण की ओर है। अभिभावक भी इस पर ध्यान नहीं देते। अभिभावक भी बच्चों को शिक्षकों के पास भेज तो देते हैं लेकिन वे यह जानने का प्रयास नहीं करते कि वर्तमान शिक्षा व्यवस्था क्षरण की ओर है। इसके लिए केवल छात्र ही नहीं अभिभावक तथा शिक्षक भी जिम्मेदार हैं। प्राचीन गुरु-शिष्य परम्परा के टूटने से वर्तमान में शिक्षा की यह दुर्गति हुई है। पाश्चात्य शिक्षा पद्धति ने हमारी संस्कृति पर घात किया है। इस पर हम सभी को गहन चिन्तन के साथ राजनयिकों को भी गम्भीरता से शिक्षा व्यवस्था में बदलाव करना होगा। वर्तमान

में शिक्षक-छात्र सम्बन्धों में कमी आई है। यह एक औपचारिकता के स्तर पर आ गया है। छात्रों में सम्मान देने की भावना में कमी आई है। इसमें छात्र ही दोषी नहीं है अपितु बहुत हद तक शिक्षक भी जिम्मेदार है। देखने में आ रहा है कि बहुत जगह शिक्षक इस सम्मान का गलत फायदा उठाते हैं। पूर्व में गुरु-शिष्य सम्बन्ध नि:स्वार्थ था तथा वर्तमान में यह स्वार्थपरक हो गया है। पैसा कमाने की सारी हदें शिक्षक पार कर चुके हैं। जिस कारण यह क्षरण देखने को मिल रहा है। समय आ गया है कि अभिभावक, गुरू एवं छात्र चिन्तन करें। दूसरे पाश्चात्य शिक्षा पद्धति भी इस क्षरण के लिए जिम्मेदार है। इसे पुन: प्रतिष्ठापित करने के लिए एक प्रकार की शिक्षा की व्यवस्था करना पड़ेगा। वर्तमान शिक्षा व्यवस्था में क्षरण के ढ़ेरों कारण हैं। सरकारी शिक्षा व्यवस्था का क्षरण होने के साथ ही निजी कोचिंग क्लासेज व निजी स्कूल का उदय कारण बना। सरकारी विद्यालयों में न तो मजबूत आधारभूत संरचना है और न ही योग्य शिक्षक जिस कारण शिक्षा का बाजारीकरण होते चला गया, जो अब चरम पर है। इस समानान्तर शिक्षा प्रणाली में पैसा कमाना मुख्य ध्येय रह गया है।

- **शिक्षा की उपेक्षा**

शिक्षा किसी भी राष्ट्र के विकास की रीढ़ होती है। प्राथमिक शिक्षा तो भवन की नींव की तरह है। यदि नींव ही कमजोर हो गई है तो मजबूत भवन की उम्मीद बेमानी हो जाती है। दुर्भाग्य से तमाम सरकारी स्कूलों में ऐसा ही हो रहा है। स्कूलों मे आधारभूत ढाँचे से लेकर अध्यापकों तक का अभाव है। एक अध्यापक पांच-पांच कक्षाएँ संभाल रहा है। ऐसी स्थिति के कारण ही अभिभावक सरकारी स्कूलों में अपने बच्चों का दाखिला करवाने से परहेज करते हैं और प्राइवेट स्कूलों को प्राथमिकता देते हैं। सरकारी स्कूलों की दयनीय स्थिति के कारण ही गली-गली में प्राइवेट स्कूल खुल गए हैं। तमाम प्राइवेट स्कूलों ने शिक्षा को व्यवसाय बना लिया है और अभिभावकों का भरपूर शोषण कर रहे हैं। सरकारी स्कूल की बात करें तो यहाँ विगत कुछ वर्षो से अध्यापक ही नहीं हैं या अध्यापकों की बहुत कमी है। ऐसी खबरें हैरान करती हैं, साथ ही सरकार व शिक्षा विभाग के आला अधिकारियों की कार्यप्रणाली पर सवालिया निशान भी लगाती हैं। यह स्थिति देश के सम्पन्न राज्यों में शुमार पंजाब की हो तो और आश्चर्य होता है। आखिर सरकार को स्कूलों में अध्यापकों की व्यवस्था करने के लिए कितना वक्त चाहिए। क्या सरकार इतनी लाचार है कि स्कूलों में अध्यापकों की भी नहीं नियुक्त कर सकती। गाँव के स्कूल में एक अध्यापिका है तथा वह तीन साल में स्कूल गई है। यहाँ बच्चों को पढ़ाने के लिए एक

एन०आर०आई० ने अपने स्तर पर वेतन देकर दो अध्यापिकाओं की व्यवस्था की है। ऐसी स्थिति में यह तो तय है कि वहाँ पढ़ने वाले बच्चों का भविष्य प्रभावित ही होगा। संविधान के 86 वें संशोधन अधिनियम 2002 द्वारा अनुच्छेद 21 (क) जोड़ा गया था जो यह प्रावधान करता है कि राज्य विधि बनाकर 6 से 14 वर्ष के बच्चों के लिए अनिवार्य एवं नि:शुल्क शिक्षा की व्यवस्था करेगा। केन्द्र सरकार ने इस अधिकार को व्यावहारिक रूप देने के लिए संसद में नि:शुल्क एवं अनिवार्य शिक्षा अधिनियम 2009 पारित किया था जो 1 अप्रैल 2010 से लागू हुआ। इसका मकसद यही था कि हर बच्चे को शिक्षा मिले क्योंकि यह उसका अधिकार है। लेकिन सिर्फ कानून बन जाने से बात नहीं बनती, यह तो सरकारों को देखना होगा कि कानून के मुताबिक काम हो रहा है या नहीं। अध्यापकों से सख्ती से पेश आना चाहिए तथा विद्यालयों में मानकानुसार शिक्षकों की तैनाती भी होनी चाहिए। क्योंकि शिक्षा की उपेक्षा करना देश के भविष्य से खिलवाड़ करने जैसा है।

- **भारतीय संस्कृति की उपेक्षा**

भारतीय संस्कृति बहुत विलक्षण है। इसके सभी सिद्धान्त पूर्णतः वैज्ञानिक हैं और सभी सिद्धान्तों का एक मात्र उद्देश्य है- मनुष्य का कल्याण करना। मानव जीवन में संस्कार और संस्कृति का बहुत महत्व है। संस्कार सम्पन सन्तान ही गृहस्थ की सफलता और समृद्धि का रहस्य है। इसलिए प्रत्येक माता-पिता का कर्तव्य बनता है कि वे अपने बच्चों को नैतिक बनाएं और कुसंस्कारों से बचाकर बचपन से ही उनमे आदर्श और संस्कारों का ही बीजारोपण करें। लेकिन आज भारतीय संस्कृति और संस्कार सब लुप्त होते दिखाई दे रहे हैं। आज बालकों में हिंसा तथा व्यभिचार की प्रवृत्ति बढ़ रही है। आखिर क्यों आज युवा वर्ग परिश्रम और धैर्य से दूर होता जा रहा है? समाज में सात्विक प्रवृत्ति का दमन होता जा रहा है। हम पाश्चात्य संस्कृति की ओर बढ़ रहे हैं। जहाँ पूरा विश्व हमारी भारतीय संस्कृति और संस्कारों को अपना रहा है। वहीं हम अपनी संस्कृति को भूलकर उनकी संस्कृति को अपना रहे हैं। यह हमारी मूर्खता नहीं है तो और क्या है? आज हम अपनी भारतीय संस्कृति की अवहेलना करने लगे हैं। संस्कारो की उपेक्षा एवं पश्चिमी जीवन शैली के अंधानुकरण से समाज में अनेक दुष्परिणाम सामने आ रहे हैं। जैसे कि आहार प्रणाली में बदलाव से अनेक बीमारियाँ, शिक्षा पद्धति में वदलाव से अनेक मानसिक कुरीतियाँ और पाश्चात्य रहन-सहन से अनेक सामाजिक कुरीतियाँ उत्पन्न हो गई हैं।

- **योग्य शिक्षकों का अभाव**

भारतीय शिक्षा व्यवस्था की सबसे बड़ी समस्या योग्य शिक्षकों की कमी है। शिक्षण के जुनून या वित्तीय कारणों के बिना अच्छे शिक्षक शिक्षण के क्षेत्र में नहीं आते हैं। आमतौर पर ऐसा देखा जाता है कि शिक्षण व्यवसाय को चुनने वाले उम्मीदवार शिक्षण के अतिरिक्त किन्हीं दूसरे क्षेत्रों की नौकरियों को प्राथमिकता देते हैं तथा शिक्षण को बैकअप के रूप में उपयोग करते हैं जो बेहद चिंताजनक है। दुर्भाग्यवश हमारे देश में शिक्षक, विशेषकर सरकारी स्कूल प्रणाली में काम करने वाले शिक्षकों को प्रशासन की समस्याओं का सामना करना पड़ता है। इसमें सारा जोर अध्यापकों के कौशल और प्रेरणा को विकसित करने के बजाय उन्हें कक्षा में लाने पर केन्द्रित रहता है। राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसन्धान और प्रशिक्षण परिषद् (NCERT) द्वारा कराए गए एक अध्ययन में पाया गया कि शिक्षकों के प्रशिक्षण के लिए प्रशिक्षण डिज़ाइनिंग में शिक्षकों के फीडबैक को कोई महत्त्व नहीं दिया जाता है तथा साथ ही स्थानीय मुद्दों में कोई खास बदलाव नहीं किया जाता और न ही इन पर विचार करने को अहमियत दी जाती है। इस प्रकार के प्रशिक्षणों का परिणाम बेहद सीमित एवं अप्रभावशाली होता है। ऐसे में शिक्षकों की कार्यशीलता एवं व्यावसायिक नैतिकता प्रभावित होना लाज़मी है। कौशल, मानसिकता, व्यावसायिक नैतिकता एवं प्रभावशीलता में कमियों की एक लम्बी श्रृंखला है। लगभग आधे शिक्षकों का यह मानना है कि वर्तमान में उन्हें दिया जाने वाला प्रशिक्षण उनके शिक्षण व्यवसाय के लिए पर्याप्त नहीं है।

1.2 समस्या का प्रादुर्भाव

शिक्षा मनुष्य के जीवन में जीवन भर चलने वाली प्रक्रिया है। किसी भी देश के विकास एवं उसके सामाजिक उत्थान में उस देश के नागरिकों का सहयोग अति आवश्यक होता है। अतः शिक्षा एक सामाजिक प्रक्रिया है। प्राचीन काल में शिक्षा धार्मिक, संस्कृति एवं नैतिकता से परिपूर्ण थी। जैसे-जैसे हम आधुनिकता और विज्ञान युग की ओर बढ़ते गए। शिक्षा प्रणाली से धर्म संस्कृति और नैतिकता का लोप होता गया। विज्ञान युग तक आते-आते शिक्षा के क्षेत्र में कई बदलाव आए, शिक्षा का व्यवसायीकरण, राजनीतिकरण हुआ। परन्तु जब तक शिक्षा जीवन के मूल्यों, आदर्शों एवं मान्यताओं का परिचय नहीं देती तब तक वह शिक्षा नहीं कही जा सकती।

आधुनिक समय में उच्च शिक्षा की सबसे बड़ी समस्या **समर्पित, सुयोग्य, अनुभवी, प्रशिक्षित एवं अद्यतित** शिक्षकों का आभाव है, जो अपने कर्तव्यों तथा उत्तरदायित्वों को समझें और विद्यार्थियों की समस्याओं को उतनी ही तत्परता से हल करें, जितना कि वे अपने अन्य निजी कार्यों को करते हैं। वर्तमान शिक्षकों में **त्याग, बलिदान, चारित्रिक एवं नैतिक मूल्यों** का आभाव है और उनका व्यवहार इतना संकुचित हो चुका है कि वे अपने आप में ही मस्त रहते हैं तथा उन्हें विद्यार्थियों के हितों से कोई लेना देना नहीं रहता है जबकि शिक्षक सम्पूर्ण शिक्षण प्रक्रिया का महत्वपूर्ण अंग होता है और भावी पीढ़ी को गढ़ने वाला माना जाता है। वर्तमान में निम्न स्तर के शिक्षक महाविद्यालयों के प्रबंधकों से चापलूसी कर शिक्षक बनते हैं और अपने आप को सर्वेसर्वा समझते हैं तथा विद्यार्थियों एवं अभिभावकों के साथ रुष्ट व्यवहार करते हैं। ऐसा आमतौर पर देखने को मिल जाता है कि राजकीय/निजी/अनुदानित महाविद्यालयों के शिक्षक प्राचार्य एवं विभागाध्यक्ष से अपने ऊपर कृपा दृष्टि बनाए रखने हेतु उनकी जी हुजूरी में लगे रहते हैं जबकि अपने शिक्षण व्यवसाय के प्रति नैतिक रूप से समर्पित नहीं होते, जिसके लिए उन्हें वेतन मिलता है। योग्य एवं व्यावसायिक रूप से नैतिक एवं समर्पित शिक्षकों के द्वारा किये गए कार्यो का प्रचार-प्रसार होना चाहिए तथा उनकी लिखी हुई कृतियों को पाठ्यक्रम में लागू किया जाना चाहिए। इसी तथ्य को ध्यान में रखकर शोधार्थी ने बाँदा जनपद के एक सुयोग्य अध्यापक **डॉ० शशिभूषण मिश्र के साहित्यिक एवं शैक्षिक योगदान** पर लघु शोध करने का निर्णय किया।

1.3 समस्या कथन

शोधकर्ता द्वारा शोध के लिए निम्न समस्या का चुनाव किया गया—

"डॉ० शशिभूषण मिश्र का साहित्यिक एवं शैक्षिक योगदान"।

1.4 अध्ययन के उद्देश्य

किसी भी शोध अध्ययन में उद्देश्यों का निर्धारण उस अध्ययन को निश्चित दिशा प्रदान करता है, जिससे अध्ययन सरल, सुव्यवस्थित एवं सुगम हो जाता है। अतः इस शोध अध्ययन के उद्देश्य इस प्रकार हैं—

- डॉ० शशिभूषण मिश्र जी के व्यक्तित्व एवं कृतित्व का अध्ययन करना।
- डॉ० शशिभूषण मिश्र जी की साहित्य सर्जना का अध्ययन करना।

- डॉ० शशिभूषण मिश्र जी के शैक्षिक एवं साहित्यिक विचारों का व्यावहारिक दृष्टिकोण से अध्ययन करना।
- डॉ० शशिभूषण मिश्र जी के शैक्षिक एवं साहित्यिक विचारों का शिक्षा के क्षेत्र में उपयोगिता का अध्ययन करना।
- डॉ० शशिभूषण मिश्र जी के शैक्षिक एवं साहित्यिक मूल्यों का अध्ययन करना।
- डॉ० शशिभूषण मिश्र जी के शैक्षिक एवं सामाजिक परिवेशों का अध्ययन करना।
- डॉ० शशिभूषण मिश्र जी के शैक्षिक एवं साहित्यिक विचारों में सन्निहित उन आधारभूत तत्वों का अध्ययन करना, जो स्वस्थ शैक्षिक समाज के निर्माण में सहायक हैं।
- अध्ययन की शैक्षिक उपादेयता चिह्नित करना।

1.5 अध्ययन का सीमांकन

प्रस्तुत लघु शोध-प्रबन्ध डॉ० शशिभूषण मिश्र जी के व्यक्तित्व, कृतित्व, सामाजिक जीवन एवं शैक्षिक विचारों के अध्ययन तक सीमित है।

1.6 शोध विधि

किसी भी शोध कार्य में विषय विशेष के बारे में बोधपूर्ण तथ्यान्वेषण के लिए अनुसन्धान अध्ययन विधि शोध क्रिया को सुचारु रूप से परिचालित करने का ढंग होती है। मानव ने समस्या समाधान के लिए अनेक विधियों का अविष्कार किया है। जिसका प्रयोग समस्या प्रकृति के आधार पर किया जाता है।

प्रस्तुत लघु शोध-प्रबन्ध के अध्ययन के उद्देश्य एवं प्रकृति के आधार पर तथा अध्ययन की समस्या को देखते हुए अनुसन्धान विधि के रूप में वर्णनात्मक अध्ययन विधि एवं केस अध्ययन अध्ययन विधि का चयन किया गया है।

1.6.1 वर्णनात्मक अध्ययन

मात्रात्मक अनुसंधान की सर्वाधिक प्रचलित एवं प्रयुक्त विधि वर्णनात्मक अनुसंधान है। शिक्षा तथा मनोविज्ञान के क्षेत्र में वर्णनात्मक अनुसन्धान का महत्व बहुत अधिक है। इस विधि का प्रयोग शिक्षा व मनोविज्ञान के क्षेत्र में व्यापक रूप से वर्तमान घटनाक्रमों तथा परिस्थितियों का अध्ययन करने के लिए होता है। जॉन डब्ल्यू० बेस्ट तथा जेम्स वी० काहन (John W. Best and James V. Kahn) के अनुसार "कोई वर्णनात्मक अध्ययन क्या है का वर्णन तथा विवेचन करता है। यह दशाओं व सम्बन्धों जो विद्यमान हैं, राय जो रखीं गई हैं, प्रक्रियाएँ जो चल रही हैं, प्रभाव जो प्रत्यक्ष हैं, अथवा प्रवृत्तियाँ जो विकसित हो रहीं हैं से सम्बन्धित होता है। यद्यपि यह कभी-कभी अतीत की उन घटनाओं व प्रभावों पर भी विचार करता है जो वर्तमान परिस्थितियों से जुड़े हैं, मुख्यतः इसका सम्बन्ध वर्तमान से होता है।" वर्णनात्मक अनुसन्धान का प्रयोग निम्नलिखित प्रश्नों का उत्तर प्राप्त करने में होता है- वर्तमान स्थिति क्या है? इस विषय की वर्तमान स्थिति क्या है? वर्णनात्मक अनुसन्धान का मुख्य उद्देश्य वर्तमान दशाओं, क्रियाओं, अभिवृत्तियों तथा स्थिति के विषय के ज्ञान प्राप्त करना है। वर्णनात्मक अनुसन्धानकर्ता समस्या से सम्बन्धित केवल तथ्यों को एकत्र ही नहीं करता है बल्कि वह समस्या से सम्बन्धित विभिन्न चरों में आपसी सम्बन्ध ढूँढने का प्रयास करता है साथ ही भविष्यवाणी भी करता है।

वर्णनात्मक अनुसंधान किसी समस्यात्मक परिस्थिति में अनुसंधान समस्या की पहचान व परिभाषीकरण से प्रारम्भ होता है। सम्बन्धित साहित्य के सर्वेक्षण तथा परिकल्पना निर्माण से इसे एक स्पष्ट दिशा मिलती है तथा तत्पश्चात अनुसंधान अभिकल्प का निर्धारण किया जाता है। वर्णनात्मक अनुसंधान आगमन-निगमन तर्क की वैज्ञानिक तर्क विधियों का प्रयोग करता है एवं इसके तरीके वांछित सूचनाओं को यथार्थ ढंग से समग्रता से उपलब्ध कराने में सक्षम होते हैं। नि:संदेह ज्ञान-सृजन की दृष्टि से वर्णनात्मक अनुसंधानों की महत्ता को कम करके नहीं आँका जा सकता है।

1.6.2 केस अध्ययन विधि

किसी व्यक्ति, समूह या संस्था के सम्बन्ध में गहन अध्ययन हेतु एक महत्वपूर्ण विधि केस अध्ययन विधि है। इस विधि के द्वारा व्यक्ति में रोगात्मक लक्षणों को पहचान कर कारणों के ज्ञान के आधार पर निदान

किया जाता है। अतः इसे नैदानिक विधि भी कहते हैं। इस विधि के द्वारा अध्ययनकर्ता किसी व्यक्ति के व्यवहार का अध्ययन करने के लिए उसकी जीवन की सभी तरह की घटनाओं का एक विस्तृत इतिहास ज्ञात किया जाता है। घटनाओं की जानकारी में प्रारम्भिक सूचनाएं, अतीत की घटनाओं तथा वर्तमान अवस्थाओं के बारे में अधिक जानकारी संकलित की जाती हैं तथा उनका विश्लेषण कर परिणाम ज्ञात किये जाते हैं। प्रदत्त संकलन के लिए साक्षात्कार, प्रश्नावली, व्यक्तित्व परीक्षण, मनोवैज्ञानिक परीक्षण, अनुसूची, प्रपत्र, अवलोकन इत्यादि का प्रयोग किया जाता है। यह व्यक्ति का गहन अध्ययन, विकास का क्रम तथा जीवन की समस्याएँ जानने की समुचित विधि है। इस विधि में अनेक स्रोतों जैसे व्यक्ति विशेष, उसके माता-पिता, पारिवारिक जन, रिश्तेदार, पड़ोसी, विद्यालय, मित्रगणों, सहयोगियों एवं सम्बन्धित अभिलेखों से सूचना एकत्रित कर किसी व्यक्ति, स्थिति, समूह अथवा संस्था के सम्बन्ध में अध्ययन किया जाता है।

केस अध्ययन गुणात्मक अनुसंधान का वह प्रकार है जिसके अन्तर्गत इकाई विशेष के सन्दर्भ में गहन एवं व्यापक अध्ययन किया जाता है। अध्ययन की इस विधि में इकाई विशेष को लम्बी समयावधि तक निरन्तर निरीक्षण में रखा जाता है और उससे सम्बन्धित सूचनाएँ विभिन्न स्रोतों से प्राप्त करते हुए निष्कर्ष निकाले जाते हैं। इसके अन्तर्गत अध्ययन की इकाई सामान्य न होकर विशिष्ट होती है।

1.7 अध्ययन का महत्व एवं सार्थकता

प्रस्तुत अध्ययन में डॉ० शशिभूषण मिश्र के साहित्यिक एवं शैक्षिक योगदान का अध्ययन किया गया है। वे हिन्दी के एक आदर्श शिक्षक होने के साथ-साथ एक लेखक, आलोचक एवं सम्पादक के रूप में प्रतिष्ठित हैं तथा अपनी लेखनी से जनसामान्य को लाभान्वित कर रहे हैं। निश्चय ही यह लघु शोध विशेष कर हिन्दी भाषा के शिक्षकों के लिए प्रेरणादायी है तथा जीवन में आलोचना के द्वारा सही सूचनाओं का चुनाव करने हेतु सक्षम बनाने में सहायक होगा। इसके अतिरिक्त विद्यार्थी एवं जन सामान्य भी इनके व्यक्तित्व एवं कृतित्व से प्रेरणा प्राप्त कर हिन्दी भाषा एवं संस्कृति के उत्थान में अपना योगदान दे सकेंगें।

द्वितीय अध्याय

सम्बन्धित साहित्य का सर्वेक्षण

2.1 प्रस्तावना

2.2 शैक्षिक योगदान से सम्बन्धित कतिपय शोध अध्ययन

2.3. समीक्षात्मक निष्कर्ष

द्वितीय अध्याय
सम्बन्धित साहित्य का सर्वेक्षण

2.1 प्रस्तावना

अनुसंधान एक ऐसी बौद्धिक तथा सृजनात्मक प्रक्रिया है जो मानव जाति के द्वारा पूर्व में अर्जित ज्ञान तथा अनुभवों पर आधारित होती है। यही कारण है कि मानव जाति द्वारा भूतकाल में किए गए प्रयासों के फलस्वरूप संकलित ज्ञान भण्डार का लाभ अनुसंधानकर्ता को अपने अनुसंधान कार्य में मिलता है। वस्तुतः किसी भी प्रस्तावित अध्ययन को पूर्व के अध्ययनों व अनुभवों से जोड़े बिना वर्तमान में कोई भी अनुसंधान कार्य करना सम्भव नहीं होता है। अनुसंधानकर्ता के लिए सन्दर्भ सामग्री की खोज व अध्ययन एक समय साध्य कार्य होने के बावजूद अत्यन्त लाभदायक होता है। पूर्व ज्ञान व अनुभवों के आधार पर ही अनुसंधान की योजना का निर्माण तथा क्रियान्वयन सम्भव हो पाता है। इसके लिए अनुसंधानकर्ता अपनी समस्या से सम्बन्धित उपलब्ध विभिन्न प्रकार के साहित्य का सम्यक ढंग से अध्ययन-मनन करता है। अनुसंधान क्षेत्र से सम्बन्धित साहित्य के सर्वेक्षण के बिना अनुसंधानकर्ता का कार्य अन्धेरे में तीर चलाने के सामान हो जाता है। साहित्य सर्वेक्षण के द्वारा ही अनुसंधानकर्ता किसी क्षेत्र में क्या हो चुका है? को उस क्षेत्र में क्या करना शेष है? से अलग करके अपनी समस्या को सार्थक (Significant), मौलिक (Original) तथा अद्वितीय (Unique) बनाता है एवं अनुसंधान की एक उपयुक्त रूपरेखा तैयार करने में मदद करता है।

नि:सन्देह किसी भी नियोजित अनुसंधान कार्य का सबसे पहला तथा सर्वाधिक महत्वपूर्ण कार्य सम्बन्धित साहित्य का सर्वेक्षण करके किए जा रहे अनुसंधान कार्य की सैद्धान्तिक तथा व्यावहारिक पृष्ठभूमि तैयार करना है। सम्बन्धित साहित्य से तात्पर्य पुस्तकों, पत्र-पत्रिकाओं, विश्व-कोषों, प्रकाशित व अप्रकाशित अनुसंधान प्रबन्धों, पत्रकों व विचार-विमर्शों, शब्दकोषों, अभिलेखों तथा अन्य सूचना स्रोतों पर उपलब्ध विविध प्रकार की सामग्री से होता है। इनके अध्ययन से अनुसंधानकर्ता को अपनी अनुसंधान समस्या के चयन, अनुसंधान परिकल्पना के निरूपण, अनुसंधान प्रारूप के विकास, कार्य विधियों के क्रियान्वयन एवं प्राप्त निष्कर्षों की व्याख्या करने में महत्वपूर्ण सहायता मिलती है। सम्बन्धित साहित्य के महत्त्व को स्पष्ट करते हुए जॉन०

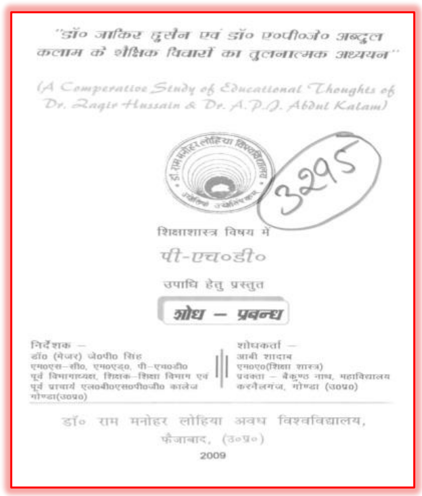
डब्ल्यू० बेस्ट (John W. Best) ने कहा है कि "व्यावहारिक दृष्टि से समस्त मानव ज्ञान पुस्तकों तथा पुस्तकालयों से प्राप्त किया जा सकता है। अन्य जीवों, जिन्हें प्रत्येक पीढ़ी में नए सिरे से प्रारम्भ करना पड़ता है, से भिन्न मानव पूर्व में संगृहीत व अभिलेखित ज्ञान से निर्माण करता है। ज्ञान के अथाह भण्डार में उसके सतत योगदान ही मानव प्रयासों के सभी क्षेत्रों में प्रगति को सम्भव बनाते हैं।" अस्तु किसी भी अनुसंधान के लिए अपनी समस्या से सम्बन्धित अद्यतन साहित्य का सम्यक अध्ययन-मनन करना अनिवार्य होता है। सूचना के स्रोतों को दो भागों- प्राथमिक स्रोत तथा द्वितीयक स्रोत में विभाजित किया जा सकता है। प्राथमिक स्रोतों के अन्तर्गत पूर्व अनुसंधानकर्ताओं एवं अध्ययनकर्ताओं के द्वारा स्वयं प्रस्तुत सामग्री होती है। ऐसे स्रोत न केवल विस्तृत सूचना प्रदान करते हैं वरन् अधिक प्रमाणिक सूचनाएँ भी देते हैं। द्वितीयक स्रोतों के अन्तर्गत किए जा चुके अनुसंधान कार्यो को दूसरे व्यक्तियों द्वारा संक्षिप्त रूप में प्रस्तुत करने वाली सामग्री आती है। ऐसे स्रोत यद्यपि संक्षिप्त सूचना प्रदान करते हैं परन्तु यह सूचना अपेक्षाकृत कुछ कम विश्वसनीय तथा प्रमाणिक होती है। मुख्य स्रोत के अधिक विश्वसनीय होने के कारण उसका उपयोग अधिक वांछनीय होता है परन्तु मुख्य स्रोतों का चयन करने के लिए द्वितीयक स्रोतों का अध्ययन भी आवश्यक होता है।

2.2. शैक्षिक योगदान से सम्बन्धित कतिपय शोध अध्ययन

शोधार्थी द्वारा शैक्षिक योगदान से संबंधित पूर्ववर्ती शोध कार्यो का अध्ययन किया गया, जिसका विवरण निम्नलिखित है—

1. **आबी शादाब (2009)** ने डॉ० जाकिर हुसैन एवं डॉ० ए०पी०जे० अब्दलु कलाम के शैक्षिक विचारों का तलुनात्मक अध्ययन"

किया और यह पाया कि—


"डॉ० जाकिर हुसैन एवं डॉ० ए०पी०जे० अब्दुल कलाम के शैक्षिक विचारों का तुलनात्मक अध्ययन"

(A Comperative Study of Educational Thoughts of Dr. Zaqir Hussain & Dr. A.P.J. Abdul Kalam)

3295

शिक्षाशास्त्र विषय में

पी-एच०डी०

उपाधि हेतु प्रस्तुत

शोध – प्रबन्ध

निर्देशक –
डॉ० (मेजर) जे०पी० सिंह
एम०एस–सी०, एम०एड०, पी–एच०डी०
पूर्व विभागाध्यक्ष, शिक्षक–शिक्षा विभाग एवं पूर्व प्राचार्य एल०बी०एस०पी०जी० कालेज गोण्डा(उ०प्र०)

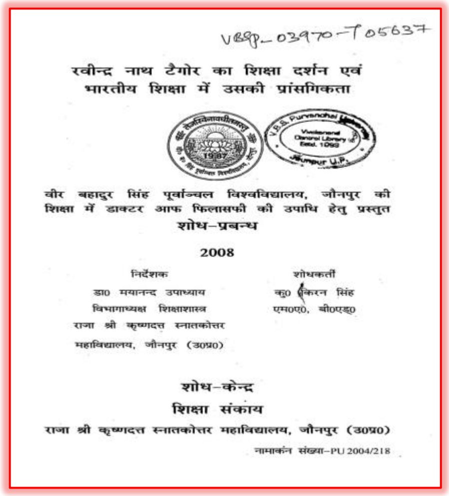
शोधकर्ता –
आबी शादाब
एम०ए०(शिक्षा शास्त्र)
प्रवक्ता – बैकुण्ठ नाथ, महाविद्यालय करनैलगंज, गोण्डा (उ०प्र०)

डॉ० राम मनोहर लोहिया अवध विश्वविद्यालय, फैजाबाद, (उ०प्र०)
2009

- दोनों के विचारों में पारम्परिकता एवं आधुनिकता का सम्मिश्रण दिखाई पड़ता है।
- जाकिर साहब व कलाम साहब दोनो के अनुसार शिक्षा बच्चों का सर्वोत्तम का सर्वागीण विकास है दोनों विचारकों के इस प्रयत्न को भी शिक्षा शास्त्री स्वीकार करते है।

- अनुशासन के सम्बन्ध में भी दोनों के विचार अत्यन्त प्रासंगिक है। आंतरिक, रचनात्मक एवं प्रभावात्मक अनुशासन की चर्चा दोनों विचारक करते है। शारीरिक दण्ड को पूर्णतया समाप्त करने के पक्ष में है। वर्तमान समय में भी शिक्षाविद् आंतरिक, रचनात्मक एवं प्रभावात्मक अनुशासन के पक्ष में है।
- पाठ्यक्रम में इन दोनों विचारकों ने सह-सम्बन्ध, समन्वय, समाकलन एवं क्रिया पर बल दिया है।

2. किरन सिंह (2008) ने "रवीन्द्र नाथ टैगोर का शिक्षा दर्शन एवं भारतीय शिक्षा में उसकी प्रासंगिकता" का अध्ययन किया और यह पाया कि—


VBSP-03970-T05637

रवीन्द्र नाथ टैगोर का शिक्षा दर्शन एवं भारतीय शिक्षा में उसकी प्रांसगिकता

वीर बहादुर सिंह पूर्वान्चल विश्वविद्यालय, जौनपुर की शिक्षा में डाक्टर आफ फिलासफी की उपाधि हेतु प्रस्तुत
शोध–प्रबन्ध

2008

निर्देशक
डा0 मयानन्द उपाध्याय
विभागाध्यक्ष शिक्षाशास्त्र
राजा श्री कृष्णदत्त स्नातकोत्तर महाविद्यालय, जौनपुर (उ0प्र0)

शोधकर्ती
कु0 किरन सिंह
एम0ए0, बी0एड0

शोध–केन्द्र
शिक्षा संकाय
राजा श्री कृष्णदत्त स्नातकोत्तर महाविद्यालय, जौनपुर (उ0प्र0)

नामांकन संख्या–PU 2004/218

- रवीन्द्र नाथ टैगोर ने शिक्षा को व्यापक रूप में लिया है। उनका मत है कि शिक्षा व्यक्ति के शारीरिक, बौद्धिक और नैतिक विकास में सहायक होती है।
- टैगोर भी अपने स्कूल की स्थापना नगर के कोलाहल से दूर शान्त वातावरण एवं प्रकृति की सुरम्य गोद में करना चाहते थे। जहाँ छात्र और अध्यापक शिक्षा की साधना में लग सके।
- टैगोर चाहते थे कि ईश्वर मानवीय गुणों का प्रतीक हो और अन्तिम सत्य को मानवता की कसौटी पर कसा जाए। मानव की वास्तविता उसकी मानवता ही है।
- बालक के अन्दर विश्वबन्धुत्व की भावना, भू-मण्डलीयकरण की बात होती जा रही है एवं संचार के माध्यम बढ़ते जा रहे हैं। बालक में देश-विदेश के प्रति भी प्रेम की भावना को बढ़ावा मिले।

3. अनन्त बहादुर सिंह (2008) ने 'मूल्य शिक्षा के विशेष संदर्भ में रवीन्द्र नाथ टैगोर तथा महात्मा गाँधी के शैक्षिक विचारों का एक तुलनात्मक अध्ययन' किया और यह पाया कि-

- रवीन्द्र नाथ ठाकुर हमारे देश के न केवल एक उच्चकोटि के कवि, गायक, संगीतज्ञ, नाट्यकार अभिनेता, उपन्यासकार निबन्ध लेखक, शिक्षाशास्त्री, दार्शनिक, मानवतावादी तथा राष्ट्रवादी थे, वरन्

वे एक कट्टर अन्तर्राष्ट्रीयतावादी भी थे। वे सच्चे अर्थ में एक विश्व नागरिक थे जिनकी राष्ट्रीयता उनकी विशाल अन्तर्राष्ट्रीयता के अनुरूप थी।


मूल्य-शिक्षा के विशेष संदर्भ में रवीन्द्रनाथ टैगोर तथा महात्मा गाँधी के शैक्षिक विचारों का एक तुलनात्मक अध्ययन

A Comparative Study of Educational Thoughts of Ravindranath Tagore and Mahatma Gandhi with Special Reference to Value Education

4121

'शिक्षा शास्त्र' विषय में डॉक्टर आफ फिलासफी की उपाधि हेतु डॉ० राममनोहर लोहिया अवध विश्वविद्यालय, फैजाबाद में प्रस्तुत शोध प्रबन्ध।

शोध - निर्देशन :
डॉ० श्याम लाल मौर्य
आचार्य - शिक्षक - प्रशिक्षण (बी०एड०) विभाग
बी.एन.के.बी. स्नातकोत्तर महाविद्यालय
अकबरपुर, अम्बेडकरनगर (उ०प्र०)

शोधार्थी :
अनन्त बहादुर सिंह
प्रवक्ता
शिक्षक-प्रशिक्षण (बी.एड्) विभाग
देव इन्द्रावती महाविद्यालय
कटहरी-अम्बेडकर नगर
दूरभाष-9838851515

शिक्षा-शास्त्र

बी.एन.के.बी. स्नातकोत्तर महाविद्यालय, अकबरपुर, अम्बेडकरनगर (उ०प्र०)
सत्र – 2008

- इनके सम्बन्ध में लिखते हुये आर० श्रीनिवास आयंगर लिखते हैं, कि "टैगोर संसार के महानतम शिक्षाशास्त्रियों में अद्वितीय स्थान रखते हैं क्योंकि उन्होंने एक शिक्षा दर्शन का विचार किया या निकाला और अपने दर्शन को कार्य क्षेत्र में अनूदित करने में उच्च मात्रा की सफलता प्राप्त की।"
- रवीन्द्र नाथ टैगोर के सम्बन्ध में डॉ० सुरेन्द्रनाथ दास गुप्ता ने लिखा है, कि "उनकी प्रतिभा सम्पन्नता अद्वितीय और अतुलनीय थी और अन्यत्र कहीं भी यह प्रतिमा अथक परिश्रम से सम्बन्धित नहीं पाई जाती है जैसा की उनमें सभी का कथन है उनका व्यक्तित्व ऐसा चित्र हमारे सामने उपस्थित करता है, जो मानव इतिहास में अद्वितीय है।" मौलाना अबुल कलाम आज़ाद ने कहा था कि "यह गुरुदेव की उपलब्धि है, जिससे कि उन्होंने इस रिक्त स्थान को अपने निजी प्रयत्नों से भर दिया यह संकेत शन्ति निकेतन की ओर है।" प्रो० हुमायूँ कबीर का कथन है कि "टैगोर ने परम्परा को बिना तोड़े हुए शिक्षा के विचारों में क्रान्ति ला दी है, इससे स्पष्ट है कि टैगोर ने भारतीय शिक्षा में क्या प्रगति और परिवर्तन किया है।"


भारतीय जीवन मूल्य आधारित शिक्षा व्यवस्था के सन्दर्भ में स्वामी शिवानन्द जी के शैक्षिक विचारों की प्रासंगिकता

Th 379
V 59 B
(2005)

डॉ० भीमराव अम्बेदकर विश्वविद्यालय
आगरा की
शिक्षाशास्त्र विषय में पी-एच०डी०
की उपाधि हेतु प्रस्तुत
शोध-प्रबन्ध
2005

निर्देशक
डॉ० पी० पी० सिंह
एम०एस-सी०, एम०एड०, एम०फिल०, पी-एच०डी०
रीडर, शिक्षा-संकाय
आर० बी० एस० कालेज, आगरा।

शोधार्थी :
रामनिवास वर्मा

339 Th
V 59 B
2005

शिक्षा-संकाय
राजा बलवन्त सिंह कालेज,
आगरा

166213

4. रामनिवास वर्मा (2005) ने **"**भारतीय जीवन मूल्य आधारित शिक्षा व्यवस्था के सन्दर्भ में स्वामी शिवानन्द जी के शैक्षिक विचारों की प्रासंगिकता**"** शीर्षक पर शोध कार्य किया। इन्होंने अपने अध्ययन में पाया कि—

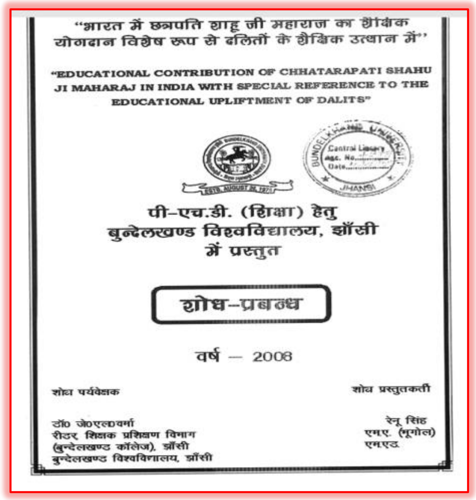
- भारतीय संस्कृति मूलतः एक जीवन मूल्य आधारित जीवन पद्धति है जो अनिवार्य रूप से भारतीय लोकमानस को मूल्य निकायों की ओर निर्देशित करती है। ये मूल्य निकाय भारतीय जनजीवन पद्धति के प्रेरणा स्रोत

हैं तथा सदैव से उसे उत्कृष्ट उपलब्धियों को प्राप्त कर अद्वितीय मानव व्यवस्था के निर्माण की दिशा में अग्रसर करते रहे हैं। भारतीय संस्कृति अपने सरलतम अर्थ में भी लोकजीवन में जीवन मूल्यों के अनुप्रयोग व विनियोग का ऐसा अनन्य उदाहरण प्रस्तुत करती है जो भारतीय जनजीवन को गति प्रदान करता है तथा मानव सृजनात्मकता के घटकों को प्रेरित, विकसित कर निरन्तर नए भारतीय जीवन मूल्यों के निर्माण का कार्य करता है।

- सांस्कृतिक मूल्यों की दृष्टि से भारतीय जीवन मूल्यों को विशेषज्ञता के विभिन्न क्षेत्रों से प्रादुर्भूत हुआ माना जा सकता है। ये विशेषज्ञता के क्षेत्र भारतीय जीवन मूल्यों को तर्काधार प्रदान करते हैं।

5. रेनू सिंह (2008) ने “भारत में छत्रपति शाहू जी महाराज का शैक्षिक योगदान विशेष रूप से दलितों के शैक्षिक उत्थान में" शीर्षक पर शोध अध्ययन किया और यह पाया कि—

- आधुनिक काल में प्रगतिशील कही जाने वाली शिक्षा के अनेक गुण शाहू जी के शैक्षिक विचारों में विद्यमान हैं। स्वतन्त्रता, क्रियाशीलता, अनुभूति, एकाग्रता, चिन्तन, समाजीकरण, सृजनात्मकता, अभिव्यक्ति, व्यक्तित्व, आदर, सर्वांगीण विकास, शिक्षक का सम्मानीय स्थान आदि सभी तत्व इसमें हैं, जो शिक्षा के लिए प्रासंगिक, उपयोगी एवं सार्थक हैं व इन्हें उच्चतम शिक्षा शास्त्री के रूप में अधिष्ठित करती है।


“भारत में छत्रपति शाहू जी महाराज का शैक्षिक योगदान विशेष रूप से दलितों के शैक्षिक उत्थान में”

“EDUCATIONAL CONTRIBUTION OF CHHATARAPATI SHAHU JI MAHARAJ IN INDIA WITH SPECIAL REFERENCE TO THE EDUCATIONAL UPLIFTMENT OF DALITS”

पी–एच.डी. (शिक्षा) हेतु
बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय, झाँसी
में प्रस्तुत

शोध–प्रबन्ध

वर्ष — 2008

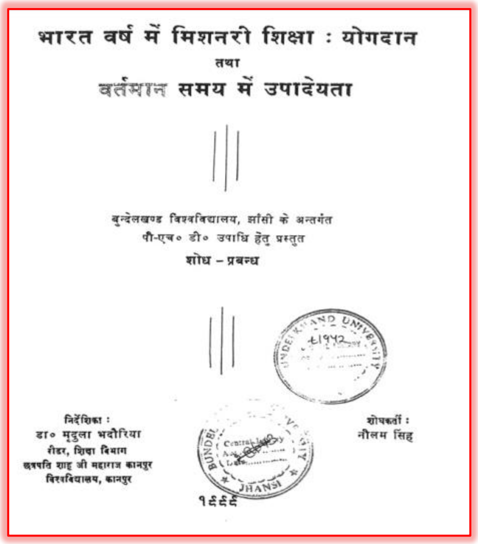
शोध पर्यवेक्षक
डॉ0 जे0एल0वर्मा
रीडर, शिक्षक प्रशिक्षण विभाग
(बुन्देलखण्ड कॉलेज), झाँसी
बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय, झाँसी

शोध प्रस्तुतकर्ता
रेनू सिंह
एम.ए. (भूगोल)
एम.एड.

- इस महान शिक्षा दार्शनिक द्वारा निश्चित शिक्षा के सिद्धान्त हमारे देश और इस काल के लिए ही नहीं अपितु हर क्षेत्र के लिए और हर काल में सही उतरने वाले हैं, उन्हें सार्वभौमिक और सार्वजनिक सिद्धान्त कहा जा सकता है।
- इनके शैक्षिक विचारों को आधुनिक शिक्षा में अपना कर भारत की उद्देश्य विहीन शिक्षा पद्धति का मार्गदर्शन किया जा सकता है।

6. नीलम सिंह (1999) ने "भारतवर्ष में मिशनरी शिक्षा: योगदान तथा वर्तमान समय में उपादेयता" शीर्षक पर शोध का अध्ययन किया और यह पाया कि—

- मिशनरियों का शैक्षिक योगदान भारतीय इतिहास में सदैव चिरस्मरणीय रहेगा। यद्यपि मिशनरियों ने विशुद्ध परोपकारिता की भावना से स्कूल संचालित नहीं किए थे बल्कि इनका मुख्य उद्देश्य ईसाई धर्म का प्रचार करना था। फिर भी इन लोगों ने स्कूल की कार्य प्रणाली तथा संगठन में कुछ ऐसे महत्वपूर्ण सुधार किए जिसके कारण स्कूल के स्वरूप तथा संरचना के विषय में हमारी धारणाएँ स्पष्ट हो सकीं।



भारत वर्ष में मिशनरी शिक्षा : योगदान
तथा
वर्तमान समय में उपादेयता

बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय, झाँसी के अन्तर्गत
पी-एच० डी० उपाधि हेतु प्रस्तुत
शोध – प्रबन्ध

निर्देशिका :
डा० मृदुला भदौरिया
रीडर, शिक्षा विभाग
छत्रपति शाहू जी महाराज कानपुर
विश्वविद्यालय, कानपुर

शोधकर्ता :
नीलम सिंह

१९९९

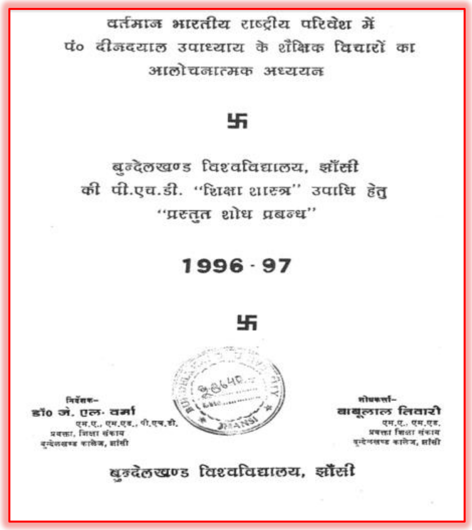
- सर्वप्रथम मिशनरियों ने हम लोगों को स्कूल की नवीन अवधारणा प्रदान की। इसके पहले स्कूल क्या है? और स्कूल किसे कहते है? इस सम्बन्ध में हमारे विचार सुस्पष्ट नहीं थे। मिशनरियों के आगमन से पूर्व देशी पाठशालाओं की स्थिति अत्यन्त शोचनीय थी, ये पाठशालाएँ अधिकांशतः टूटे-फूटे मकानों, गोशालाओं, अस्तबलों या किसी ताल्लुकेदार के मकान एक हिस्से में लगा करती थीं। इस प्रकार स्कूल क्या है? तथा स्कूल में क्या कार्य होगा? जन साधारण के समझ में नहीं आता था। मिशनरियों ने सबसे पहले विद्यालय को साविधिक शिक्षा का केन्द्र माना और भारत में साविधिक शिक्षा की नीव डाली। इस प्रकार मिशनरियों के द्वारा स्कूल के लिए किए गए, साविधिक कार्यक्रम को देखकर वर्तमान समय में भारतीयों ने उनकी शिक्षा प्रणाली से सीखकर साविधिक शिक्षा के कार्यक्रम को अपनाया।

- मिशनरियों के आगमन के पूर्व भारत में देशी शिक्षा प्रचलित थी। देशी शिक्षा के पाठ्यक्रम अत्यन्त संकुचित तथा अपर्याप्त होते थे। देश की निर्धनता देशी शिक्षा की अवनति का प्रधान कारण थी। देश की अधिकांश जनता निर्धन होने के कारण अपने बच्चों को नाम मात्र तक की फीस तक नहीं दे पाती थी। देशी शिक्षा के पतन के बाद यूरोपीय जातियों में प्रविष्ट किया इसके साथ ही वहाँ की यूरोपीय मिशनरियाँ भी आयीं। जिन्होंने धर्म प्रचार के लिए शिक्षा को अपना माध्यम चुना और अनेक प्राथमिक

विद्यालय खोले प्राथमिक शिक्षा के प्रारम्भिक प्रयास निशनरियों द्वारा किए गए। इनका उद्देश्य अपनी बस्ती के बालकों की शिक्षा का प्रबन्ध करना था तथा शिक्षा द्वारा ईसाई धर्म का प्रचार करना था।

7. **बाबूलाल तिवारी** (1996-97) ने "वर्तमान भारतीय राष्ट्रीय परिवेश में पं० दीनदयाल उपाध्याय के शैक्षिक विचारों का आलोचनात्मक अध्ययन" किया और यह पाया कि—

- पं० दीनदयाल जी एक सन्त राजनेता थे। शिक्षा संस्कार एवं धर्म उनकी प्रमुख अभिधारणाएँ हैं। वे लोकतन्त्र के लिए लोकमत परिष्कार को आवश्यक मानने वाले, अर्थशास्त्र नियंत्रित उद्योग के विरोधी एवं धर्म नियंत्रित अर्थ के पक्षधर थे। समाज को नियंत्रित करने वाली शक्ति राजनीति में नहीं होती वरन् संस्कृति में होती है उनका ऐसा मन्तव्य था इसीलिए 'संस्कृति ' उनका प्रिय विषय बनी । अतः ये नेता कम सांस्कृतिक और शैक्षिक कार्यकर्ता ज्यादा थे। उनका ध्यान राजनीति की अपेक्षा सांगठनिक शक्ति को बढ़ाने तथा वैचारिक चिन्तन पर अधिक था।


वर्तमान भारतीय राष्ट्रीय परिवेश में
पं० दीनदयाल उपाध्याय के शैक्षिक विचारों का
आलोचनात्मक अध्ययन

卐

बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय, झाँसी
की पी.एच.डी. "शिक्षा शास्त्र" उपाधि हेतु
"प्रस्तुत शोध प्रबन्ध"

1996-97

卐

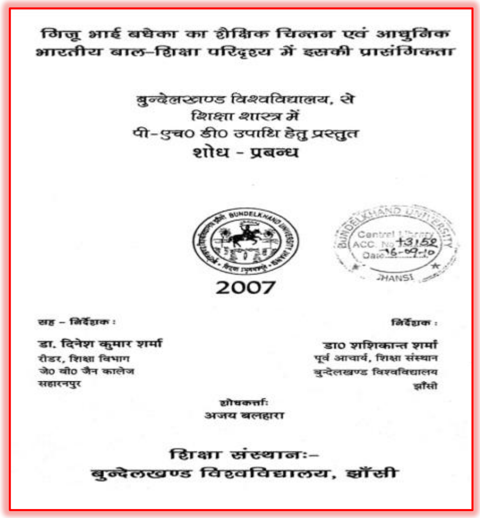
निर्देशक-
डॉ० जे. एल. वर्मा
एम.ए., एम.एड., पी.एच.डी.
प्रवक्ता, शिक्षा संकाय
बुन्देलखण्ड कालेज, झाँसी

शोधकर्ता-
बाबूलाल तिवारी
एम.ए., एम.एड.
प्रवक्ता शिक्षा संकाय
बुन्देलखण्ड कालेज, झाँसी

बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय, झाँसी

- दीनदयाल उपाध्याय पश्चिम की सभी विचारधाराओं को अपूर्ण एकांगी एवं प्रतिक्रियावादी मानते थे। पश्चिम द्वारा मानव को रोटी कपड़ा और मकान की आवश्यकताओं वाला प्राणी निरूपित किए जाने को असंगत तथा 'राजनैतिक प्राणी' 'सामाजिक प्राणी' या 'आर्थिक प्राणी' की संज्ञा को एकांगी मानते थे। उन्होंने माना है कि धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष ही मानव की व्यष्टि व समष्टिगत आवश्यकता है। इन चारों पुरुषार्थों के अनुसार ही हमारी राजनीतक आर्थिक और सामाजिक विचारधाराओं को विकसित किया जाना चाहिए इसी चिन्तन से ही उनका 'एकात्म मानववाद' प्रकट हुआ।

8. अजय बलहारा (2007) ने "गिजू भाई बधेका का शैक्षिक चिन्तन एवं आधुनिक भारतीय बाल-शिक्षा परिदृश्य में इसकी प्रासंगिकता" का अध्ययन किया और यह पाया कि—


गिजू भाई बधेका का शैक्षिक चिन्तन एवं आधुनिक भारतीय बाल–शिक्षा परिदृश्य में इसकी प्रासंगिकता

बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय, से
शिक्षा शास्त्र में
पी–एच० डी० उपाधि हेतु प्रस्तुत
शोध - प्रबन्ध

2007

सह – निर्देशक :
डा. दिनेश कुमार शर्मा
रीडर, शिक्षा विभाग
जे० वी० जैन कालेज
सहारनपुर

निर्देशक :
डा० शशिकान्त शर्मा
पूर्व आचार्य, शिक्षा संस्थान
बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय
झाँसी

शोधकर्त्ता:
अजय बलहारा

शिक्षा संस्थानः–
बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय, झाँसी

- गिजू भाई शिक्षा द्वारा स्वातंत्र्य, निर्भयता, स्वावलम्बन, सत्य, प्रेम, अहिंसा, त्याग, मैत्रीभाव, दया, अपरिग्रह, सहिष्णुता, सेवाभाव, सामाजिक संवेदनशीलता, स्वच्छता, सदाचरण, सादगी व सरलता, सद्-असद् विवेक, वैज्ञानिक अभिवृत्ति जैसे मूल्यों का विकास करने पर बल देते हैं। उन्होंने आत्म-साक्षात्कार, सौन्दर्य, प्रेम, स्वाधीनता, नियमन व स्वातंत्र्य जैसे मूल्यों को अत्यन्त मौलिक रूप से परिभाषित किया है।
- गिजू भाई कहते हैं कि मनुष्य शरीर की शक्ति बढ़ा सकता है, बुद्धि का वैभव प्राप्त कर सकता है, परन्तु अगर मनुष्य आत्मा की शुद्धि प्राप्त करने में पूरी जिन्दगी व्यतीत कर दे तब भी सफलता दूर ही रहेगी। यह विकास इतना कठिन इतना सूक्ष्म है कि मात्र कथा कहानी सुनाकर या उपदेश देकर नहीं किया जा सकता है। वे कहते हैं कि सत्य का पाठ पढ़ाकर बालक से सत्य की अपेक्षा रखने वाला व्यक्ति या तो मूर्ख होता है, अज्ञानी होता है या ढोंगी। इस प्रकार गिजू भाई उपदेशात्मक रूप से नीति शिक्षण की व्यर्थता सिद्ध करते हैं। वे कहते हैं कि नीति शिक्षण का राग अलापने वालों की नसों में अनीति के भयंकरतम कीटाणु घुस गए लगते हैं। चूंकि वे अपने अन्दर की अनीति से भय खाते हैं, उससे लड़ने में सक्षम नहीं है, अतः उसे दुनिया से हटाने के लिए लड़ रहे हैं। वे कहते हैं कि नीति शिक्षण मनुष्य को आत्मा की स्वतंत्रता से भ्रष्ट करता है। मनुष्य स्वयं अनीति पर चलता है पर चाहता है कि बालक नीतिवान बनें यह कदापि सम्भव नहीं है।
- गिजू भाई बालक को प्रकृति शिक्षा दिये जाने का प्रबल समर्थन करते हैं। उनका कहना था कि अपने बालक को प्रकृति से दूर रखकर क्या हम उसको देव बनाएँगे अथवा दानव? प्रकृति द्वारा दिया गया शिक्षण ही गिजू भाई की दृष्टि में उत्तम सामाजिक शिक्षण है। इस शिक्षण से उसका नैतिक विकास सहज स्वाभाविक बनता है और वह धार्मिक विकास के सुदृढ़ आधार के रूप में चिरस्थायी रहता है। प्रकृति शिक्षण में स्व-शिक्षण का मूल भी निहित है। गिजू भाई कहते हैं कि प्रकृति की शिक्षा धैर्य एवं

विश्वास की पोषक होती है। प्रकृति ही मनुष्य की आत्मा एवं देह की प्रथम धाय है। अतः उसे चाहिए कि वह बाल्यावस्था से ही प्रकृति के अवदान से अपने प्राणों को भर ले। अपने आत्मिक विकास के तत्व उसे प्रकृति से ही ग्रहण कर लेने चाहिए।

9. सुधा तिवारी (2009) ने "लोकतान्त्रिक भारत की शिक्षा में महात्मा गाँधी एवं पण्डित दीन दयाल उपाध्याय जी के शैक्षिक योगदान का तुलनात्मक अध्ययन" किया और यह पाया कि—

- सदियों से पराधीनता के कारण अपनी गरिमामयी संस्कृति से अनभिज्ञ भारतीय जनता को पुनः चेतन तथा सचेष्ट करने के लिए भारतीय विचारकों के विचारों को अपनी परिस्थिति के अनुसार कार्य करना पड़ा, न कि वे इसके स्थान पर पश्चिमी विचारकों से विचार सहमति या असहमति प्रगट करने का कार्य करते। अतः इतना कहना ही पर्याप्त है कि अपने क्षेत्र और अपने कार्य के अनुरूप उन्होंने शिक्षा का स्वरूप निर्धारित किया। भारतीय विचारकों में प्रतियोगिता की भावना नहीं थी वरन् जीवन के सच्चे मूल्यों की खोज करना थी। जो कि काल के गर्त में समाधिस्थ कर दिये गये हैं, उनको पुनः जागृत कर स्मरण करना ही उनकी शिक्षा का लक्ष्य था।



''लोकतांत्रिक भारत की शिक्षा में महात्मा गाँधी एवं पण्डित दीन दयाल उपाध्याय जी के शैक्षिक योगदान का तुलनात्मक अध्ययन''

"A Comperative Study of Educational Contribution of Mahatma Gandhi and Pt. Deen Dayal Upadhayay in the Democratic Education of India"

बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय, झाँसी के 'शिक्षाशास्त्र में डॉक्टर ऑफ फिलॉसफी की उपाधि हेतु प्रस्तुत शोध-प्रबन्ध

ESTB. AUGUST 26, 1975

निर्देशक
डा० जे०एल० वर्मा
एम०ए०एम०एड० पी०एच०डी०
वरिष्ठ रीडर, बी०एड० विभाग
बुन्देलखण्ड कॉलेज, झाँसी

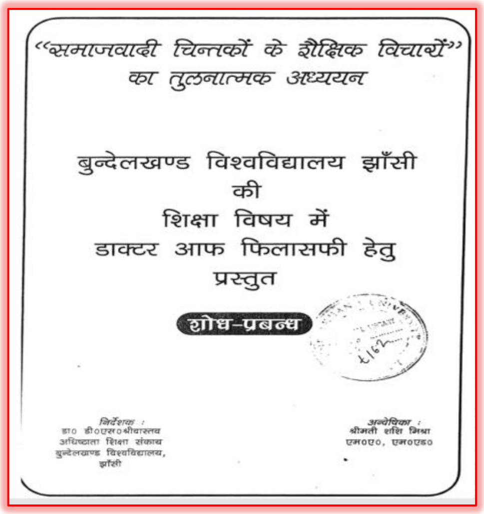
शोधकर्त्री
सुधा तिवारी
(एम०ए०,एम० एड०)
अध्यापिका

बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय, झाँसी
2003–2004

- कुछ मानवों को ऐतिहासिक घटनाएँ बनाती है, जब कि कुछ लोग स्वयं इतिहास का निर्माण करते हैं। महात्मा गाँधी स्वयं ऐसे पुरूष थे। जिन्होंने अपनी मस्तिष्क मन व हृदय की विशेषताओं, गुणों तथा महान कार्यों से अपना स्वयं का मार्ग प्रशस्त कर स्वयं एक इतिहास का निर्माण किया था। उन्होंने एक राष्ट्रीय नेता के रूप में प्रभावी व्यक्तित्व से नवीन भारत का निर्माण किया था और एक अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति के विचारक के रूप में सम्पूर्ण विश्व को प्रभावित किया था।

- महात्मा गाँधी के विचार परिवर्तित होने वाले वैज्ञानिक एवं औद्योगिक युग में पूर्ण संगति रखते हैं। यदि हम उनकी शिक्षाओं और दार्शनिक विचारों को अपनाने में समर्थ हो सकें तो 'राम राज्य' एवं 'नए स्वर्ण युग' का निर्माण कर सकते हैं।

10. शशि मिश्रा (2002) ने "समाजवादी चिन्तकों के शैक्षिक विचारों का तुलनात्मक अध्ययन" किया और यह पाया कि—


"समाजवादी चिन्तकों के शैक्षिक विचारों" का तुलनात्मक अध्ययन

बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय झाँसी
की
शिक्षा विषय में
डाक्टर आफ फिलासफी हेतु
प्रस्तुत

शोध-प्रबन्ध

निर्देशक :
डा० डी०एस०श्रीवास्तव
अधिष्ठाता शिक्षा संकाय
बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय,
झाँसी

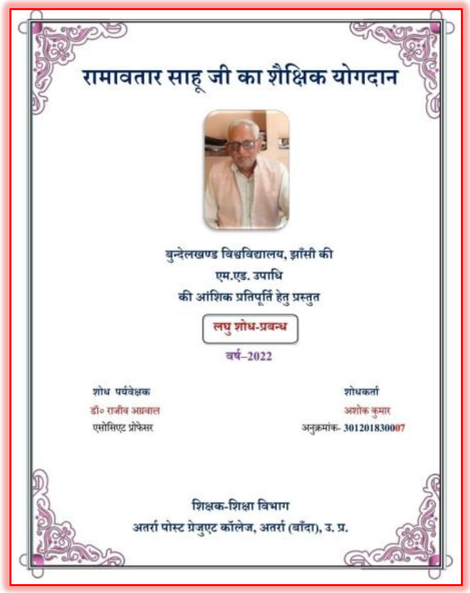
अन्वेषिका :
श्रीमती शशि मिश्रा
एम०ए०, एम०एड०

- भारतीय दृष्टि में दर्शन और जीवन इतने सम्पृक्त रहे हैं कि इनमें अन्तर नहीं देखा गया। प्राचीन काल में सम्पूर्ण जीवन का क्षेत्र दर्शन का क्षेत्र था। महर्षिगण तपस्या करके सत्य का दर्शन करते थे तथा जीवन में उतारते थे एवं अपने व्यवहारपरक अनुभव की शिक्षा दूसरों को प्रदान करते थे। भारतीय दार्शनिकों के सामने दुखों के आत्यान्तिक नाश तथा पूर्ण आनन्द अथवा मोक्ष की प्राप्ति का लक्ष्य था। उन्होंने अपने-अपने दृष्टिकोण से उसकी प्राप्ति का मार्ग शोधा था। अतः उनमें बीच की कुछ बातों में भिन्नता होने पर भी कुछ महत्वपूर्ण प्रश्नों पर साम्य है। सर्वश्री सतीश चन्द्र चट्टोपाध्याय एवं वीरेन्द्र मोहनदत्त ने नैतिक व आध्यात्मिक बिन्दुओं में समानता निरूपित की है।
- भारत के सभी दर्शनों का उद्देश्य पुरुषार्थ साधन रहा है।
- दर्शन की उत्पत्ति आध्यात्मिक असन्तोष से होती है, परन्तु आध्यात्मिक मनोवृत्ति के कारण उसमें आशा का संचार होता रहता है।

11. अशोक कुमार (2022) ने "रामावतार साहू जी का शैक्षिक योगदान" का अध्ययन किया और यह पाया कि—

- रामावतार साहू जी का बचपन अत्यन्त गरीबी में बीता, फिर भी इन्होंने अपनी मेहनत और लगन से शिक्षा स्नातक और हिन्दी परास्नातक तक की शिक्षा पूर्ण की।

- साहू जी ने अपनी सेवायोजन यात्रा अस्थाई रूप से श्रीमती बूटू बाई इण्टर कॉलेज, लोधू थोक, अतर्रा से प्रारम्भ की जहाँ उन्होंने लगभग पाँच वर्ष तक शिक्षण कार्य किया। तत्पश्चात् वे स्थाई रूप से सरकारी प्राथमिक विद्यालय में नियुक्त हो गए।
- रामावतार साहू जी ने अपने जीवन काल में आगरा, दिल्ली, कन्याकुमारी इत्यादि देश के विभिन्न स्थलों की यात्राएँ की हैं।



- रामावतार साहू जी ने छः पुस्तकों (पाषाण बन कर क्या करेंगे, सृजन के पथ पर, सेवा की अनमोल किरण, पगडंडियों से राजपथ तक, हाशिए से गुजरते हुए, राहें नेल्सन मण्डेला की) की रचना कर हिन्दी साहित्य की विपुल सेवा की है तथा उनकी लेखनी अभी भी अनवरत जारी है।
- रामावतार साहू जी सामाजिक सरोकारों के प्रति चैतन्य एवं संवेदनशील कवि हैं। उनका हृदय छल-छिद्र से दूर सहजता में रमता है। उनके इसी स्वभाव का परिचय उनकी कविताओं में मिलता है।
- साहू जी वर्ष 2013 में सेवानिवृत्ति हो जाने के बाद पूरी तरीके से साहित्य के क्षेत्र में उतर गए और किताबों में अपने मन के भावों को शब्दों का रूप दे डाला।
- रामावतार साहू जी कवि सम्मेलन एवं कवि गोष्ठियों में सहभागिता कर अपने काव्य की छटा बिखेरते रहते हैं।

साहू जी ने विद्यार्थियों एवं जन सामान्य के लिए अनेक प्रेरक गीतों की रचना की है।

2.3 समीक्षात्मक निष्कर्ष

शोधकर्ता ने पाया कि पूर्ववर्ती शोधों में डॉ० जाकिर हुसैन एवं डॉ० ए.पी.जे. अब्दलु कलाम के शैक्षिक विचारों का तलुनात्मक अध्ययन, रवीन्द्र नाथ टैगोर के शैक्षिक योगदान का वर्तमान सन्दर्भ में प्रासंगिकता का एक अध्ययन, मूल्य शिक्षा के विशेष सन्दर्भ में रवीन्द्र नाथ टैगोर तथा महात्मा गाँधी के शैक्षिक विचारों का

एक तुलनात्मक अध्ययन, भारतीय जीवन मूल्य आधारित शिक्षा व्यवस्था के सन्दर्भ में स्वामी शिवानन्द जी के शैक्षिक विचारों की प्रासंगिकता, भारत में छत्रपति शाहू जी महाराज का शैक्षिक योगदान विशेष रूप से दलितों के शैक्षिक उत्थान में अध्ययन, भारतवर्ष में मिशनरी शिक्षा: योगदान तथा वर्तमान समय में उपादेयता, वर्तमान भारतीय राष्ट्रीय परिवेश में पं० दीनदयाल उपाध्याय के शैक्षिक विचारों का आलोचनात्मक अध्ययन, गिजू भाई बधेका का शैक्षिक चिन्तन एवं आधुनिक भारतीय बाल शिक्षा परिदृश्य में इसकी प्रासंगिकता का अध्ययन, लोकतान्त्रिक भारत की शिक्षा में महात्मा गाँधी एवं पण्डित दीन दयाल उपाध्याय जी के शैक्षिक योगदान का तुलनात्मक अध्ययन, समाजवादी चिन्तकों के शैक्षिक विचारों का तुलनात्मक अध्ययन तथा रामावतार साहू जी के शैक्षिक योगदान का अध्ययन किया गया। किन्तु **डॉ० शशिभूषण मिश्र के साहित्यिक एवं शैक्षिक योगदान** पर अभी तक कोई शोध कार्य नहीं किया गया है। अतः शोधार्थी द्वारा इस विषय पर लघु शोध कार्य करने का निश्चय किया गया।

तृतीय अध्याय

व्यक्तित्व एवं कृतित्व

3.1 जीवन परिचय

3.2 डॉ० शाशिभूषण मिश्र जी की वंश परम्परा

3.3 अध्ययन यात्रा

3.4 गृहस्थ जीवन

3.5 अध्यापन यात्रा

3.6 साहित्यिक सम्मेलनों एवं राष्ट्रीय गोष्ठियों में सहभागिता एवं सम्मान

3.7 डॉ० शाशिभूषण मिश्र जी की यात्राएँ

3.8 व्यक्तित्व की विशेषताएँ

3.9 साहित्यिक एवं आलोचनागत विशेषताएँ

3.10 डॉ० शाशिभूषण मिश्र का शैक्षिक योगदान

3.11 डॉ० शाशिभूषण मिश्र का साक्षात्कार

3.12 डॉ शशिभूषण मिश्र जी एवं उनके साहित्य के सम्बन्ध में अन्य विद्वानों की सम्मतियाँ

तृतीय अध्याय

व्यक्तित्व एवं कृतित्व

3.1. जीवन परिचय

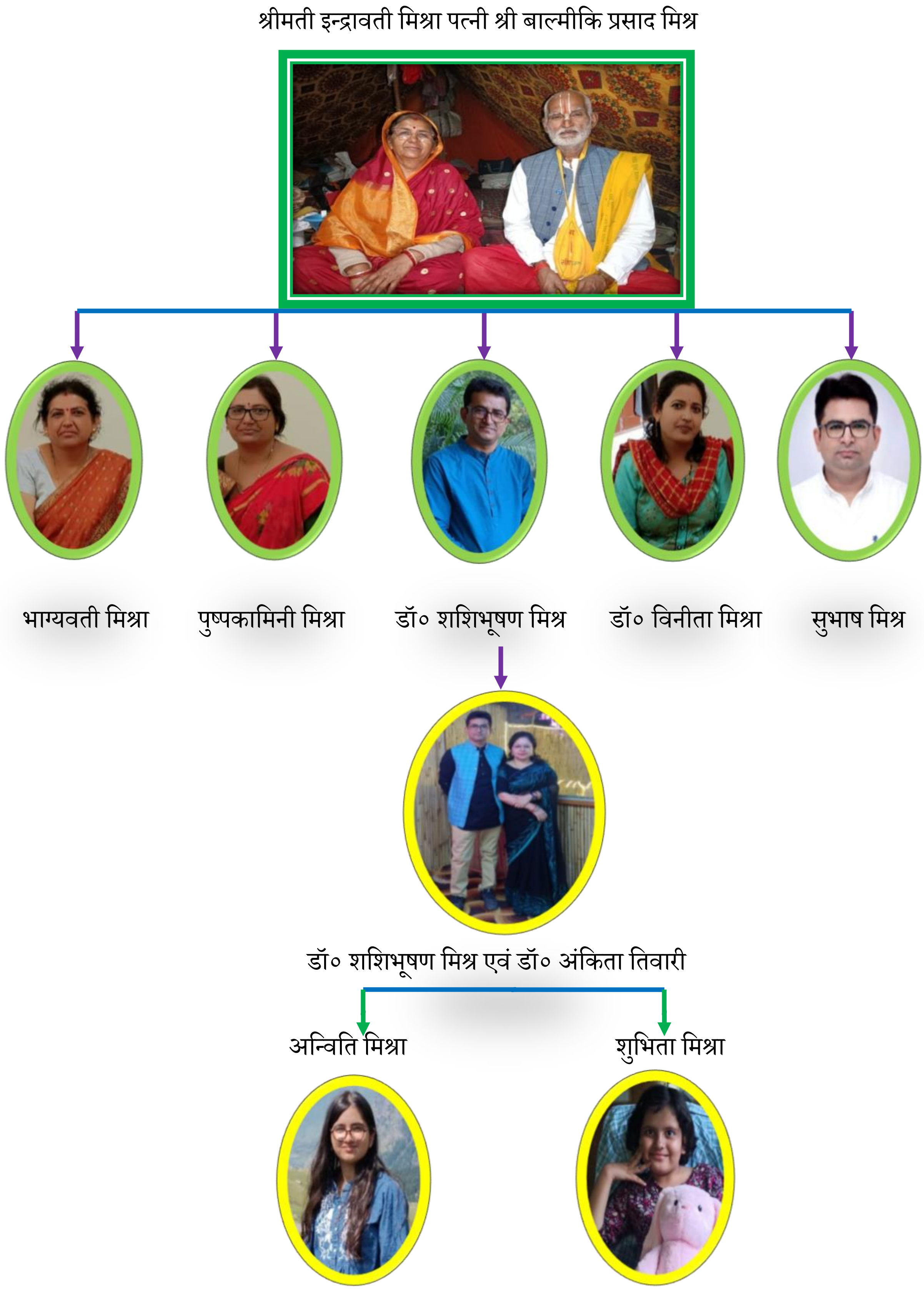


मध्य प्रदेश के बघेलखण्ड क्षेत्र की धरती पर जन्मे डॉ० शशिभूषण मिश्र का जन्म 10 दिसम्बर, 1981 को मुख्यालय से 10 कि०मी० दूर रीवा जनपद के रौरा ग्राम के मध्यमवर्गीय किसान परिवार में हुआ। इनका बचपन गरीबी में बीता। इनके पिता सी०आई०एस०एफ० में सिपाही थे। डॉ० शशिभूषण मिश्र अपने परिवार की गरीबी को 'आर्थिक अभाव' के रूप में व्यक्त करते हैं तथा अत्यंत गरीब कहकर लोगों की संवेदना नहीं लेना चाहते हैं। इनके पिता श्री बाल्मीकि प्रसाद मिश्र एवं माता श्रीमती इन्द्रावती मिश्रा दोनों ही शिक्षित हैं। इनके पिता जी आजीविका के लिए नौकरी के साथ-साथ कृषि कार्य भी करते थे। इनके पिता जी इनको बाहर पढ़ा पाने में असमर्थ थे।





3.2 डॉ० शशिभूषण मिश्र जी की वंश परम्परा



3.3. अध्ययन यात्रा

डॉ० शशिभूषण मिश्र जी की प्रारम्भिक शिक्षा घर के संस्कृति समृद्ध माहौल में हुई तथा इनका अधिकतर समय धार्मिक संस्कारों की धनी दादी स्व० श्रीमती सरोज मिश्र के सानिध्य में व्यतीत हुआ। डॉ० शशिभूषण मिश्र को परिवार से मिले सांस्कारिक गुण जिनकी भूमिका जीवन पर्यन्त रहती है, दादी जी से मिले।

डॉ० शशिभूषण मिश्र जी की प्राथमिक शिक्षा गाँव के ही आर्थिक संसाधनों से जूझ रही सामान्य सी प्राथमिक पाठशाला में हुई। उस पाठशाला में भवन, टाट-फट्टी आदि मूलभूत संसाधनों तक की व्यवस्था नहीं थी। इनके पिता जी अपनी नौकरी के चलते घर से बाहर रहते थे जिससे डॉ० शशिभूषण मिश्र जी को पिता का संरक्षण नहीं मिल पाया किन्तु माँ के संरक्षण में आगे की पूरी पढ़ाई-लिखाई हुई।



कक्षा-6 से 12 तक की शिक्षा हेतु डॉ० शशिभूषण मिश्र जी ने रौरा गाँव से 2 कि०मी० दूर शासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय, डिहिया जिला-रीवा, मध्य प्रदेश में प्रवेश लिया। यहाँ इनको अच्छे शिक्षकों का साथ मिला। वाक्-कला, रामचरितमानस की अन्त्याक्षरी प्रतियोगिता, भाषण प्रतियोगिता, निबन्ध-लेखन, स्काउट-गाइड, रेडक्रास में अभिरुचियों का विकास हुआ। डॉ० शशिभूषण मिश्र इस विद्यालय के कुछ शिक्षकों को याद करते हैं जिन्होंने उनके व्यक्तित्व निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। उनमें से डॉ० वेदमणि मिश्र जो बाद में पी०सी०एस० अधिकारी बन गए, डॉ० अंजली श्रीवास्तव तथा उनके गुरु अयोध्या सिंह प्रमुख हैं। सन 1995 में जब डॉ० शशिभूषण मिश्र कक्षा-9 में थे तभी इंडिया टुडे का साहित्यिक वार्षिकांक, प्रतियोगिता दर्पण मासिक पत्रिका डॉ० वेदमणि मिश्र उनको लाकर देते थे। यहाँ यह बताना इसलिए महत्वपूर्ण है क्योंकि इस उम्र तथा उस समय में आमतौर पर विद्यार्थी इतने विकसित नहीं होते थे। कक्षा-10 की परीक्षा सन 1996 में डॉ० शशिभूषण मिश्र जी ने 65% तथा सन 1998 में कक्षा-12 की परीक्षा 72% अंकों के साथ उत्तीर्ण की। कक्षा-12 में डॉ० शशिभूषण मिश्र जी ने मानविकी वर्ग का चयन किया क्योंकि उनके ऊपर साहित्य ने विशेष रूप से प्रभाव डाला था।



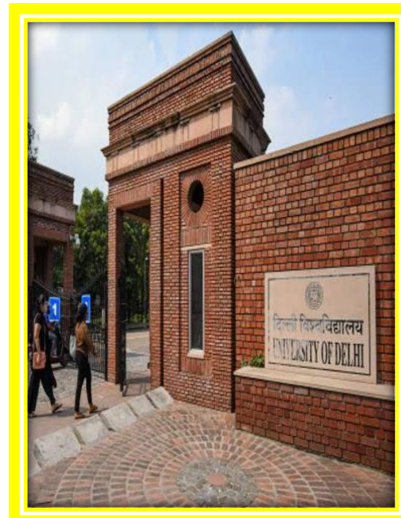
आजादी और स्वतन्त्रता आन्दोलन में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाने वाले ठाकुर रणमत सिंह जी के नाम से रीवा में कॉलेज है, जहाँ अर्जुन सिंह जैसे व्यक्तित्व पढ़ चुके हैं। रीवा जनपद के उत्कृष्ट कॉलेज ठा० रणमत सिंह स्नातकोत्तर महाविद्यालय, रीवा में स्नातक में प्रवेश लिया तथा यहीं डॉ० सेवाराम त्रिपाठी जी से भेंट हुई, ये प्रसिद्द लेखक एवं निर्देशक रहे तथा डॉ० आशीष त्रिपाठी जो वर्तमान में बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय में प्रोफेसर हैं, का सानिध्य इनको प्राप्त हुआ। इसी कॉलेज में डॉ० शशिभूषण मिश्र जी के अन्दर साहित्य भावना का बीज जो शासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय, डिहिया में डाला गया था वह ठाकुर रणमत सिंह स्नातकोत्तर महाविद्यालय, रीवा में पल्लवित हुआ, जिसमें सबसे बड़ा योगदान डॉ० सेवाराम त्रिपाठी का डॉ० शशिभूषण मिश्र मानते हैं। इन्होंने सन 2001 में स्नातक की परीक्षा 68% अंकों के साथ उत्तीर्ण की।



हिन्दी साहित्य विषय के साथ परास्नातक में प्रवेश रीवा विश्वविद्यालय में प्रवेश लिया जिसका विरोध डॉ० शशिभूषण मिश्र के पिता जी एवं अन्य लोगों ने यह कहकर किया कि अंग्रेजी का ज्यादा प्रभाव है तथा हिन्दी नौकरी के लिए सही नहीं है। डॉ० शशिभूषण मिश्र जी ने गाँधी जी को पढ़ा तथा संस्कृति के प्रति समर्पण की भावना विकसित होने तथा साहित्य के प्रति प्रेम ने इनको हिन्दी विषय चुनने को प्रेरित किया। डॉ० शशिभूषण मिश्र ने प्रोफेसर दिनेश कुशवाहा जी के निर्देशन में एम०ए० की परीक्षा सन 2003 में 75.25% अंकों के साथ हिन्दी विभाग में विश्वविद्यालय स्तर पर टॉप किया जिसमें इनको 2000 रुपयों की मेरिट छात्रवृत्ति भी मिली थी।

एम०ए० के दौरान ही डॉ० शशिभूषण मिश्र जी ने राष्ट्रीय पात्रता परीक्षा जून 2003 उतीर्ण की तथा दिसम्बर 2004 में जे०आर०एफ० हो गए। जे०आर०एफ० के बाद बचपन से दबी हुई आशा जागृत हुई क्योंकि

डॉ० शशिभूषण मिश्र आर्थिक अभाव के कारण अच्छे शिक्षण संस्थानों जैसे इलाहाबाद विश्वविद्यालय, दिल्ली विश्वविद्यालय, जवाहरलाल नेहरु विश्वविद्यालय आदि में शिक्षा नहीं ग्रहण कर पाए थे।



23 अक्टूबर 2005 को डॉ० शशिभूषण मिश्र ने दिल्ली विश्वविद्यालय में 9 वीं रैंक के साथ एम०फिल० में प्रवेश लिया तथा *सूरदास की कविता के प्रगतिशील आयाम* विषय पर लघु शोध लिखा। दिल्ली विश्वविद्यालय के तात्कालीन रीडर प्रो० मुकेश गर्ग के निर्देशन में एम०फिल० की डिग्री सन 2006 में द्वितीय रैंक के साथ प्राप्त की।

सन 2007 में दिल्ली विश्वविद्यालय की पी०-एच०डी० प्रवेश परीक्षा में भक्ति साहित्य शीर्षक के साथ डॉ० शशिभूषण मिश्र सम्मिलित हुए तथा उत्तीर्ण की। पी०-एच०डी० में डॉ० शशिभूषण मिश्र शोध शीर्षक "हिन्दी के नए विमर्श और भक्ति साहित्य का पुनर्मूल्यांकन" के साथ शोध अध्येता के रूप में प्रवेश लिया। डॉ० मुकेश गर्ग के निर्देशन में सन 2012 में पी०-एच०डी० की उपाधि प्राप्त की।

3.4 गृहस्थ जीवन



डॉ० शशिभूषण मिश्र एवं डॉ० अंकिता तिवारी 12 दिसम्बर सन 2009 में परिणय सूत्र में बंधकर एक हो गए। डॉ० शशिभूषण मिश्र एवं डॉ० अंकिता तिवारी ने सन 2009 में एक साथ पी०-एच०डी० थीसिस लिखना प्रारम्भ किया तथा सन 2010 में एक साथ पी०-एच०डी० थीसिस जमा भी की थी। डॉ० शशिभूषण मिश्र मानते हैं कि डॉ० अंकिता तिवारी के रूप में जीवन साथी तो मिलीं ही साथ ही साथ साहित्यिक सहयोगी भी मिलीं।

डॉ० शशिभूषण मिश्र जी के वैवाहिक जीवन में रचनात्मकता और लेखन का बड़ा योगदान रहा तथा वार्तालाप, विचार-विमर्श एवं अन्य मुद्दों में डॉ० अंकिता तिवारी का साथ मिला। डॉ० शशिभूषण मिश्र मानते हैं कि यह दौर उनके संघर्ष का सर्वोत्तम दौर रहा क्योंकि दोनों लोग साथ में ही पढ़ते-लिखते तथा विचार-विमर्श करते थे तथा इस दौरान उन्होंने दिल्ली एवं आगरा में रहते हुए अपने कार्यों को पूर्ण किया। डॉ० शशिभूषण मिश्र जी की पहली बेटी का जन्म सन 2011 में आगरा तथा सन 2015 में दूसरी बेटी का जन्म बाँदा में हुआ।

3.5 अध्यापन यात्रा

डॉ० शशिभूषण मिश्र जी ने अपनी अध्यापन यात्रा की शुरुआत 1 अगस्त 2004 को मध्य प्रदेश के शहडोल जिले की जैतपुर तहसील में अतिथि प्रवक्ता के पद पर शासकीय महाविद्यालय, जैतपुर से की तथा यहाँ इन्हें रुपये 100 प्रति कक्षा तथा रुपये 400 प्रति दिन के हिसाब से छुट्टियों का पैसा काटकर महीने में लगभग 10 से 14 हजार तक मिल जाते थे। डॉ० शशिभूषण मिश्र जी की नौकरी लगने के बाद भी पढ़ने-लिखने की लालसा कम नहीं हुई।

पी०-एच०डी० के दौरान ही दिल्ली में पी०जी०टी० हिन्दी पद पर चयन हुआ तथा इसी दौरान केन्द्रीय विद्यालयों की कई परीक्षाओं में चयन हुआ लेकिन डॉ० शशिभूषण मिश्र की रूचि सहायक प्रोफेसर की नौकरी ही थी। सन 2010 में उत्तर प्रदेश लोक सेवा आयोग से असिस्टेंट प्रोफेसर पद पर चयन हुआ तथा पहली पोस्टिंग 1 मार्च 2011 को राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, फतेहाबाद, जनपद-आगरा में हुई। फिर स्थानान्तरण शहीद मंगल पाण्डेय राजकीय महिला महाविद्यालय, बलिया में तथा सन 2014 से राजकीय महिला स्नातकोत्तर महाविद्यालय, बाँदा में कार्यरत हैं। डॉ० शशिभूषण मिश्र एवं डॉ० अंकिता तिवारी दोनों राजकीय महिला स्नातकोत्तर महाविद्यालय, बाँदा में सन 2014 से हिन्दी विभाग में अपनी सेवाएँ दे रहे हैं। डॉ० शशिभूषण मिश्र कहते हैं कि उनके कार्यकाल में राजकीय महिला स्नातकोत्तर महाविद्यालय, बाँदा से पहली बार कोई बच्ची जे०आर०एफ० हुई।







3.6 साहित्यिक सम्मेलनों एवं राष्ट्रीय संगोष्ठियों में सहभागिता एवं सम्मान

- 'विस्थापन का संकट आदिवासी प्रतिरोध और हिन्दी उपन्यास' शीर्षक पर स्तरीय रचना के 'अपनी माटी' ई-पत्रिका के 19 वें अंक में प्रकाशन पर प्रशस्ति प्रमाण-पत्र, अपनी माटी संस्थान, चित्तौड़गढ़, राजस्थान, सन- 2015
- डॉ० बाल कृष्ण पाण्डेय द्वारा लिखित पुस्तक 'साधो उनकी जाति निराली' के विमोचन के अवसर पर वक्तव्य, लोकोदय प्रकाशन, लखनऊ, सन- 2017
- बुन्देलखण्ड के वरिष्ठ साहित्यकार समाजसेवी और शिक्षक रहे स्व० देवेन्द्रनाथ खरे स्मृति समारोह के अवसर पर उनकी पत्नी शांति देवेन्द्र खरे द्वारा लिखित पुस्तक 'मानस कथा अमिय रस भींजी' के विमोचन के अवसर पर सहभागिता, देवेन्द्र नाथ खरे स्मृति शोध संस्थान, बाँदा, सन- 2018
- भूमण्डलीय और तकनीकी समय में हिन्दी विषय पर दो दिवसीय राष्ट्रीय सेमिनार का आयोजन जिसमें उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा बजट मिला, हिन्दी विभाग, राजकीय महिला स्नातकोत्तर महाविद्यालय, बाँदा उत्तर प्रदेश, सन- 2018
- सूरदास पर वक्तव्य देने के लिए रजा न्यास, दिल्ली, युवा लेखक सम्मान, सन- 2018

- 21वीं सदी की हिन्दी कहानी: कथादृष्टि के बदलते आयाम विषयक दो दिवसीय राष्ट्रीय सेमिनार में विषय विशेषज्ञ के रूप में प्रतिभाग तथा सेमिनार के उद्घाटन सत्र में नई सदी की कहानी: कथा दृष्टि के नए आयाम शीर्षक पर बीज-वक्तव्य, इग्नू, क्षेत्रीय केन्द्र जबलपुर, सन- 2021
- शिक्षक दिवस के अवसर पर उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा शिक्षक सम्मान, सन- 2021
- आजादी के संघर्ष का सामाजिक और साहित्यिक परिप्रेक्ष्य विषयक दो दिवसीय राष्ट्रीय सेमिनार का आयोजन, राजकीय महिला स्नातकोत्तर महाविद्यालय, बाँदा उत्तर प्रदेश, सन-2022
- काव्य कला और मुकुन्द लाठ की कला चेतना विषय पर वक्तव्य देने के लिए रजा न्यास, दिल्ली, युवा लेखक सम्मान, सन-2022
- भक्ति कविता की प्रतिरोधी चेतना और कबीर विषयक दो दिवसीय राष्ट्रीय सेमिनार पर वक्तव्य, चित्रकूट, उत्तर प्रदेश, सन-2023
- लेखक व सम्भागीय परिवहन अधिकारी के०डी० सिंह द्वारा लिखित एवं अनामिका प्रकाशन द्वारा प्रकाशित पुस्तक 'तिरहार' जिसमें किसानों की परिस्थितियों का मार्मिक वर्णन है, पर आयोजित साहित्यिक कार्यशाला में वक्तव्य, एल०आई०सी० सभागार, बाँदा, सन-2024

(विस्तृत विवरण परिशिष्ट-V)

3.7 डॉ० शशिभूषण मिश्र जी की यात्राएँ



डॉ० शशिभूषण मिश्र ने अपने जीवन काल में देश के विभिन्न स्थलों की यात्राएँ हैं, जिनको हम दो भागों शैक्षिक एवं मनोरंजनात्मक यात्राओं के रूप में देखेंगे। शैक्षिक यात्राओं में डॉ० शशिभूषण मिश्र की साहित्य अकादमी पुस्तकालय, दिल्ली, राष्ट्रीय साहित्यिक कार्यक्रम, ओरछा, विश्व भारती विश्वविद्यालय, कलकत्ता, जबलपुर, कानपुर, लखनऊ, विलासपुर, जे०एन०यू०

एवं पण्डित रविशंकर विश्वविद्यालय, रायपुर आदि विश्वविद्यालयों की यात्राएँ प्रमुख हैं तथा इन्होंने भारतीय उच्च अध्ययन संस्थान, शिमला की यात्रा अभी हाल में की है।

भारतीय उच्च अध्ययन संस्थान, शिमला की शोध कार्यो हेतु की जाने वाली यात्रा डॉ० शशिभूषण मिश्र के जीवन का अगला स्वप्न है जिसे वे शीघ्र ही पूर्ण भी करेंगे। यह संस्थान भारत के श्रेष्ठ शोध करने वाले विद्यार्थियों, शिक्षकों, प्रोफेसरों के लिए एक स्वप्न की तरह होता है। यह भारत का सर्वश्रेष्ठ पुस्तकालय तथा पुराना राष्ट्रपति भवन भी है जिसे डॉ० सर्वपल्ली राधाकृष्णन ने शिक्षकों और शोधार्थियों को समर्पित किया था। यह भारत का पहला उच्च अध्ययन संस्थान है, जो सामाजिक विज्ञान एवं मानविकी विषयों के शिक्षकों और शोधार्थियों के लिए समर्पित है। इस संस्थान में शोध कार्य के लिए आवेदन करना पड़ता है तथा अनुमोदन के पश्चात ही यहाँ शोध कार्य सम्भव हो पाता है।

मनोरंजनात्मक यात्राओं में मैसूर, मुम्बई, कर्नाटक, तमिलनाडु, चेन्नई, इन्दौर, भोपाल, छत्तीसगढ़, रायपुर, मनाली, शिमला, गुरुग्राम, चंडीगढ़, अमृतसर, राजस्थान आदि प्रमुख हैं तथा नर्मदा नदी के किनारे के हिस्से डॉ० शशिभूषण मिश्र को बहुत प्रिय रहे हैं।

3.8 व्यक्तित्व की विशेषताएँ

डॉ० शशिभूषण मिश्र सामाजिक सरोकारों के प्रति चैतन्य संवेदनशील लेखक तथा आलोचक हैं। उनका हृदय छल-छिद्र से दूर सहजता में रमता है। डॉ० शशिभूषण मिश्र के व्यक्तित्व की उल्लेखनीय उपलब्धि शोध तथा आलोचनात्मक लेखन है। डॉ० शशिभूषण मिश्र का व्यक्तिगत मानना है कि अनावश्यक चर्चा से अच्छा पत्रिका में कोई लेख पढ़ना है। मौलिकता, वास्तविकता को स्वीकार करना, अपनी संस्कृति का सम्मान करना तथा नौकरी के बाद भी अपने गाँव, खेती, बगीचों तथा अपने माता-पिता का ध्यान रखना तथा नौकरी से अधिक खेती को महत्व देना डॉ० शशिभूषण मिश्र के व्यक्तित्व के सकारात्मक पक्ष हैं। डॉ० शशिभूषण मिश्र ऐसा मानते हैं कि प्रत्येक व्यक्ति में अच्छाइयों के साथ कुछ बुराइयाँ भी होती हैं लेकिन अगर अच्छाइयों की मात्रा अधिक है तो बुराइयाँ अपना आस्तित्व खो देती हैं। डॉ० शशिभूषण मिश्र गलत का विरोध कर देते हैं

जिसका खामियाजा भी उन्हें भुगतना पड़ता है तथा कभी बड़े पदों पर जाने की इच्छा नहीं करते क्योंकि वे विद्यार्थियों के प्रिय शिक्षक के रूप अपनी पहचान बनाए रखना चाहते हैं।

3.9 साहित्यिक एवं आलोचनागत विशेषताएँ

डॉ० शशिभूषण मिश्र की पिछले एक दसक में पहचान उल्लेखनीय सम्पादकीय अंकों के कारण हुई है। उनकी साहित्यिक राष्ट्रीय छवि 'लमही' पत्रिका के सम्पादन से हुई तथा साहित्यिक व्यक्तित्व के विकास में पहल, लमही, हंस और माटी आदि पत्रिकाओं के सम्पादन तथा लेखों का विशेष योगदान रहा। साहित्य में मौलिकता इनकी सर्वश्रेष्ठ साहित्यिक विशेषता है। डॉ० शशिभूषण मिश्र का व्यक्तिगत मानना है कि किताब प्रकाशित कराना तो पैसे देकर हो सकता है लेकिन किसी राष्ट्रीय स्तर की पत्रिका में लेख लिखना किताब प्रकाशित करने से ज्यादा महत्वपूर्ण है क्योंकि पत्रिकाएँ सामूहिक स्वीकृति का जिसमें सामग्री का अच्छा होना आवश्यक होता है तथा किताबें व्यक्तिगत प्रयास का परिणाम होती हैं।

एक सच्चा साहित्यकार अपनी भावनाओं को शब्दों में उतारते समय न विधा का बन्धन मानता है न शब्दों का मानक। जिस विधा में उसके हृदय के भाव अच्छी तरह से व्यक्त होते हैं वही उसके साहित्य की विधा हो जाती है। किसी विषयवस्तु की उसके लक्ष्य को ध्यान में रखते हुए उसके गुण-दोषों एवं उपयुक्तता का विवेचन करने वाली साहित्यिक विधा आलोचना है। इसमें पाठ अध्ययन, विश्लेषण, मूल्यांकन एवं अर्थ निगमन की प्रक्रिया शामिल है। हिन्दी आलोचना की शुरुआत 19 वीं सदी के उत्तरार्द्ध में भारतेन्दु युग से ही मानी जाती है। डॉ० शशिभूषण मिश्र आलोचना के विषय के रूप में कविता, कहानी तथा उपन्यासों पर आलोचनात्मक लेख प्रमुख हैं। वे चाहते हैं कि 21वीं सदी की कहानी में किस तरह से ग्रामीण जीवन और ग्रामीण परिवेश जो कमतर होता जा रहा है क्योंकि आज के कहानीकार शहरीकृत होते जा रहे हैं तथा गाँवों पर ध्यान नहीं देते जिससे उनकी कहानियों में नकलीपन है।

कविताओं, कहानियों तथा अन्य साहित्यिक विधाओं में ग्रामीण परिवेश, महिला सशक्तिकरण, बदलाव, अन्य जातियों में सशक्तिकरण, सरकारी योजनाएँ, संवैधानिक प्रावधानों के स्तर पर कार्य तथा गाँव महान हैं, जैसी भावनाएँ जो यूटोपिया के रूप में ना आकर सच के रूप में आएँ क्योंकि गाँव महान नहीं रह गए हैं वहाँ भी

राजनीति एवं लोगों के सम्बन्ध गंदे होते जा रहे हैं, जैसे मुद्दों पर आलोचनात्मक लेखन किया जाना चाहिए। डॉ० शशिभूषण मिश्र इन मुद्दों एवं अन्य समकालीन मुद्दों पर सतत लेखन करते रहना चाहते हैं।

3.10 डॉ० शशिभूषण मिश्र का शैक्षिक योगदान

डॉ० शशिभूषण मिश्र एवं डॉ० अंकिता तिवारी ने मिलकर अपने शिक्षण संस्थान राजकीय महिला स्नातकोत्तर महाविद्यालय, बाँदा में नियमित शिक्षण कार्य के अतिरिक्त हिन्दी साहित्य विषय हेतु राष्ट्रीय पात्रता परीक्षा के लिए अलग से निःशुल्क विशेष कक्षाएँ लेनी प्रारम्भ की हैं तथा दिसम्बर-2023 में मेधा मिश्र, जे०आर०एफ० हुई और दो छात्राएँ नेट पास हुई हैं। डॉ० शशिभूषण मिश्र को अगले क्रम में काफी उम्मीदें हैं क्योंकि 5 बच्चियाँ नेट और जे०आर०एफ० के लिए कोशिश कर रही हैं।

डॉ० शशिभूषण मिश्र के निर्देशन में तीन शोधार्थी पी०-एच०डी० कर रहे हैं। प्रियंका पाण्डेय, जे०आर०एफ०, शोध शीर्षक "21वीं सदी की हिन्दी कहानी का ग्रामीण परिदृश्य", श्रवण कुमार मौर्य, नेट, शोध शीर्षक "प्रेमचन्द्र के उपन्यास विषयक साहित्य पर शोध कार्य" तथा रास बिहारी, नेट, शोध शीर्षक "बुन्देलखण्ड के लोक देवताओं विषयक शोध कार्य" कर रहे हैं। डॉ० शशिभूषण मिश्र हिन्दी को तकनीकी ज्ञान से जोड़ने हेतु सदैव प्रयासरत रहते हैं तथा हिन्दी के विद्यार्थियों को कम्प्यूटर के विविध सॉफ्टवेयरों तथा अन्य कौशलों के विकास हेतु प्रेरणा एवं मार्गदर्शन प्रदान करते रहते हैं।

3.11 डॉ० शशिभूषण मिश्र का साक्षात्कार

शोध निर्देशक डॉ० राजीव अग्रवाल सर के निर्देशन में शोधार्थी द्वारा हिन्दी के शुद्ध लेखन, उन्नयन एवं शिक्षण में सुधार हेतु हिन्दी साहित्य के विशेषज्ञ डॉ० शशिभूषण मिश्र जी से साक्षात्कार के रूप में उनके जवाब एवं सुझाव प्राप्त किए गए जिनका विवरण निम्नलिखित है-

प्रश्न. सर, हिन्दी को मातृभाषा का दर्जा दिए जाने के बाद भी लोग अंग्रेजी को प्राथमिकता दे रहे हैं। इस पर आपकी क्या राय है?

जवाब. देखिए, इस मानसिकता के लिए हमारी व्यवस्था ही जिम्मेदार है। न्याय, चिकित्सा, केन्द्रीय सरकार के अभिकरणों तथा उच्च पदासीन लोगों की भाषा अंग्रेजी है। अंग्रेजी ताकतवरों की भाषा है तथा जब तक सरकार हिन्दी को प्राथमिकता नहीं देगी तब तक समस्या का निराकरण सम्भव नहीं है। हिन्दी पट्टी के लोग सिर्फ रोना

रोते हैं जबकि इतनी बड़ी आबादी अगर ईमानदारी से चाह ले तो हिन्दी को एक वर्ष के अन्दर दुरस्त किया जा सकता है परन्तु वो खुद नकलची हैं जो अंग्रेजी सीखना चाह रहे हैं। इस दृष्टिकोण से हम अंग्रेजी के सहारे हिन्दी को उसका सम्मान दिला सकते हैं अर्थात हमें हिन्दी और अंग्रेजी दोनों भाषाओं को सीखना होगा। इसे सुधारने के लिए परिवार स्तर, घर स्तर पर कार्य करना होगा। हिन्दी के शिक्षक ही सोए हुए हैं, जिनका यह कार्य है। संघर्ष बड़ा है हिन्दी ने काफी जगह अपनी पैठ बनाई है क्योंकि अंग्रेजी ताकतवरों की भाषा है इसलिए इस चुनौती पूर्ण कार्य को करने के लिए अंग्रेजी के सहारे की जरूरत है।

प्रश्न. नर्सरी, प्राथमिक एवं जूनियर स्तर पर विद्यार्थिओं को अनुत्तीर्ण नहीं किया जाता है शिक्षा के उन्नयन के मार्ग में कहीं यह कारण तो बाधक नहीं है।

जवाब. नर्सरी, प्राथमिक एवं जूनियर स्तर पर अनुत्तीर्ण न करने की व्यस्था बड़ी ही घटिया है, जो सिर्फ संयुक्त राष्ट्र संघ से बजट लेने के लिए है। हमारी सरकारों की दिली इच्छा ही नहीं है कि शिक्षा व्यवस्था में बदलाव हो। सरकारें जिस तरह से लोगों को लुभाने में ध्यान लगा रही हैं अगर ऐसा ही ध्यान शिक्षा में लगा दें तो तस्वीर बदल जाएगी। राज्य स्तर के विद्यालयों में मॉनीटरिंग व्यवस्था बिल्कुल भी अच्छी नहीं है, वहीं केन्द्रीय विद्यालयों, नवोदय विद्यालयों में व्यवस्था बहुत अच्छी है अर्थात शिक्षा की गुणवत्ता के लिए व्यवस्था जिम्मेदार है।

प्रश्न. आज अधिकतर विद्यार्थी हिन्दी में ही अनुत्तीर्ण होते हैं इस विषय पर आपकी क्या राय है?

जवाब. हिन्दी की उपेक्षा से हम कभी भी विश्वगुरु नहीं बन सकते हैं। पैसा होने से कोई बड़ा नहीं होता क्योंकि पैसा तो एक चरित्रहीन व्यक्ति भी कमा लेता है। किसी भी वैश्विक, सामाजिक तथा सांस्कृतिक स्वीकृति के लिए आपके नैतिक और उच्च आदर्श का होना बहुत आवश्यक है। अतएव हमें हिन्दी को गम्भीरता से स्वीकार करना होगा। हिन्दी को यदि हम गम्भीरता से नहीं लेंगे तो स्वाभाविक है कि असफलता ही हाथ लगेगी। अन्य विषयों में विद्यार्थियों को डर रहता है कि असफल न हो जाएँ परिणामस्वरुप वे उन विषयों के प्रति गम्भीर रहते हैं। हिन्दी में अनुत्तीर्ण होने का प्रमुख कारण हिन्दी के प्रति हमारी अगम्भीरता ही है।

प्रश्न. उच्च शिक्षण संस्थानों के बैनरों में गलतियाँ होती हैं ध्यान देने वाली बात यह है कि ऐसी गलतियाँ हिन्दी पट्टी में ही मिलती हैं दक्षिण में नहीं जैसा कि नीचे लगे चित्रों में दिखाया गया है, इसके लिए आपकी दृष्टि में कौन जिम्मेदार है?





जवाब. यह हमारी अगम्भीरता है, लापरवाही है कि हम भाषा के लिए सचेत नहीं हैं। भाषा हमारी पहचान है, भाषाओं से जर्मनी, चीन, हिन्दुस्तान आदि राष्ट्रों का जन्म हुआ है। चीन ने अपनी भाषा पर गर्व किया और बिना अंग्रेजी दुनिया में श्रेष्ठ है। जिन संस्कृतियों को अपनी भाषा पर गर्व नहीं रहा वो संस्कृतियाँ नष्ट हो गई हैं। भारतीय समाज के पतन का बुनियादी कारण अपनी भाषा, मातृभूमि के प्रति समर्पण की भावना का न होना है।

- हिन्दी वालों की इसमें बहुत बड़ी कमी है क्योंकि हिन्दी वाले क्यों कोई अभियान नहीं चलाते। जब एक अकेले गाँधी जी ने पूरी दुनिया को बदलने की कोशिश की तो क्या नौकरी करने वाले शिक्षक अपने पैसे से बच्चों के हितार्थ हिन्दी के लिए सुधार का कार्य आन्दोलन के रूप में नहीं कर सकते?
- हमें समाज से, राजनीति से उम्मीद करने की बजाय जिन लोगों को हिन्दी ने रोजगार दिया है उनसे उम्मीद करनी चाहिए। उनकी गहरी उपेक्षा का परिणाम है हिन्दी का नष्ट होना क्योंकि वे सेटर बन गए हैं, पी०- एच०डी० करवा रहे हैं दरअसल हिन्दी से वे प्रेम ही नहीं करते सिर्फ हिन्दी से पैसा कमा रहे हैं।
- मुझे हिन्दी के प्राध्यापकों तथा खुद से शिकायत है कि हिन्दी के लिए जो हमें करना चाहिए वह हम नहीं कर पा रहे हैं।

- अमूमन लिखने वाले वे लोग होते हैं जो अशिक्षित या कम जानकर होते हैं हिन्दी अंग्रेजी की तुलना में लिखने में कठिन है अतएव हिन्दी के शिक्षकों को इसमें सुधार के लिए आगे आना चाहिए।
- बैनरों में, होर्डिंग्स में होने वाली गलतियाँ ऐसी बड़ी समस्या नहीं हैं, जिन्हें खत्म न किया जा सके हिन्दी के प्राध्यापकों तथा विद्यार्थियों को चाहिए कि अपने क्षेत्र में सूचनाओं को इकट्ठा करें तथा व्यवस्थित तरीके से उन्हें सुधरवाने का प्रयत्न करें।

प्रश्न. हिन्दी पट्टी के विद्यार्थी जो बी०एड०, एम०एड० तथा एम०ए० आदि कोर्सों को करने वाले हैं, वे भी लेखन में अशुद्धियाँ करते हैं। इस पर आपके क्या विचार हैं?

जवाब. देखिए, हमारे यहाँ एम०ए० के विद्यार्थी भी हैं जिन्हें शुद्ध वर्तनी लिखनी नहीं आती है एक प्रार्थना पत्र तक शुद्ध लिखते नहीं बनता है। संज्ञा, सर्वनाम, क्रिया, सम्बोधन सम्बन्धी गलतियाँ आम हो गई हैं इसका बुनियादी कारण बचपन में हम विद्यार्थियों से दो काम नहीं करवा रहे हैं-

1. पहला कारण बच्चों से इमला नहीं लिखवाते, अभिभावकों के पास बच्चों के लिए समय नहीं है, अभिभावक कोचिंग लगाकर अपना पल्ला झाड़ लेते हैं तथा अपना समय टी०वी०, मोबाइल आदि अन्य कार्यों में देते हैं। यह माता-पिता अभिभावक की गैर जिम्मेदारी है जिससे यह समस्या पैदा हुई है। शिक्षक से ज्यादा समय बच्चा माता-पिता के पास देता है। अपने बच्चों की कॉपियाँ पलटनी चाहिए।
2. दूसरा कारण अंग्रेजी के प्रति मोह है। अंग्रेजी तो कभी पूरी तरह जान नहीं पाते तथा हिन्दी से भी हाथ धो लेते हैं। मैं विद्वान उस व्यक्ति को मानता हूँ जो अपनी भाषा और संस्कृति का सम्मान करते हुए अच्छी अंग्रेजी जानते हैं क्योंकि वह हिन्दी भाषा के प्रति अर्थात माँ के प्रति अपनी नाक नहीं घुमाते। हिन्दी हमारे देश की पहचान है अगर भाषा मरती है तो वह देश मर जाता है। गाँधी जी गुजराती, सुभाष चन्द्र बोस अच्छी बांग्ला जानते हुए भी हिन्दी पर जोर देते थे क्योंकि हिन्दी हमारी माँ है जिसका संरक्षण संवर्धन हमारी जिम्मेदारी है।

प्रश्न. पहले हिन्दी के कवि, आलोचक आदि निकलते थे लेकिन अब साहित्य सर्जना ख़त्म सी होती जा रही है। इस पर आपके क्या विचार हैं?

जवाब. पहले के लेखक, जीवन और लेखन में एक थे लेकिन अब लेखक शौक के लिए लिख रहा है। मैं कवि हूँ, उपन्यासकार हूँ, आलोचक हूँ इस 'मैं' की भावना ने हमारी समृद्ध सांस्कृतिक एवं साहित्यिक विरासत को नष्ट कर दिया है। आज की कहानी कविताएँ हमें याद नहीं होती हैं क्योंकि हम शेखी बघारने के लिए लिखते हैं। प्रेमचन्द्र कहते थे कि "साहित्य राजनीति से, समाज से आगे चलने वाली मशाल है, वह रोशनी की तरह काम करती है।" समाज से जुड़ा हुआ लेखन तथा लेखन में समाज की समस्याएँ होनी चाहिए लेकिन आज झूंठी क्रान्तिकारिता है। रघुवीर सहाय ने लिखा है कि "जैसा तू लिखता है वैसा तू दिख, लेखन और जीवन में एका का अभाव हुआ है।" मैं ऐसा मानता हूँ कि ऐसा नहीं है कि आज लेखन में अच्छे लोग नहीं बचे हैं लेकिन दिखावे भरे लोग इतने ज्यादा हो गए हैं कि अच्छे लेखक, कवि, उपन्यासकार, आलोचक प्रकाश में नहीं आ पा रहे हैं। ऐसा सिर्फ साहित्य के क्षेत्र में नहीं हुआ है, अपितु सभी क्षेत्रों में मूल्यों का क्षरण हुआ है फिर चाहे वह राजनीति, समाज या परिवार हो।

प्रश्न. शिक्षकों की हिन्दी के प्रति उदासीनता तथा साहित्य सर्जना की कमी का आपकी दृष्टि में क्या कारण हो सकता है?

जवाब. हिन्दी हमारे यहाँ उपेक्षा का शिकार रही है इसका बहुत बड़ा कारण मैं औपनिवेशिक मानसिकता को मानता हूँ। औपनिवेशिक मानसिकता यह कहती है कि जो अंग्रेजी जानता है वह होशियार है। भाषा विद्वता का पर्याय नहीं होती। औपनिवेशिक मानसिकता ने हमारे दिमाग में ठूस-ठूस कर भर दिया है कि जो अंग्रेजी जानता है, वही विद्वान है। एक गाँव की गँवई औरत भी यह जानकर बहुत खुश होती है कि मेरा बेटा 'ट्वेन्टी सेवेन' जानता है 'सत्ताईस' नहीं जानता, यह दुर्भाग्य है। हम राजनीतिक दृष्टि से आजाद हो गए हैं लेकिन सामाजिक, सांस्कृतिक रूप से आज भी हमारी मानसिकता गुलाम है और गुलामी की यही पहचान है कि हम हिन्दी भाषा को लेकर, हिन्दी साहित्य को लेकर गर्व नहीं महसूस करते बल्कि अंग्रेजी बोलने वाले को विद्वान मानते हैं। उस पर गर्व महसूस करते हैं। हमें अपनी सांस्कृतिक विरासत को अपनाना चाहिए न कि अंग्रेजी के साम्राज्यवाद को अपनाना चाहिए या उसमें उलझे रहना चाहिए।

प्रश्न. हिन्दी के पठन-पाठन हेतु आप क्या सुझाव देना चाहेंगे?

जवाब. हिन्दी के पठन-पाठन हेतु हिन्दी के शिक्षकों को, बच्चों को तकनीकी के साथ जोड़ना चाहिए। मेरा मानना है कि हिन्दी वाला सिर्फ हिन्दी का ना रहे उसे शिक्षाशास्त्र, दर्शनशास्त्र, समाजशास्त्र, इतिहास तथा अन्य विषयों का सन्दर्भ भी लेना चाहिए। मैं स्वयं हिन्दी का होते हुए भी नई शिक्षा नीति 2020 पर तीन लेख लिख चुका हूँ। हिन्दी के पठन-पाठन हेतु कुछ सुझाव निम्नलिखित हैं-

1. साहित्य का विद्यार्थी शिक्षाशास्त्र, दर्शनशास्त्र, समाजशास्त्र, इतिहास आदि विषय भी पढ़े सिर्फ विशुद्ध साहित्य का ना रहे।
2. हिन्दी का सम्मान तभी होगा जब हिन्दी को जानने वाला विद्वान होगा। लोगों को प्रभावित करने वाला होगा अर्थात अन्तर-आनुशासनिक अध्ययन की बहुत आवश्यकता है।
3. बहुत अधिक वर्तनीगत अशुद्धियाँ हैं उन पर प्राथमिक स्तर पर बहुत काम किए जाने की जरूरत है। बच्चों को प्रत्येक सप्ताह भाषा लेखन पर कार्यशाला आयोजित किए जाने की आवश्यकता है, यह कार्य शिक्षक को ही करना होगा।
4. सिर्फ शुद्ध लेखन के ही अंक परीक्षाओं में दिए जाएँ। भावना पर अंकन गलत विचारधारा है। मैं इस बात पर जोर देता हूँ कि हमें भावना आधारित अंकन किसी भी परिस्थिति में नहीं करना चाहिए बल्कि शुद्ध लेखन के आधार पर ही अंकन करना चाहिए।
5. नई शिक्षा नीति 2020 में भी प्राथमिक स्तर पर शुद्ध लेखन के लिए फ्रेमवर्क होना चाहिए।
6. प्राथमिक तथा उच्च प्राथमिक स्तर पर स्कूलों में वर्ष में दो बार भाषा सम्बन्धी कम से कम दो दिवसीय कार्यशाला आयोजित होनी चाहिए। जिसकी जिम्मेदारी जिला स्तरीय कमेटी या जिला विद्यालय निरीक्षक अथवा जिलाधिकारी की अध्यक्षता में एक समिति हो जो लेखन, वक्तव्य और भाषा के विकास पर काम करे तथा जिला विद्यालय निरीक्षक, इण्टर कॉलेज के हिन्दी के विद्वान शिक्षकों को भाषा विकास तथा शुद्ध लेखन हेतु नियुक्त करें तथा उनके कार्य का मूल्यांकन भी करवाएँ।

7. घरों में माता-पिता और अभिभावकों की बहुत बड़ी जिम्मेदारी है कि वे सप्ताह में कम से कम एक दिन अपने बच्चों से एक पेज शुद्ध बोल कर इमला लिखवाएँ, जाँचें तथा अशुद्धियों का सुधार करें।
8. हिन्दी के विद्यार्थियों में यह प्रवृत्ति पाई जाती है कि हिन्दी ले लो और एम०ए० पास हो जाएंगे बस।
9. अगर आप हिन्दी को अच्छे से पढ़ेंगे तो आप मजबूत होंगे। आपकी भाषा मजबूत होगी अर्थात हिन्दी का सम्मान गिराने और बढ़ाने में आपकी बहुत बड़ी भूमिका होगी।
10. हिन्दी के विद्यार्थी आमतौर से तकनीकी ज्ञान में शून्य होते हैं इसके लिए उनको खासकर कम्प्यूटर जागरूकता, कम्प्यूटर प्रोग्राम जैसे पी०पी०टी० आदि में दक्ष होना चाहिए।
11. हिन्दी के शिक्षकों को अपने स्कूल और कॉलेज समय के अतिरिक्त भी समय देना होगा क्योंकि विभिन्न स्तरों के शिक्षकों ने अपनी जिम्मेदारी नहीं निभाई अन्यथा यह स्थिति न होती।
12. व्यावसायिक नैतिकता अवश्य होनी चाहिए।

प्रश्न. आपके अनुसार पाठ्यक्रम पुराना ही सही है या अद्यतन होते रहना चाहिए।

जवाब. पाठ्यक्रम अद्यतन होते रहना चाहिए अभी पाठ्यक्रम में कुछ नई चीजें जोड़ी गई हैं जैसे-प्रयोजनमूलक हिन्दी इसमें कम्प्यूटर, कम्प्यूटर की भाषा, पत्रकारिता, फिल्म, पत्राचार, कार्यालयी हिन्दी तथा हिन्दी को नए माध्यमों से भी जोड़ना चाहिए। जो साहित्य जनोपयोगी है, समाजोपयोगी है वह तकनीकी से समृद्ध होगा। दुनिया के ऐसे साहित्य का हिन्दी में अनुवाद किया जा सकेगा जो अभी तक नहीं हो पाया क्योंकि हिन्दी के विद्यार्थी अगर अंग्रेजी भी अच्छी जानेंगे तो वह अच्छा कार्य हिन्दी के उत्थान में कर सकेंगे। इस कार्य हेतु अच्छे अनुवादकों की भी जरूरत है।

प्रश्न. आपके अनुसार परीक्षा प्रणाली पुरानी ही सही है या बदलाव होना चाहिए।

जवाब. सुझाव निम्नलिखित हैं-

1. वर्तमान परीक्षा प्रणाली बहुत ही गड़बड़ है मौलिक प्रश्न तो बनाए ही नहीं जाते जैसे प्रश्न आता है- कबीर की भक्ति भावना बताइए? इसमें छात्र मौलिकता के अभाव में रटे-रटाए प्रश्नों के उत्तर देकर पास हो जाते हैं जबकि मौलिकता के लिए प्रश्न होना चाहिए कि- कबीर की वर्तमान में प्रासंगिकता बताइए।

2. विश्वविद्यालय स्तर पर पढ़ाए जाने वाले पाठ्यक्रम को जानने वाले योग्य शिक्षकों से आज प्रश्न पत्र ही नहीं बनवाए जा रहे हैं जिससे मौलिक प्रश्नों की कमी बनी रहती है।
3. सबसे खराब कॉपी जाँचने की व्यवस्था है। यह इतनी बेकार है कि सब का औसत मूल्यांकन किया जाता है। विश्वविद्यालय में कॉपी जाँचने का कार्य ठेके जैसा है जिसमें विद्यार्थियों के साथ सरेआम मजाक किया जाता है। इस व्यवस्था से निपटने के लिए परीक्षा प्रणाली में तीनों पैटर्न लागू होने चाहिए। प्रश्न पत्र में 33% बहुविकल्पीय प्रश्न, 33% अति लघु उत्तरीय प्रश्न तथा 33% निबंधात्मक प्रश्न होने चाहिए। विश्वविद्यालय में मूल्यांकन के लिए राजकीय और एडेड कॉलेज के शिक्षकों को भी बुलाया जाना चाहिए।

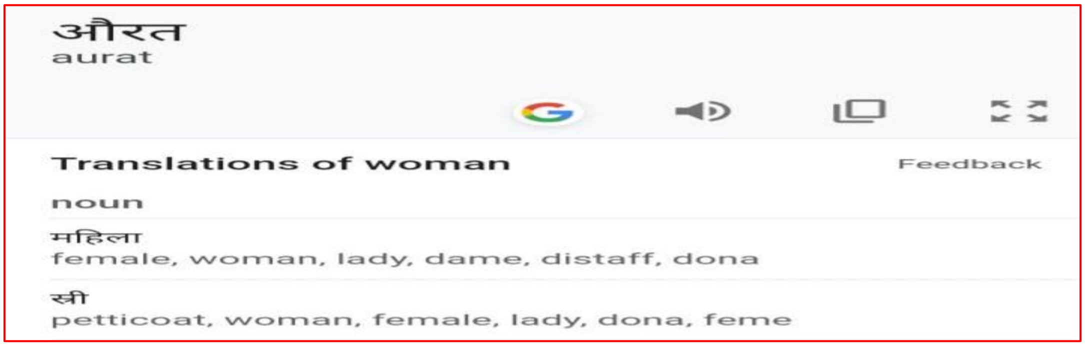
प्रश्न. पहले नाटक, गीत आदि पाठ्य सहगामी कार्यक्रम शिक्षण संस्थान स्तर पर आयोजित होते थे लेकिन अब या तो होते ही नहीं या बहुत कम संस्थानों द्वारा आयोजन किया जाता है। इस पर आपके क्या विचार हैं?

जवाब. गीत, नाटक यह सब कलाएँ हमारे परिष्करण के बड़े स्रोत रहे हैं जो जानकारियाँ हमें किताबों से नहीं मिलती वे इनसे मिल जाती हैं। व्यक्तित्व के समग्र विकास में सिर्फ किताब और गाइडों की भूमिका बहुत थोड़ी है। आसपास के कलात्मक माध्यम जैसे- नुक्कड़ नाटक, नाट्य प्रस्तुतियाँ, व्याख्यान, जनसभाएँ मन में बड़ा गहरा असर डालते हैं। इनके बन्द होने का प्रमुख कारण टी०वी० की संस्कृति, इन्टरनेट खासकर मोबाइल जब से आया इसने इन चीजों को नष्ट कर दिया।

प्रश्न. पद्य को गद्य की तरह ही पढ़ाया जाता है आपकी दृष्टि में यह कहाँ तक सही है?

जवाब. सस्वर वचन का बहुत गहरा प्रभाव पड़ता है। मैं दावा करता हूँ कि कोई चीज गाकर पढ़ाई जाती है तो वह निश्चित ही याद हो जाएगी अगर गाकर ना सुनाई जाए तो वह नीरस होगी और याद नहीं होगी। गाकर पढ़ने से छात्र भी याद कर पाते हैं। लय किसी भी कविता, रचना को हमारे भीतर प्रवेश गम्य बनाती है इसलिए हिन्दी का लयात्मक गीत हमें आज भी याद है। लय में मनुष्य की संवेदना के भीतर प्रवेश करने की शक्ति होती है इसीलिए शिक्षकों को चाहिए गाकर, सस्वर पाठ करके, रोमांचित करके बच्चों को कविताएँ सुनाएँ। मैं ऐसा मानता हूँ कि हिन्दी के शिक्षकों का सस्वर वाचन में बुरा हाल है।

प्रश्न. गूगल सर्च में वूमेन मीनिंग इन हिन्दी टाइप करने पर स्त्री की जगह 'स्री' लिखकर आता है जैसा की चित्र में दिखाया गया है। इस पर आपके क्या विचार हैं?



जवाब. गूगल अमेरिका का है उसने हिन्दी के लिए बहुत काम किया है जिसने तकनीकी से हिन्दी को जोड़ दिया। वह बारीकियाँ नहीं समझता है। हमारी हिन्दी के जो तकनीकी जानकार हैं, उन्हें इस तरह का एक सर्च इंजन या कम्प्यूटर प्रोग्राम विकसित करना चाहिए तथा गूगल को इस तरह की समस्याओं से अवगत कराकर सुधार की आवश्यकता है। जो मदद आप गूगल की करेंगे उससे गूगल खुश होगा क्योंकि गूगल यही चाहता है। आज हमारे देश में तकनीकी के जानकार योग्य विद्यार्थियों की प्रचुरता है जो इन चीजों पर काम करना जानते हैं। लेकिन हमारी सरकारें ही यह नहीं चाहती हैं। अतएव हम सभी को हिन्दी के उत्थान के लिए साझा प्रयास करना होगा अन्यथा हमारा देश विश्व गुरु तो बन ही नहीं सकता।

प्रश्न. आपने साहित्य के क्षेत्र में अन्य विधाओं को छोड़कर आलोचना को ही क्यों चुना?

जवाब. व्यक्ति विधाओं के चयन को लेकर पहले से ही निश्चित नहीं होता कि वह किस विधा का चयन करेगा ठीक उसी प्रकार जैसे बचपन में हमारे विषय तय नहीं होते कि हम कौन सा विषय लेकर आगे पढेंगे। कई चीजें हमारे आने वाले समय के आधार पर निर्धारित होती हैं। ठीक ऐसा ही मेरा आलोचना के क्षेत्र में जाना रहा है। प्रारम्भ में मुझे कविताओं में बड़ी रूचि थी लेकिन जब मैंने गोष्ठियों में आत्म-मुग्ध कवियों की भीड़ देखी जिनमें सुनाने वाले तो हैं लेकिन बहुत मन से सुनने वाले या सार्थक टिप्पणी करने वाले बहुत कम हैं। बहुत अच्छी, बहुत खराब तथा बहुत शानदार जैसे शब्दों को बोलकर लोग अपनी भावनाएँ व्यक्त करते हैं लेकिन शब्दों का प्रयोग, गति, लय, छन्द आदि को लेकर जो शास्त्रीय, समाजशास्त्रीय या अन्य मानदण्ड हैं, आदि पर चर्चा नहीं के बराबर होती है।

रचनाओं को कैसे पढ़ा जाए, अच्छी और खराब रचना में क्या अन्तर होता है तथा शाब्दिक और भाषिक प्रयोग एक कठिन कार्य है। आज लगभग हर तीसरी गली में एक कवि होगा लेकिन अगर उससे पूँछा जाए कि आपने अन्य भारतीय कवियों के बारे में पढ़ा है तो वे अनुत्तरित हो जाते हैं। हमारे कवि अलापना अधिक जानते है लेकिन उन्हें कविता की समझ नहीं है। अपना सुनाने से अच्छा दूसरों को पढ़ने एवं टिप्पणी करने की भावना एम०फिल० और पी०-एच०डी० के दौरान ही आ गई थी। इन सब चीजों ने मुझे प्रेरित किया कि अपना पढ़ा हुआ न लिखकर दूसरों को पढ़कर कुछ लिखूँ इसीलिए मैंने आलोचना को चुना।

प्रश्न. आलोचना से साहित्यकार नाराज भी हो जाते होंगे। इस पर आपके क्या विचार हैं?

जवाब. आज लेखक सिर्फ प्रशंसा ही चाहता है। मेरे गुरु विश्वनाथ त्रिपाठी जी कहते हैं कि "यदि किसी से दुश्मनी बनानी है तो आलोचना लिखना प्रारम्भ कर दीजिए अर्थात सही बोलना/लिखना प्रारम्भ कर दीजिए।" ऐसे लेखक बहुत बिरले ही होते हैं जो अपनी रचना की आलोचना सुनकर/पढ़कर प्रसन्न होते हैं तथा अपनी विधा और अन्य साहित्यिक पक्षों में सुधार करते हैं। यदि हम अपनी आलोचना सुनना पसन्द कर लेते हैं तो हम निश्चित तौर पर सत्य को स्वीकार कर लेने की सामर्थ्य विकसित कर चुके होते हैं। आजकल तो साहित्यकारों का हुजूम सिर्फ प्रशंसा और तालियों की गडगडाहट के लिए उमड़ता है।

प्रश्न. आपके अनुसार 'आलोचना' क्या है तथा आज आलोचकों की बहुत कमी क्यों है?

जवाब. 'आलोचना रचना तक पहुँचने वाली एक ऐसी पगडंडी है जो बहुत खतरनाक है, बहुत मेहनत पर निर्भर है तथा बहुत श्रम साध्य है।' इसीलिए आलोचना में बहुत कम लोग आते हैं। अपनी रचना की वाहवाही करना सरल है लेकिन दूसरे की रचना में प्रवेश करते हुए उसकी अच्छाइयों-बुराइयों को निकालना बहुत श्रम साध्य है, इसी दोहरे श्रम एवं चुनौतियों के अधिक होने के कारण ही पूरी दुनिया में आलोचकों की संख्या बहुत कम है। हर विद्यार्थी/सृजनात्मक व्यक्ति में कविताओं और कहानियों के लेखन की कुछ न कुछ कला तो होती है तथा वह लेखन करता रहता है लेकिन आलोचना का गुण अर्जित करना पड़ता है। आलोचना के लिए श्रम ही करना पड़ता है तथा मुझे अब इस विधा में आनन्द आने लगा है और मैं अब इसी विधा में ही रहूँगा।

3.12 डॉ० शशिभूषण मिश्र जी एवं उनके साहित्य के सम्बन्ध में अन्य विद्वानों की सम्मतियाँ

- **डॉ० सचिन मिश्र (असिस्टेंट प्रोफेसर, हिन्दी, राजकीय महिला स्नातकोत्तर महाविद्यालय, बाँदा)**



  - मेरे लिए डॉ० शशिभूषण मिश्र एक ऐसे व्यक्तित्व के रूप में उभरते हैं जो सचमुच साहित्य की सेवा करने की एक उम्मीद में लगा रहता हो। शशिभूषण जी इस मायने में मेरे लिए खास हैं क्योंकि वे अपने अध्यापकीय व्यवसाय का पूरी नैतिकता एवं ईमानदारी से निर्वहन करते हुए साहित्य की सेवा कर रहे हैं।
  - आप डॉ० शशिभूषण मिश्र जी की कथनी और करनी में विभेद नहीं पाएँगे। शशिभूषण जी आज जिस जगह पर हैं उसकी वजह हिन्दी है। वे हिन्दी का सम्मान करते हुए हिन्दी के लिए जो कुछ भी बन पड़ता है, करते रहते हैं। वे साहित्यिक आयोजनों को कराते रहते हैं तथा हिन्दी पढ़ने-लिखने वालों को एकजुट रखते हैं, उनसे सम्बन्ध बनाए रखते हैं। हिन्दी की दुनिया में नया क्या चल रहा है उससे हमें भी परिचित कराते रहते हैं।
  - वर्तमान समय में कबीर की प्रासंगिकता लेख आने वाली नई पीढ़ी को एक संघर्षशीलता, कर्मठता, ईमानदारी, दूरदर्शिता, लगन, पक्के इरादों को मजबूत करने पर बल प्रदान करेगा। यह लेख समाज में समता, समानता, बन्धुत्व, भाईचारा की भावना को शक्ति प्रदान करते हुए महापुरुषों के सम्मान की भावना को सम्बल देगा।
  - जब पत्रिकाएँ मर रही हों, जब लोग हिन्दी पढ़ना छोड़ रहे हों तब शशिभूषण जी इस जुगत में रहते हैं कि कैसे हिन्दी की दुनिया को मजबूत किया जाए। इस सम्बन्ध में अभी उन्होंने 'लमही' पत्रिका का सम्पादन भी किया है। सम्पादन एक दुष्कर कार्य है तथा आमतौर पर ऐसा देखा जाता है कि सम्पादन के अधिक श्रम साध्य होने के कारण लोग सम्पादन से भागते हैं।

- डॉ० शशिभूषण मिश्र आपको प्रेरित करते हैं कि आप लिखें क्योंकि आज के समय में नौकरी, परिवार तथा अन्य जिम्मेदारियों के बाद भी वे पढ़ते हैं। मैं उनकी पढ़ने की शैली, सम्पादकीय दृष्टिकोण, लेखकीय दृष्टिकोण और विभिन्न पत्रिकाओं की समीक्षा से प्रभावित हूँ।
- हिन्दी का पुराना साहित्य क्या है, हिन्दी का वर्तमान क्या है वे दोनों में एक सामंजस्य बिठाते हैं इसलिए मुझे लगता है कि शशिभूषण जी मेरे लिए बहुत मायने रखते हैं।
- 'डॉ० शशिभूषण मिश्र का साहित्यिक एवं शैक्षिक योगदान' विषयक लघु शोध हिन्दी प्रेमियों तथा शोधार्थियों को आकर्षित करेगा जिससे हिन्दी के उत्थान की भावना बलवती होगी। इस दिशा में आप (शोधार्थी) शशिभूषण जी पर आर्टिकल लिखकर अपना और अधिक सहयोग कर सकते हैं।

देवेश रंजन पाण्डेय (पूर्व विद्यार्थी, एम०ए० हिन्दी, जे०एन०यू०, जे०आर०एफ०, शोध-अध्येता, लखनऊ विश्वविद्यालय)



- समकालीन सन्दर्भों के सुधी और आलोचक डॉ० शशिभूषण मिश्र ने 'भक्ति कविता का लोक-आलोक' आलोचनात्मक पुस्तक. सेवा की अनमोल किरण की माला है जिसमें हिन्दी आलोचना के मोती सुमनोहर शैली में पिरोकर अपनी बहुमुखी प्रतिभा का परिचय दिया है। हिन्दी आलोचना में गहरी पैठ रखने वाले डॉ० शाशिभूषण मिश्र शोधार्थियों, साहित्यकारों तथा आलोचकों के बीच बड़े ही लोकप्रिय होते जा रहे हैं।
- लेख लिख देने भर से साहित्य का प्रसार नहीं होता, बल्कि वास्तविकता के धरातल पर लेखन साहित्य के प्रसार में सहायक होता है। इस निहितार्थ को इंसानी ढांचे में ढालकर उसे मूर्त रूप देने वाले बाँदा की माटी के अमिट हस्ताक्षर डॉ० शशिभूषण मिश्र साधुवाद के पात्र नहीं, अधिकारी हैं। साहित्यकार ने जाति धर्म से ऊपर उठकर देश एवं समाज हित के साहित्य की सर्जना करके साहित्य जगत का बड़ा उपकार किया है।

- डॉ० शशिभूषण मिश्र अपने मन और मिज़ाज के सुलझे हुए आलोचनाकर और लेखक हैं। वे लेखक पहले और आलोचक बाद में है।

- आधुनिक काल में भारतेन्दु युग (उन्नीसवीं सदी के उत्तरार्द्ध) से अपनी बाल-यात्रा प्रारम्भ करने वाली आलोचना आज अपने समृद्धिकाल पर है। सामाजिक और राजनीतिक विसंगतियों पर तंज कसते हुए समाज को दिशा-निर्देश देने वाली आलोचनाओं पर अनेकानेक काम हुए हैं; डॉ० शशिभूषण मिश्र भी इन अनगिनत कामगारों में से एक हैं।

- डॉ० शशिभूषण मिश्र जी एक अच्छे आलोचक, सम्पादक तथा शिक्षक के रूप में साहित्य एवं हिन्दी के उत्थान के लिए समर्पित हैं। उन्हें भूले-बिसरे जीवन की गहरी रंगतो को पकड़ने एवं उन्हें अभिव्यंजित करने का कमाल हाशिल है। इनकी एक अच्छी विशेषता यह भी है कि ये पूर्वाग्रह से ग्रसित लेखन नहीं करते हैं।

- भाषा कोई भी हो शब्दावली किसी भी भाषा की हो, यदि वह आम प्रचलन में है तो लेखक ने बेखटके उसका प्रयोग किया है। मैं निर्विवाद रूप से कह सकता हूँ कि भाषा एक संस्कार है जो न केवल परिवार और परिवेश से प्रभावित होती है; बल्कि शिक्षा, अध्यवसाय व अभ्यास से परिष्कृत और पुष्ट होती है। आलोचक डॉ० शशिभूषण मिश्र इससे विलग नहीं है। यदि भाषा अभिव्यक्ति का माध्यम है तो शैली उस अभिव्यक्ति का प्राण। विचार प्रकट करने के ढंग या तरीके को शैली कहते हैं। इसे अंग्रेजी में स्टाइल तथा भारतीय काव्यशास्त्र में 'रीति' कहा गया है। आलोचना लेखन में सैद्धांतिक, निर्णयात्मक, प्रभावाभिव्यन्जक और विश्लेषणात्मक शैली का प्रयोग किया गया है।

- डॉ० शशिभूषण मिश्र नें अभी हाल में 'लमही' पत्रिका के तीन अंकों का कुशल सम्पादन किया है जिनमें से एक अंक स्त्रियों के लिए समर्पित है। इससे स्पष्ट होता है कि डॉ० शशिभूषण मिश्र स्त्रियों के विरोधी न होकर उन्हें अधिकारों के प्रति जागरूक करते हैं तथा शिक्षा की मुख्य धारा से जोड़ने के लिए सतत प्रयासरत रहते हैं।

अंकिता गुप्ता (एम०ए० हिन्दी, अध्ययनरत)



- शब्द की अपनी सत्ता होती है। लेकिन सीमा भी होती है। भावनाओं को यथारूप सम्प्रेषित करना एक असंभव कार्य है। इसी असम्भव को सम्भव करने की गहरी इच्छा मनुष्य को साहित्यकार बना देती है । लेखक अपनी संवेदनाओं को शब्दों में पिरोता है और साहित्य की धारा बह उठती है।
- डॉ० शशिभूषण मिश्र की शिक्षण शैली बच्चों के स्तर के अनुकूल रहती है जिसमें वे बीच-बीच में कठिन शब्दों को समाहित करते हैं तथा उनकी सरलतम व्याख्या करना उनकी अद्वितीय विशेषता है। शिक्षण के दौरान तथा बाद में विद्यार्थियों को अपमानित नहीं करते हैं बल्कि बड़े सहज स्वभाव से समस्याओं का निराकरण करते हैं।
- डॉ० शशिभूषण मिश्र अपनी आलोचना एवं शिक्षण में स्त्रियों के उत्थान एवं उनके आत्मसम्मान के लिए सदैव तत्पर रहते हैं।
- डॉ० शशिभूषण मिश्र अपने घरेलू जीवन में भी बड़े खुशमिजाज, हँसमुख तथा सामने बुराई करने पर नाराज नहीं होते। कभी-कभी मैंम (डॉ० अंकिता तिवारी) से मजाक करते हैं तथा विनोद के लिए ताने भी मारते है जिन्हें मैंम भी गम्भीरता से नहीं लेती हैं।
- डॉ० शशिभूषण मिश्र शिक्षण समय के बाद भी विद्यार्थियों को समय देते हैं तथा शिक्षण को मनोरंजक एवं बोझरहित बनाए रखने के लिए कहानियों, अपने स्वयं के उदाहारण, घटनाओं, अभिनय तथा सस्वर वाचन आदि तरीकों का प्रयोग करते हैं जिससे अधिगम बड़ा ही आसान हो जाता है।

चतुर्थ अध्याय

साहित्य सर्जना

4.1 प्रकाशित लेख

4.1.1 झूंठ की दनिया में कबीर की जरुरत

4.1.2 छायावाद की सांस्कृतिक चेतना

4.1.3 निराला के काव्य में जन-जागरण और राष्ट्रीयता का स्वर

4.1.4 उत्तर आधुनिकता की स्थापनाएँ और सीमाएँ

4.1.5 दहशत की विभीषिका से जूझता कश्मीरी जन-जीवन

4.1.6 कविता उल्लंघन की सतत प्रक्रिया है

4.1.7 धरती का गुरुत्वाकर्षण और कवि का शहर

4.1.8 सभ्यता के छद्म को भेदती कथा-दृष्टि

4.1.9 कारोबारी विकास और विकास का कारोबार

4.1.10 भय और क्रूरता की सांस्कृतिक ठेकेदारी का समकाल

4.1.11 सूरदास के भ्रमरगीत के प्रगतिशील आयाम

4.1.12 कथा के नए आनुभूतिक प्रस्थान

4.1.13 कथा-दृष्टि का बहु आयामी धरातल

4.1.14 स्त्री दृष्टि वस्तुत: मनुष्यता की दृष्टि है

4.1.15 दृष्टिबोध का उर्वर धरातल

4.2 अन्य प्रकाशित/सम्पादित साहित्य

4.2.1 साहित्यशास्त्र और हिन्दी आलोचना (प्रकाशित पुस्तक)

4.2.2 भक्ति कविता का लोक-आलोक (प्रकाशित पुस्तक)

4.2.3 भूमंडलीय और तकनीकी समय में हिन्दी (सम्पादित पुस्तक)

4.2.4 माटी (सम्पादित पत्रिका)

4.2.5 लमही (सम्पादित पत्रिका)

4.2.6 समीचीन (सम्पादित पत्रिका)

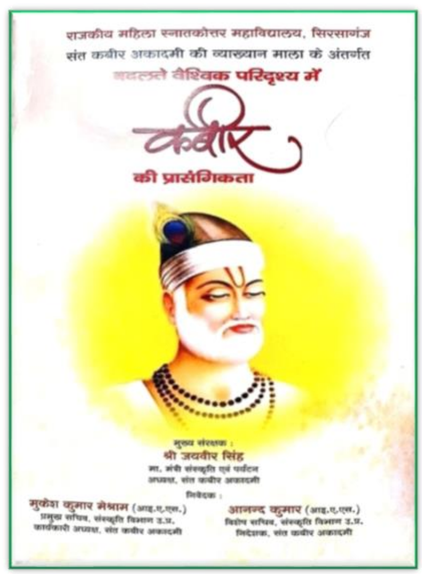
4.2.7 अन्य लेखन

चतुर्थ अध्याय
साहित्य सर्जना

डॉ० शशिभूषण मिश्र जी निरन्तर लेखन कार्य में लीन रहे तथा लेखन कार्य समाज से संस्कृति आन्दोलन तथा शुद्ध हिन्दी लेखन से आलोचना तक की उनकी यात्रा एक समर्पित मनीषी की कालजयी यात्रा रही है। इन्होंने आलोचना के क्षेत्र में अपना विशेष योगदान दिया है। इन्होंने अनेक आलोचनात्मक लेख लिखे, पुस्तकें प्रकाशित कीं तथा प्रतिष्ठित पुस्तकों एवं पत्रिकाओं का सम्पादन करके सचमुच हिन्दी वाङ्मय की स्वाभिमानी तथा गौरवमयी वृत्ति की वृद्धि की है। जिनका विवरण निम्नलिखित है-

4.1 प्रकाशित लेख

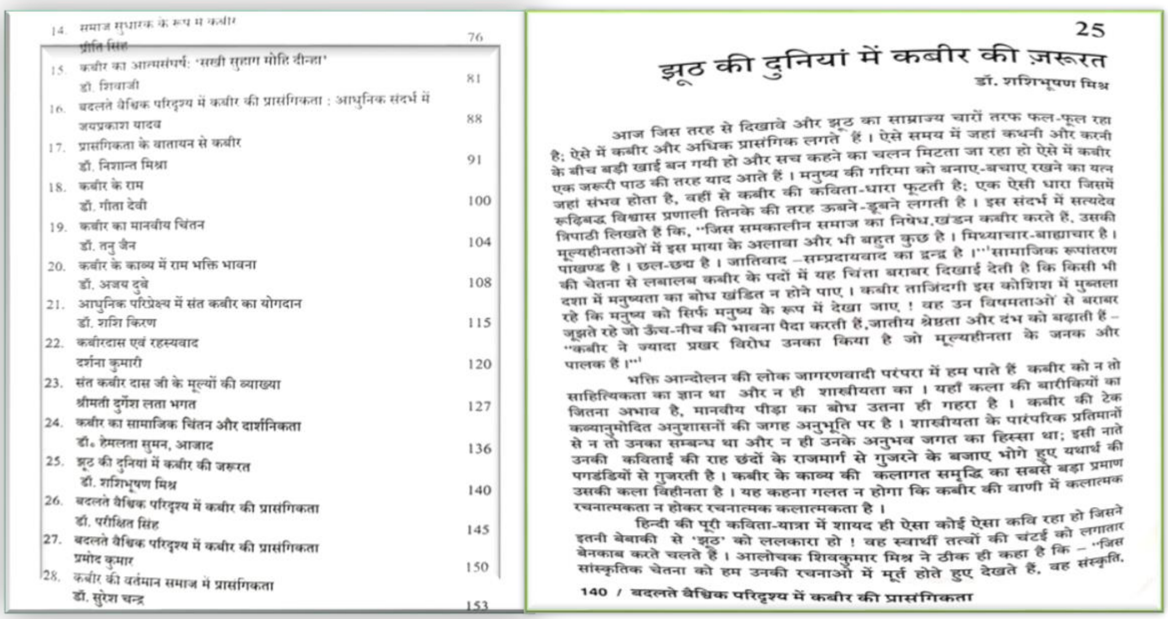
4.1.1 झूंठ की दुनिया में कबीर की जरुरत



डॉ० शशिभूषण मिश्र के इस लेख में वर्त्तमान समय में कबीर की जरुरत पर प्रकाश डाला गया है। इस आलोचनात्मक लेख में डॉ० शशिभूषण मिश्र कहते हैं कि आज जिस तरह से दिखावे और झूंठ का साम्राज्य चारों तरफ फल-फूल रहा है; ऐसे में कबीर और अधिक प्रासंगिक लगते हैं। ऐसे समय में जहाँ कथनी और करनी के बीच बड़ी खाई बन गयी हो और सच कहने का चलन मिटता जा रहा हो ऐसे में कबीर एक जरूरी पाठ की तरह याद आते हैं। मनुष्य की गरिमा को बनाए-बचाए रखने का यत्न जहाँ सम्भव होता है, वहीं से कबीर की कविता-धारा फूटती है; एक ऐसी धारा जिसमें रूढ़िबद्ध विश्वास प्रणाली तिनके की तरह ऊबने-डूबने लगती है। इस सन्दर्भ में सत्यदेव त्रिपाठी लिखते हैं कि, "जिस समकालीन समाज का निषेध, खण्डन कबीर करते हैं, उसकी मूल्यहीनताओं में इस माया के अलावा और भी बहुत कुछ है। मिथ्याचार बाह्याचार है, पाखण्ड है, छल-छद्म है, जातिवाद-सम्प्रदायवाद का द्वन्द्व है।" सामाजिक रूपांतरण की चेतना से लबालब कबीर के पदों में यह चिंता बराबर दिखाई देती है कि किसी भी दशा में मनुष्यता का बोध खंडित न होने पाए।

कबीर ताजिंदगी इस कोशिश में मुब्तला रहे कि मनुष्य को सिर्फ मनुष्य के रूप में देखा जाए! वह उन विषमताओं से बराबर जूझते रहे जो ऊँच-नीच की भावना पैदा करती हैं, जातीय श्रेष्ठता और दंभ को बढ़ाती हैं- "कबीर ने ज्यादा प्रखर विरोध उनका किया है जो मूल्यहीनता के जनक और पालक हैं।"

निष्कर्ष रूप में कहा जा सकता है कि इक्कीसवीं सदी में हमें कबीर की 'समरस और सहिष्णु दृष्टि' की बहुत जरूरत है; जिसके बल पर न सिर्फ साम्प्रदायिक शक्तियों को पराजित किया जा सकता है बल्कि पूरी मानव जाति को विखंडन और हिंसा से बचाया जा सकता है। अगर हमें एक अहिंसक दुनिया बनानी है तो कबीर के बताए रास्ते पर चलना होगा। दुनिया को बेहतर बनाने के किसी भी प्रयास में कबीर की जरूरत अनिवार्यतः रहेगी।



25

झूठ की दुनियां में कबीर की ज़रूरत

डॉ. शशिभूषण मिश्र

आज जिस तरह से दिखावे और झूठ का साम्राज्य चारों तरफ फल-फूल रहा है; ऐसे में कबीर और अधिक प्रासंगिक लगते हैं। ऐसे समय में जहां कथनी और करनी के बीच बड़ी खाई बन गयी हो और सच कहने का चलन मिटता जा रहा हो ऐसे में कबीर एक जरूरी पाठ की तरह याद आते हैं। मनुष्य की गरिमा को बनाए-बचाए रखने का यत्न जहां संभव होता है, वहीं से कबीर की कविता-धारा फूटती है; एक ऐसी धारा जिसमें रूढ़िबद्ध विश्वास प्रणाली तिनके की तरह ऊबने-डूबने लगती है। इस संदर्भ में सत्यदेव त्रिपाठी लिखते हैं कि, "जिस समकालीन समाज का निषेध,खंडन कबीर करते हैं, उसकी मूल्यहीनताओं में इस माया के अलावा और भी बहुत कुछ है। मिथ्याचार-बाह्याचार है। पाखण्ड है। छल-छद्म है। जातिवाद –सम्प्रदायवाद का द्वन्द्व है।"[1] सामाजिक रूपांतरण की चेतना से लबालब कबीर के पदों में यह चिंता बराबर दिखाई देती है कि किसी भी दशा में मनुष्यता का बोध खंडित न होने पाए। कबीर ताजिंदगी इस कोशिश में मुब्तला रहे कि मनुष्य को सिर्फ मनुष्य के रूप में देखा जाए ! वह उन विषमताओं से बराबर जूझते रहे जो ऊँच-नीच की भावना पैदा करती हैं,जातीय श्रेष्ठता और दंभ को बढ़ाती हैं – "कबीर ने ज्यादा प्रखर विरोध उनका किया है जो मूल्यहीनता के जनक और पालक हैं।"[1]

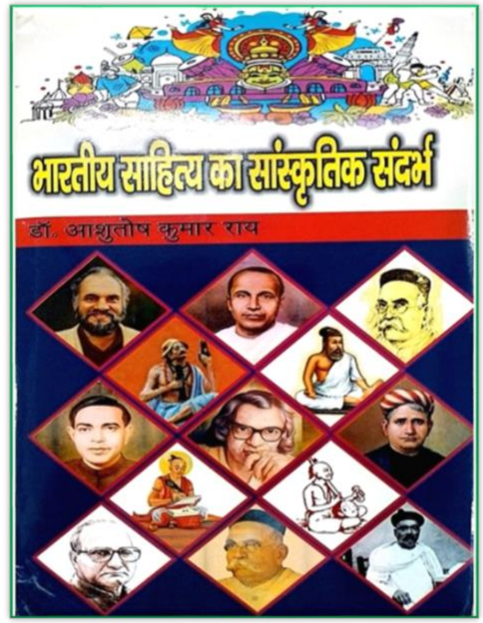
भक्ति आन्दोलन की लोक जागरणवादी परंपरा में हम पाते हैं कबीर को न तो साहित्यिकता का ज्ञान था और न ही शास्त्रीयता का। यहाँ कला की बारीकियों का जितना अभाव है, मानवीय पीड़ा का बोध उतना ही गहरा है। कबीर की टेक कल्यानुमोदित अनुशासनों की जगह अनुभूति पर है। शास्त्रीयता के पारंपरिक प्रतिमानों से न तो उनका सम्बन्ध था और न ही उनके अनुभव जगत का हिस्सा था; इसी नाते उनकी कविताई की राह छंदों के राजमार्ग से गुजरने के बजाए भोगे हुए यथार्थ की पगडंडियों से गुजरती है। कबीर के काव्य की कलागत समृद्धि का सबसे बड़ा प्रमाण उसकी कला विहीनता है। यह कहना गलत न होगा कि कबीर की वाणी में कलात्मक रचनात्मकता न होकर रचनात्मक कलात्मकता है।

हिन्दी की पूरी कविता-यात्रा में शायद ही ऐसा कोई ऐसा कवि रहा हो जिसने इतनी बेबाकी से 'झूठ' को ललकारा हो ! वह स्वार्थी तत्वों की चटई को लगातार बेनकाब करते चलते हैं। आलोचक शिवकुमार मिश्र ने ठीक ही कहा है कि – "जिस सांस्कृतिक चेतना को हम उनकी रचनाओं में मूर्त होते हुए देखते हैं, वह संस्कृति,

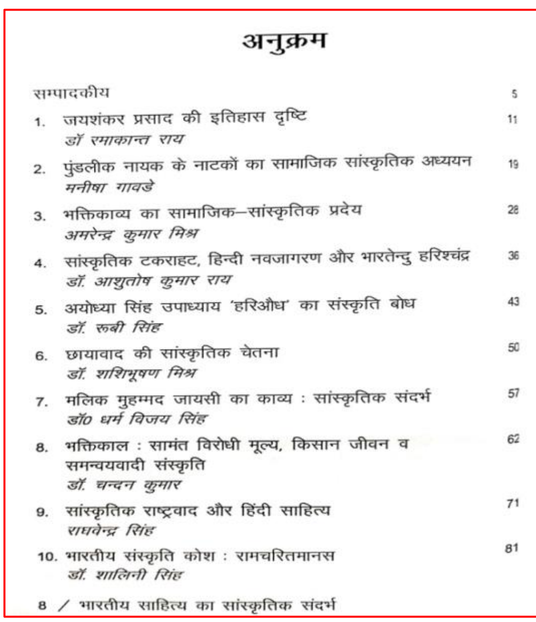
140 / बदलते वैश्विक परिदृश्य में कबीर की प्रासंगिकता

4.1.2 छायावाद की सांस्कृतिक चेतना

इस आलोचनात्मक लेख में छायावाद की सांस्कृतिक चेतना पर प्रकाश डालते हुए डॉ० शशिभूषण मिश्र कहते हैं कि छायावाद हिन्दी कविता की सांस्कृतिक चेतना का संवाहक रहा है। यह हमारी सामाजिक

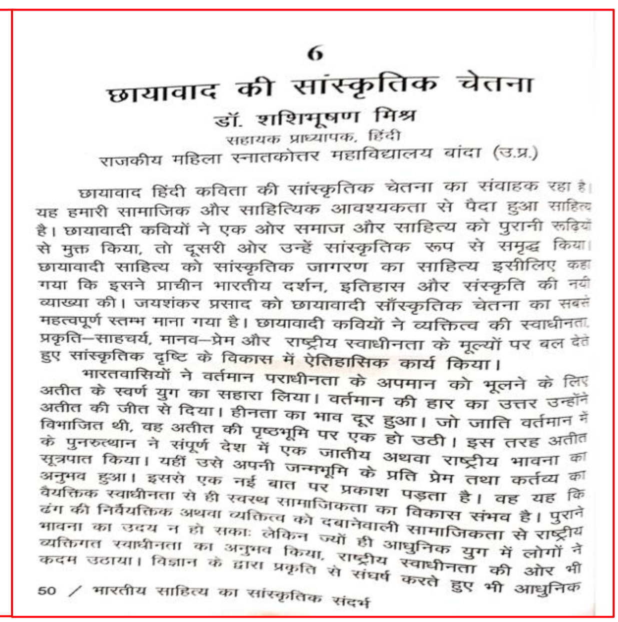


और साहित्यिक आवश्यकता से पैदा हुआ साहित्य है। छायावादी कवियों ने एक ओर समाज और साहित्य को पुरानी रूढ़ियों से मुक्त किया, तो दूसरी ओर उन्हें सांस्कृतिक रूप से समृद्ध किया। छायावादी साहित्य को सांस्कृतिक जागरण का साहित्य इसीलिए कहा गया कि इसने प्राचीन भारतीय दर्शन, इतिहास और संस्कृति की नई व्याख्या की। जयशंकर प्रसाद को छायावादी साँस्कृतिक चेतना का सबसे महत्वपूर्ण स्तम्भ माना गया है। छायावादी कवियों ने व्यक्तित्व की स्वाधीनता, प्रकृति-साहचर्य, मानव-प्रेम और राष्ट्रीय स्वाधीनता के मूल्यों पर बल देते हुए सांस्कृतिक दृष्टि के विकास में ऐतिहासिक कार्य किया।



अनुक्रम

8 / भारतीय साहित्य का सांस्कृतिक संदर्भ



6

छायावाद की सांस्कृतिक चेतना

डॉ. शशिभूषण मिश्र
सहायक प्राध्यापक, हिंदी
राजकीय महिला स्नातकोत्तर महाविद्यालय बांदा (उ.प्र.)

छायावाद हिंदी कविता की सांस्कृतिक चेतना का संवाहक रहा है। यह हमारी सामाजिक और साहित्यिक आवश्यकता से पैदा हुआ साहित्य है। छायावादी कवियों ने एक ओर समाज और साहित्य को पुरानी रूढ़ियों से मुक्त किया, तो दूसरी ओर उन्हें सांस्कृतिक रूप से समृद्ध किया। छायावादी साहित्य को सांस्कृतिक जागरण का साहित्य इसीलिए कहा गया कि इसने प्राचीन भारतीय दर्शन, इतिहास और संस्कृति की नयी व्याख्या की। जयशंकर प्रसाद को छायावादी साँस्कृतिक चेतना का सबसे महत्वपूर्ण स्तम्भ माना गया है। छायावादी कवियों ने व्यक्तित्व की स्वाधीनता, प्रकृति–साहचर्य, मानव–प्रेम और राष्ट्रीय स्वाधीनता के मूल्यों पर बल देते हुए सांस्कृतिक दृष्टि के विकास में ऐतिहासिक कार्य किया।

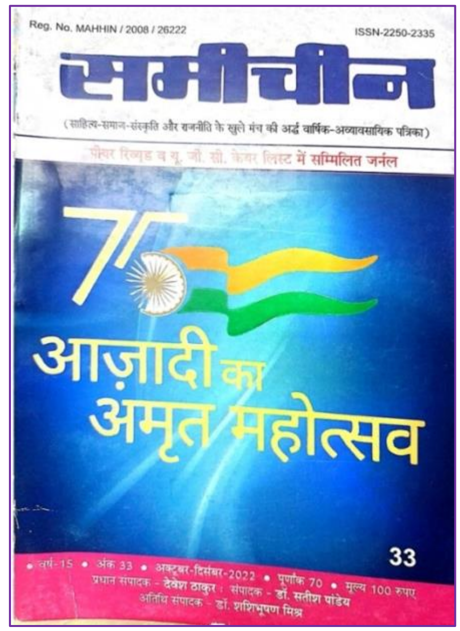
भारतवासियों ने वर्तमान पराधीनता के अपमान को भूलने के लिए अतीत के स्वर्ण युग का सहारा लिया। वर्तमान की हार का उत्तर उन्होंने अतीत की जीत से दिया। हीनता का भाव दूर हुआ। जो जाति वर्तमान में विभाजित थी, वह अतीत की पृष्ठभूमि पर एक हो उठी। इस तरह अतीत के पुनरुत्थान ने संपूर्ण देश में एक जातीय अथवा राष्ट्रीय भावना का सूत्रपात किया। यहीं उसे अपनी जन्मभूमि के प्रति प्रेम तथा कर्तव्य का अनुभव हुआ। इससे एक नई बात पर प्रकाश पड़ता है। वह यह कि वैयक्तिक स्वाधीनता से ही स्वस्थ सामाजिकता का विकास संभव है। पुराने ढंग की निर्वैयक्तिक अथवा व्यक्तित्व को दबानेवाली सामाजिकता से राष्ट्रीय भावना का उदय न हो सका: लेकिन ज्यों ही आधुनिक युग में लोगों ने व्यक्तिगत स्वाधीनता का अनुभव किया, राष्ट्रीय स्वाधीनता की ओर भी कदम उठाया। विज्ञान के द्वारा प्रकृति से संघर्ष करते हुए भी आधुनिक

50 / भारतीय साहित्य का सांस्कृतिक संदर्भ

भारतवासियों ने वर्तमान पराधीनता के अपमान को भूलने के लिए अतीत के स्वर्ण युग का सहारा लिया। वर्तमान की हार का उत्तर उन्होंने अतीत की जीत से दिया। हीनता का भाव दूर हुआ। जो जाति वर्तमान में विभाजित थी, वह अतीत की पृष्ठभूमि पर एक हो उठी। इस तरह अतीत ने सम्पूर्ण देश में एक जातीय अथवा राष्ट्रीय भावना का सूत्रपात किया। यहीं उसे अपनी जन्मभूमि के प्रति प्रेम तथा कर्तव्य का अनुभव हुआ। इससे

एक नई बात पर प्रकाश पड़ता है। वह यह कि वैयक्तिक स्वाधीनता से ही स्वस्थ सामाजिकता का विकास सम्भव है। पुराने ढंग की निर्वैयक्तिक अथवा व्यक्तित्व को दबाने वाली सामाजिकता से राष्ट्रीय भावना का उदय न हो सका लेकिन ज्यों ही आधुनिक युग में लोगों ने व्यक्तिगत स्वाधीनता का अनुभव किया, राष्ट्रीय स्वाधीनता की ओर भी कदम उठाया। विज्ञान के द्वारा प्रकृति से संघर्ष करते हुए भी आधुनिक मानव ने उससे प्रेम किया।

4.1.3 निराला के काव्य में जन-जागरण और राष्ट्रीयता का स्वर

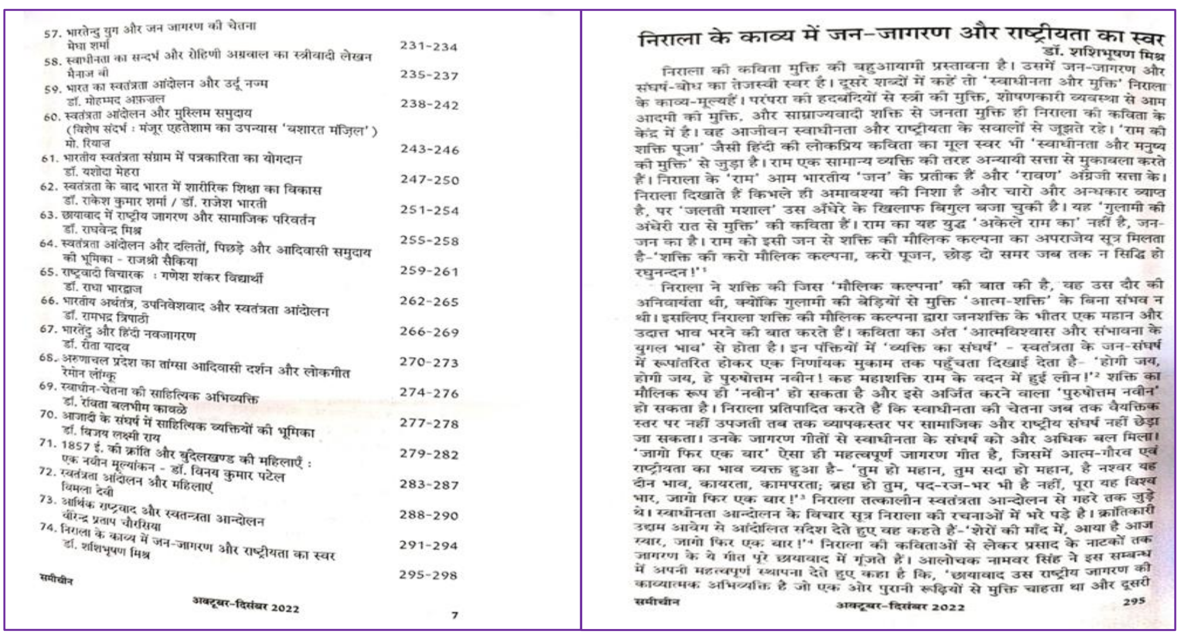


डॉ० शशिभूषण मिश्र के इस लेख में निराला जी के काव्य में जन-जागरण और राष्ट्रीयता के बारे में कहा गया है कि निराला की कविता मुक्ति की बहुआयामी प्रस्तावना है, उसमें जन-जागरण और संघर्ष-बोध का तेजस्वी स्वर है। दूसरे शब्दों में कहें तो 'स्वाधीनता और मुक्ति' निराला के काव्य-मूल्य हैं। परम्परा की हदबंदियों से स्त्री की मुक्ति, शोषणकारी व्यवस्था से आम आदमी की मुक्ति, और साम्राज्यवादी शक्ति से जनता की मुक्ति ही निराला की कविता के केन्द्र में है। वह आजीवन स्वाधीनता और राष्ट्रीयता के सवालों से जूझते रहे। 'राम की शक्ति पूजा' जैसी हिन्दी की लोकप्रिय कविता का मूल स्वर भी 'स्वाधीनता और मनुष्य की मुक्ति' से जुड़ा है। राम एक सामान्य व्यक्ति की तरह अन्यायी सत्ता से मुक़ाबला करते हैं। निराला के 'राम' आम भारतीय 'जन' के प्रतीक हैं और 'रावण' अंग्रेजी सत्ता के। निराला दिखाते हैं कि भले ही अमावस्या की निशा है और चारो और अन्धकार व्याप्त है, पर 'जलती मशाल' उस अँधेरे के खिलाफ बिगुल बजा चुकी है। यह 'गुलामी की अंधेरी रात से मुक्ति' की कविता हैं । राम का यह युद्ध 'अकेले राम का' नहीं है, जन-जन का है। राम को इसी जन से शक्ति की मौलिक कल्पना का अपराजेय सूत्र मिलता है- "शक्ति की करो मौलिक कल्पना, करो पूजन, छोड़ दो समर जब तक न सिद्धि हो रघुनन्दन!"

निराला ने शक्ति की जिस 'मौलिक कल्पना' की बात की है, वह उस दौर की अनिवार्यता थी, क्योंकि गुलामी की बेड़ियों से मुक्ति 'आत्म-शक्ति' के बिना सम्भव न थी। इसलिए निराला शक्ति की मौलिक कल्पना

द्वारा जनशक्ति के भीतर एक महान और उदात्त भाव भरने की बात करते हैं। कविता का अंत 'आत्मविश्वास और संभावना के युगल भाव' से होता है। निराला देश-काल का अतिक्रमण करते हुए पूरे जग को अन्धकार मुक्त करने की अभिलाषा व्यक्त करते हैं। उनकी राष्ट्रीयता की भावना सम्पूर्ण मानवता को अपने विस्तार में ले कर आगे बढ़ती है। निराला के सन्दर्भ में यह बात बराबर ध्यान रखने की है कि उनका स्वाधीनता का सन्दर्भ जितना राजनीतिक है उससे कहीं अधिक सामाजिक और सांस्कृतिक है।

निराला की स्वाधीनता सम्बन्धी धारणा बहुआयामी और बहुरूपात्मक है। मुक्ति उनका युगधर्म है, जिसे वह रचनाधर्म में रूपान्तरित करते हैं। उन्हें यह अहसास बहुत गहरे तक था कि बाहरी लड़ाई से पहले भीतरी लड़ाई छेड़नी होगी और इसके बगैर मुक्ति की बात बेमानी होगी। स्वयं का साक्षात्कार किए बिना न तो ताकतवर अंग्रेजी सत्ता को हराया जा सकता था और न ही सामाजिक विषमता और अन्याय को मिटाया जा सकता है। निराला की क्रांतिधर्मी कविताओं में 'बादलराग' का विशेष महत्व है । छायावाद में निराला के यहाँ प्रकृति के तमाम रूपों में बादल सबसे अधिक बार आए हैं। कभी ये बादल घनघोर गर्जना करते हैं तो कभी अमर राग गाते हैं।



निराला के काव्य में जन-जागरण और राष्ट्रीयता का स्वर

डॉ. शशिभूषण मिश्र

निराला की कविता मुक्ति की बहुआयामी प्रस्तावना है। उसमें जन-जागरण और संघर्ष-बोध का तेजस्वी स्वर है। दूसरे शब्दों में कहें तो 'स्वाधीनता और मुक्ति' निराला के काव्य-मूल्यहैं। परंपरा की हदबंदियों से स्त्री की मुक्ति, शोषणकारी व्यवस्था से आम आदमी की मुक्ति, और साम्राज्यवादी शक्ति से जनता मुक्ति ही निराला की कविता के केंद्र में है। वह आजीवन स्वाधीनता और राष्ट्रीयता के सवालों से जूझते रहे। 'राम की शक्ति पूजा' जैसी हिंदी की लोकप्रिय कविता का मूल स्वर भी 'स्वाधीनता और मनुष्य की मुक्ति' से जुड़ा है। राम एक सामान्य व्यक्ति की तरह अन्यायी सत्ता से मुकाबला करते हैं। निराला के 'राम' आम भारतीय 'जन' के प्रतीक हैं और 'रावण' अंग्रेजी सत्ता के। निराला दिखाते हैं किभले ही अमावश्या की निशा है और चारो ओर अन्धकार व्याप्त है, पर 'जलती मशाल' उस अँधेरे के खिलाफ बिगुल बजा चुकी है। यह 'गुलामी की अंधेरी रात से मुक्ति' की कविता हैं। राम का यह युद्ध 'अकेले राम का' नहीं है, जन-जन का है। राम को इसी जन से शक्ति की मौलिक कल्पना का अपराजेय सूत्र मिलता है-'शक्ति की करो मौलिक कल्पना, करो पूजन, छोड़ दो समर जब तक न सिद्धि हो रघुनन्दन!'[1]

निराला ने शक्ति की जिस 'मौलिक कल्पना' की बात की है, वह उस दौर की अनिवार्यता थी, क्योंकि गुलामी की बेड़ियों से मुक्ति 'आत्म-शक्ति' के बिना संभव न थी। इसलिए निराला शक्ति की मौलिक कल्पना द्वारा जनशक्ति के भीतर एक महान और उदात्त भाव भरने की बात करते हैं। कविता का अंत 'आत्मविश्वास और संभावना के युगल भाव' से होता है। इन पंक्तियों में 'व्यक्ति का संघर्ष' - स्वतंत्रता के जन-संघर्ष में रूपांतरित होकर एक निर्णायक मुकाम तक पहुँचता दिखाई देता है- 'होगी जय, होगी जय, हे पुरुषोत्तम नवीन! कह महाशक्ति राम के वदन में हुई लीन!'[2] शक्ति का मौलिक रूप ही 'नवीन' हो सकता है और इसे अर्जित करने वाला 'पुरुषोत्तम नवीन' हो सकता है। निराला प्रतिपादित करते हैं कि स्वाधीनता की चेतना जब तक वैयक्तिक स्तर पर नहीं उपजती तब तक व्यापकस्तर पर सामाजिक और राष्ट्रीय संघर्ष नहीं छेड़ा जा सकता। उनके जागरण गीतों से स्वाधीनता के संघर्ष को और अधिक बल मिला। 'जागो फिर एक बार' ऐसा ही महत्वपूर्ण जागरण गीत है, जिसमें आत्म-गौरव एवं राष्ट्रीयता का भाव व्यक्त हुआ है- 'तुम हो महान, तुम सदा हो महान, है नश्वर यह दीन भाव, कायरता, कामपरता; ब्रह्म हो तुम, पद-रज-भर भी है नहीं, पूरा यह विश्व भार, जागो फिर एक बार!'[3] निराला तत्कालीन स्वतंत्रता आन्दोलन से गहरे तक जुड़े थे। स्वाधीनता आन्दोलन के विचार सूत्र निराला की रचनाओं में भरे पड़े है। क्रांतिकारी उद्दाम आवेग से आंदोलित संदेश देते हुए वह कहते हैं-'शेरों की माँद में, आया है आज स्यार, जागो फिर एक बार!'[4] निराला की कविताओं से लेकर प्रसाद के नाटकों तक जागरण के ये गीत पूरे छायावाद में गूंजते हैं। आलोचक नामवर सिंह ने इस सम्बन्ध में अपनी महत्वपूर्ण स्थापना देते हुए कहा है कि, 'छायावाद उस राष्ट्रीय जागरण की काव्यात्मक अभिव्यक्ति है जो एक ओर पुरानी रूढ़ियों से मुक्ति चाहता था और दूसरी

4.1.4 उत्तर आधुनिकता की स्थापनाएँ और सीमाएँ



डॉ० शशिभूषण मिश्र के इस लेख में उत्तर आधुनिकता की स्थापनाओं और सीमाओं के विषय में कहा गया है कि किसी भी शब्द के साथ जब 'उत्तर' शब्द का प्रयोग होता है तो सामान्यतः इसके दो अर्थ निकाले जाते हैं- पहला यह कि पूर्व स्थिति नहीं रह गई है और नई स्थिति उभरकर सामने आई है, दूसरा अर्थ ये कि यह पूर्व स्थिति का अगला चरण या विस्तार है। 'उत्तर आधुनिकता' के सम्बन्ध में अधिकांश चिन्तक एवं समीक्षक पहले वाले अर्थ को अधिक महत्व देते हैं। यह आधुनिक विचारधाराओं की भाँति कोई एक सर्वसमावेशी

उत्तर आधुनिकता की स्थापनाएँ और सीमाएँ

– डॉ. शशिभूषण मिश्र

किसी भी शब्द के साथ जब 'उत्तर' शब्द का प्रयोग होता है तो सामान्यतः इसके दो अर्थ निकाले जाते हैं - पहला यह कि पूर्व स्थिति नहीं रह गयी है और नयी स्थिति उभरकर सामने आई है, दूसरा अर्थ ये कि यह पूर्व स्थिति का अगला चरण या विस्तार है। 'उत्तर आधुनिकता' के सम्बन्ध में अधिकांश चिन्तक एवं समीक्षक पहले वाले अर्थ को अधिक महत्व देते हैं। यह आधुनिक विचारधाराओं की भांति कोई एक सर्वसमावेशी अवधारणा प्रस्तुत नहीं करती , यह तो विचारधाराओं के ही अंत की घोषणा करती है। दरअसल उत्तर आधुनिकता मानव जीवन के किसी पक्ष को एक दूसरे की तुलना में निम्न या उच्च नहीं मानती है और जीवन के विविध पक्षों में कोई असंगति भी नहीं देखती। आधुनिकता ने जीवन की समग्रता के जिस विचार को जन्म दिया था उत्तर आधुनिकता उस समग्रता को ही नकारती है। उत्तर आधुनिकता जब किसी विचारधारा को और अवधारणा को स्वीकृति ही नहीं देती तब ऐसी परिस्थिति में उसे किसी परिभाषा विशेष में व्यक्त नहीं किया जा सकता। डॉ. गोपीचंद नारंग लिखते हैं कि, 'इस चेतावनी की बहरहाल आवश्यकता है कि उत्तर आधुनिकता स्वरूप की दृष्टि से विद्रोहपरक , स्वतंत्र एवं विश्लेषणात्मक है, इसलिए उत्तर आधुनिकता की कोई परिभाषा नहीं की जा सकती। उसका कोई भी माडल स्वयं उसकी आत्मा के विरुद्ध है।'[1]

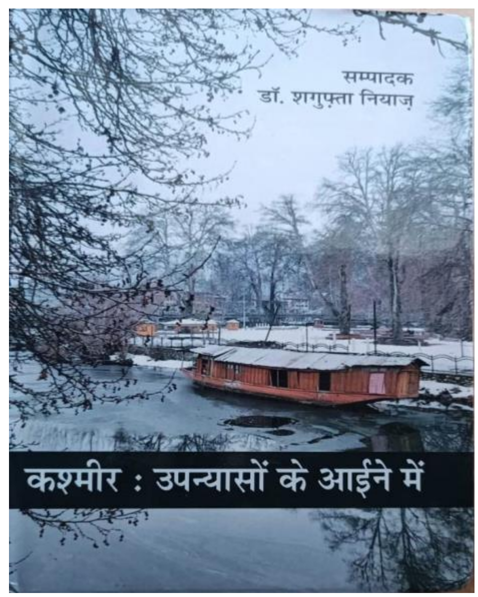
उत्तर आधुनिकता, आधुनिकता की प्रतिस्थिति है। यह इतिहास, दर्शन और विचारधारा में ही अविश्वास प्रकट नहीं करती, बल्कि अभिजात कला और साहित्य का भी निषेध करती है। इस तरह उसका विश्वास न तो व्यक्ति की पूर्णता में है, न अपूर्णता में। वह पूंजीवाद को वृद्ध पूंजीवाद घोषित करती है और उपनिवेशवादी पूंजीवादी ढर्रे के विरुद्ध तकनीक को महत्व देती है। वस्तु-उत्पादन से आगे विक्रय से भी अधिक महत्व 'उपभोक्ता' को देती है। उत्तर आधुनिकता की उद्घोषणा है कि मनुष्य ने प्रकृति के विरुद्ध अपने ज्ञान के बल पर जिस सभ्यता और संस्कृति को खड़ा किया है वे मान्य नहीं हो सकते। उत्तर आधुनिकता के सम्बन्ध में डॉ. बैजनाथ सिंघल लिखते हैं -'उत्तर आधुनिकता, आधुनिकता का ही एक प्रकार से अगला चरण भी है, विरोध भी है और उसे पुनः लिखने का एक नया प्रयास भी है।'[2] इसने महावृतान्तों को अमान्य घोषित करते हुए समाज से लेकर संस्कृति तक की तमाम मान्यताओं को एक सिरे से खारिज कर दिया। उत्तर आधुनिकता पर विचार करने से पहले आधुनिकता की संकल्पना व इसके संबंधों पर विचार करना जरूरी हो जाता है। इससे पहले कि हम उत्तर आधुनिकता के मुख्य आयामों का विश्लेषण करें, हमें उत्तर आधुनिकता से जुड़े चिंतन की पृष्ठभूमि में निर्णायक भूमिका अदा करने वाली परिस्थितियों और परिवेश का आकलन करन होगा। उत्तर आधुनिकता से सम्बद्ध विचारों का उदय अठाहरवीं सदी के मध्य से ही होने लगा था, लेकिन बीसवीं सदी में दो विश्वयुद्धों ने विचारकों को इस दिशा में और अधिक प्रेरित किया। इसके विकास में जिन महत्वपूर्ण विचारकों का योगदान रहा है उनमें दर्शन के क्षेत्र में जैक्स देरिदा, ज्यां फ्रांस्वा ल्योतार, इतिहास के क्षेत्र में मिशेल फूको, हेडेन व्हाइट,

अवधारणा प्रस्तुत नहीं करती, यह तो विचारधाराओं के ही अंत की घोषणा करती है। दरअसल उत्तर आधुनिकता मानव जीवन के किसी पक्ष को एक दूसरे की तुलना में निम्न या उच्च नहीं मानती है और जीवन के विविध पक्षों में कोई असंगति भी नहीं देखती। आधुनिकता ने जीवन की समग्रता के जिस विचार को जन्म दिया था उत्तर आधुनिकता उस समग्रता को ही नकारती है। उत्तर आधुनिकता जब किसी विचारधारा को और अवधारणा को स्वीकृति ही नहीं देती तब ऐसी परिस्थिति में उसे किसी परिभाषा विशेष में व्यक्त नहीं किया जा

सकता। डॉ० गोपीचन्द्र नारंग लिखते हैं कि, 'इस चेतावनी की बहरहाल आवश्यकता है कि उत्तर आधुनिकता स्वरूप की दृष्टि से विद्रोहपरक, स्वतंत्र एवं विश्लेषणात्मक है, इसलिए उत्तर आधुनिकता की कोई परिभाषा नहीं की जा सकती। उसका कोई भी मॉडल स्वयं उसकी आत्मा के विरुद्ध है।'

निष्कर्ष रूप में कहा जा सकता है कि उत्तर आधुनिकता एक वैश्विक परिघटना है जिससे बचकर निकल पाना सम्भव नहीं है। भूमंडलीकरण की प्रक्रिया ने इसे हमारे लिए एक अनिवार्य जरूरत के रूप में प्रस्तुत किया है। समकालीन भारतीय समाज में उत्तर आधुनिक प्रवृत्तियाँ बड़ी तेजी से अपनी स्थिति को सुदृढ़ बना रही हैं। यह हमारे समय का एक ऐसा सच है जिसके बाहर हम किसी मानव समाज की कल्पना नहीं कर सकते।

4.1.5 दहशत की विभीषिका से जूझता कश्मीरी जन जीवन



डॉ० शशिभूषण मिश्र के इस आलोचनात्मक लेख में दहशत, उथल-पुथल एवं विभीषिका से भरे कश्मीरी जीवन के विषय में प्रकाश डाला गया है। डॉ० शशिभूषण मिश्र कहते हैं कि हिन्दी की औपन्यासिक लेखन परम्परा में चन्द्रकान्ता एक महत्त्वपूर्ण नाम हैं। उनकी कथा यात्रा का पाट बहुत चौड़ा है जिसमें ऐलान गली ज़िंदा है, अपने-अपने कोणार्क, बदलते हालत में, अर्थान्तर, अंतिम साक्ष्य, वितस्ता बहती है, बाकी सब खैरियत है- जैसी कई कृतियाँ सन्निहित हैं। इन उपन्यासों के अलावा उनकी शताधिक कहानियाँ भी पाठकों के बीच नमूदार हो चुकी हैं। 'कथा सतीसर' ने उनके लेखन को एक बड़ी ऊँचाई दी, इस उपन्यास के बाद चन्द्रकान्ता की लेखकीय पहचान को हिन्दी साहित्यिक समाज में एक व्यापक स्वीकृति मिली। 'कथा सतीसर' उपन्यास में उनकी लेखकीय क्षमता के कई आयाम समाविष्ट हैं। उन्होंने पुराण, परम्परा, संस्कृति, इतिहास और कश्मीरी लोक को आख्यान के रूप में विन्यस्त किया है।

कालजयी रचनाकार की यही खासियत होती है कि वह सृजन की भट्टी में समय और समाज के तमाम सत्यों को फेंटकर ऐसा रसायन तैयार करता है जो कथा होने से बहुत आगे जाकर हमारे समकाल का मानीखेज यथार्थ बन जाता है- 'कथा सतीसर' की यही खासियत है कि वह हमारे समकाल की ज्वलंत समस्याओं को इतिहास और परम्परा के सातत्य में देखने का उपक्रम करते हुए कई मौजू सवाल छोड़ जाता है। कहना होगा चन्द्रकान्ता का यह उपन्यास कश्मीरी जीवन और अवाम के यथार्थ का कालजयी अख्यायान है। जम्मू कश्मीर के जन-जीवन की अर्थ-लय को अपने भीतर समेटे इस उपन्यास को पढ़ना एक मानीखेज हकीकत से गुजरने जैसा है। जैसे हम इसके प्रवाह में गहरे उतरते जाते हैं हमारा सामना ऐसी कई निर्मम सच्चाइयों से होता है जिनमें अन्याय के परत-दर-परत किस्से गुथे हुए हैं।

अनुक्रम

दहशत की विभीषिका से जूझता कश्मीरी जन जीवन

शशिभूषण मिश्र

हिंदी की औपन्यासिक लेखन परंपरा में चंद्रकांता एक महत्त्वपूर्ण नाम हैं। उनकी कथा यात्रा का पाट बहुत चौड़ा है जिसमें ऐलान गली ज़िंदा है, अपने-अपने कोणार्क, बदलते हालत में, अर्थान्तिर, अंतिम साक्ष्य, वितस्ता बहती है, बाकी सब खैरियत है- जैसी कई कृतियाँ सन्निहित हैं। इन उपन्यासों के अलावा उनकी शताधिक कहानियाँ भी पाठकों के बीच नमूदार हो चुकी हैं। 'कथा सतीसर' ने उनके लेखन को एक बड़ी ऊँचाई दी, इस उपन्यास के बाद चंद्रकांता की लेखकीय पहचान को हिन्दी साहित्यिक समाज में एक व्यापक स्वीकृति मिली। 'कथा सतीसर' उपन्यास में उनकी लेखकीय क्षमता के कई आयाम समाविष्ट हैं। उन्होंने पुराण, परंपरा, संस्कृति, इतिहास और कश्मीरी लोक को आख्यान के रूप में विन्यस्त किया है ।

कालजयी रचनाकार की यही खासियत होती है कि वह सृजन की भट्टी में समय और समाज के तमाम सत्यों को फेंटकर ऐसा रसायन तैयार करता है जो कथा होने से बहुत आगे जाकर हमारे समकाल का मानीखेज यथार्थ बन जाता है- 'कथा सतीसर' की यही खासियत है कि वह हमारे समकाल की ज्वलंत समस्याओं को इतिहास और परंपरा के सातत्य में देखने का उपक्रम करते हुए कई मौजू सवाल छोड़ जाता है। कहना होगा चंद्रकांता का यह उपन्यास कश्मीरी जीवन और आवाम के यथार्थ का कालजयी आख्यान है। जम्मू कश्मीर के जन-जीवन की अर्थ-लय को अपने भीतर समेटे इस उपन्यास को पढ़ना एक मानीखेज हकीकत से गुजरने जैसा है। जैसे ही हम इसके प्रवाह में गहरे उतरते जाते हैं हमारा सामना ऐसी कई निर्मम सचाइयों से होता है जिनमें अन्याय के परत-दर-परत किस्से गुँथे हुए हैं।

'कथा सतीसर' जम्मू कश्मीर के 'लथपथ समकाल' की एक ऐसी 'खरी' इबारत है जिसका शब्द-शब्द हमें सोचने के लिए विवश करता है कि कश्मीर के ऐसे 'हालात' के लिए जिम्मेदार कौन है! यह विवशता और व्याकुलता की संलग्न लेखकीय अंतर्यात्रा है जिससे गुजरते हुए हमारा अंतस् भीगता जाता है। शरणार्थी कैम्पों की हताहत ज़िन्दगी की पीड़ा भरी हकीकत को जिस तरल संवेदना के साथ शब्दबद्ध किया गया है उसे पढ़कर यह सवाल बारम्बार मन में घुमड़ता है कि 'आधुनिक राष्ट्र/राज्य में आम आदमी की क्या

4.1.6 कविता उल्लंघन की सतत प्रक्रिया है

डॉ० शशिभूषण मिश्र के इस लेख में राजेश जोशी की कविता उल्लंघन जो राज कमल प्रकाशन, नई दिल्ली से प्रकाशित हुई, पर आलोचनात्मक दृष्टिपात किया गया है।

'इतना अँधेरा तो पहले कभी नहीं था

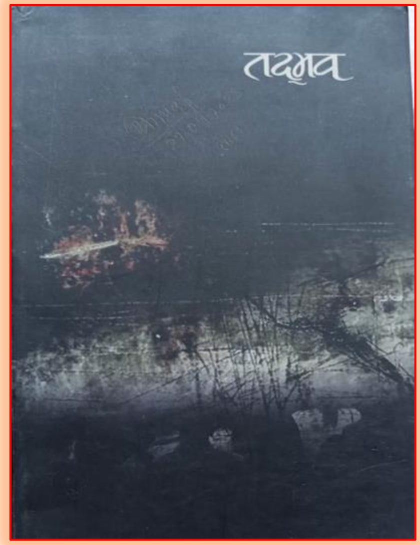
कि मुंह खोलकर अँधेरे को कोई अँधेरा न कह सके

कि हाथ को हाथ भी न सूझे

कि आँख के सामने घटे अपराध की कोई

गवाही न दे सके...'

(राजेश जोशी के अद्यतन कविता संग्रह- 'उल्लंघन' से)

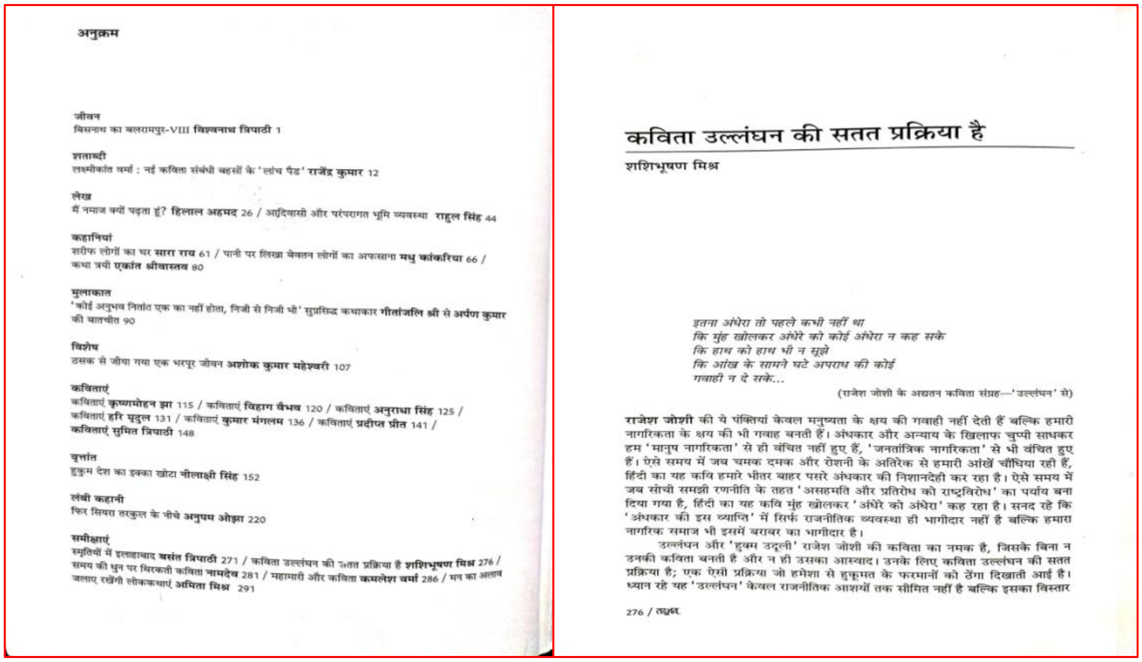


राजेश जोशी की ये पंक्तियाँ केवल मनुष्यता के क्षय की गवाही नहीं देती हैं बल्कि हमारी नागरिकता के क्षय की भी गवाह बनती हैं। अन्धकार और अन्याय के खिलाफ़ चुप्पी साधकर हम मानुष नागरिकता से ही वंचित नहीं हुए हैं; जनतांत्रिक नागरिकता से भी वंचित हुए हैं। ऐसे समय में जब चमक-दमक और रोशनी के अतिरेक से हमारी आँखें चौंधिया रही हैं; हिन्दी का यह कवि हमारे भीतर-बाहर पसरे अन्धकार की निसानदेही कर रहा है। ऐसे समय में जब सोंची-समझी रणनीति के तहत 'असहमति और प्रतिरोध को राष्ट्रविरोध' का पर्याय बना दिया गया है, हिन्दी का यह कवि मुंह खोलकर 'अँधेरे को अँधेरा' कह रहा है। सनद रहे कि 'अन्धकार की इस व्याप्ति' में सिर्फ राजनीतिक-व्यवस्था ही भागीदार नहीं है बल्कि हमारा नागरिक समाज भी इसमें बराबर का भागीदार है।

'उल्लंघन' और 'हुक्म उदूली' राजेश जोशी की कविता का नमक है, जिसके बिना न उनकी कविता बनती है और न ही उसका आस्वाद। उनके लिए कविता उल्लंघन की सतत प्रक्रिया है; एक ऐसी प्रक्रिया जो हमेशा से हुकूमत के फ़रमानों को ठेंगा दिखाती आई है। ध्यान रहे यह उल्लंघन केवल राजनीतिक आशयों तक सीमित नहीं है बल्कि इसका विस्तार परम्परा और समाज के रुढ़िवादी आग्रहों तक है। उनके लिए कविता- 'हमेशा से ही एक हुक्म-उदूली' रही है।

'उल्लंघन' काव्य संग्रह भारतीय जनतंत्र की बिगड़ती दशा का चिंताकुल पाठ है; एक ऐसा पाठ जिसमें हम देख पाते हैं कि झूंठे प्रचार-तंत्र, धनबल और संख्या बल के आगे लोकतंत्र अपनी शक्ति खोता जा रहा है। फासीवादी शक्तियों के 'प्रचार-तंत्र' ने भारतीय लोकतंत्र के उद्देश्यों को डायवर्ट कर दिया है। हम लोकतंत्र के

डायवर्टेड रूट में हैं। भीड़ के सामने हमारी जनतांत्रिकता संकट में है- सिकुड़ते हुए इस जनतंत्र में सिर्फ संदेह बचा है, भरोसा नहीं बचा है।



अनुक्रम

कविता उल्लंघन की सतत प्रक्रिया है

शशिभूषण मिश्र

इतना अंधेरा तो पहले कभी नहीं था
कि मुंह खोलकर अंधेरे को कोई अंधेरा न कह सके
कि हाथ को हाथ भी न सूझे
कि आंख के सामने घटे अपराध की कोई
गवाही न दे सके...

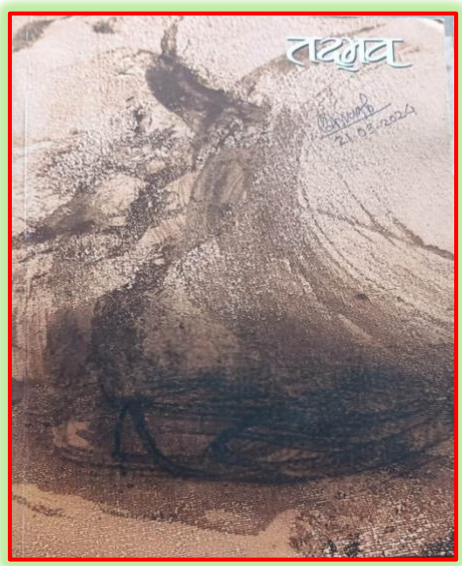
(राजेश जोशी के अद्यतन कविता संग्रह—'उल्लंघन' से)

राजेश जोशी की ये पंक्तियां केवल मनुष्यता के क्षय की गवाही नहीं देती हैं बल्कि हमारी नागरिकता के क्षय की भी गवाह बनती हैं। अंधकार और अन्याय के खिलाफ चुप्पी साधकर हम 'मानुष नागरिकता' से ही वंचित नहीं हुए हैं, 'जनतांत्रिक नागरिकता' से भी वंचित हुए हैं। ऐसे समय में जब चमक दमक और रोशनी के अतिरेक से हमारी आंखें चौंधिया रही हैं, हिंदी का यह कवि हमारे भीतर बाहर पसरे अंधकार की निशानदेही कर रहा है। ऐसे समय में जब सोची समझी रणनीति के तहत 'असहमति और प्रतिरोध को राष्ट्रविरोध' का पर्याय बना दिया गया है, हिंदी का यह कवि मुंह खोलकर 'अंधेरे को अंधेरा' कह रहा है। सनद रहे कि 'अंधकार की इस व्याप्ति' में सिर्फ राजनीतिक व्यवस्था ही भागीदार नहीं है बल्कि हमारा नागरिक समाज भी इसमें बराबर का भागीदार है।

उल्लंघन और 'हुक्म उदूली' राजेश जोशी की कविता का नमक है, जिसके बिना न उनकी कविता बनती है और न ही उसका आस्वाद। उनके लिए कविता उल्लंघन की सतत प्रक्रिया है; एक ऐसी प्रक्रिया जो हमेशा से हुकूमत के फरमानों को ठेंगा दिखाती आई है। ध्यान रहे यह 'उल्लंघन' केवल राजनीतिक आशयों तक सीमित नहीं है बल्कि इसका विस्तार

276 / तद्भव

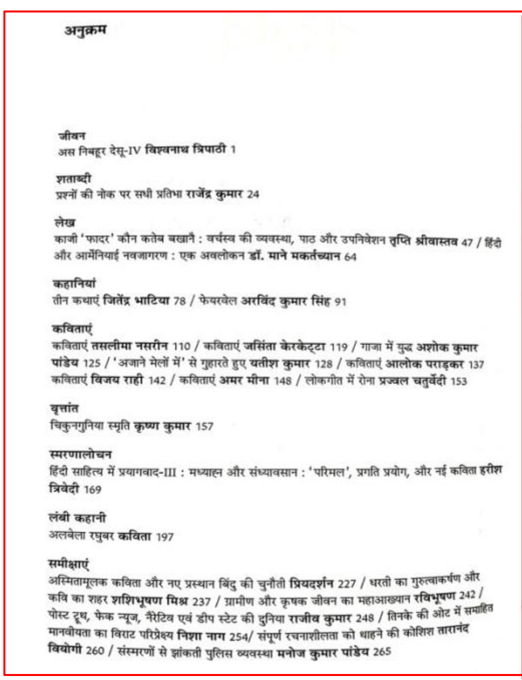
4.1.7 धरती का गुरुत्वाकर्षण और कवि का शहर



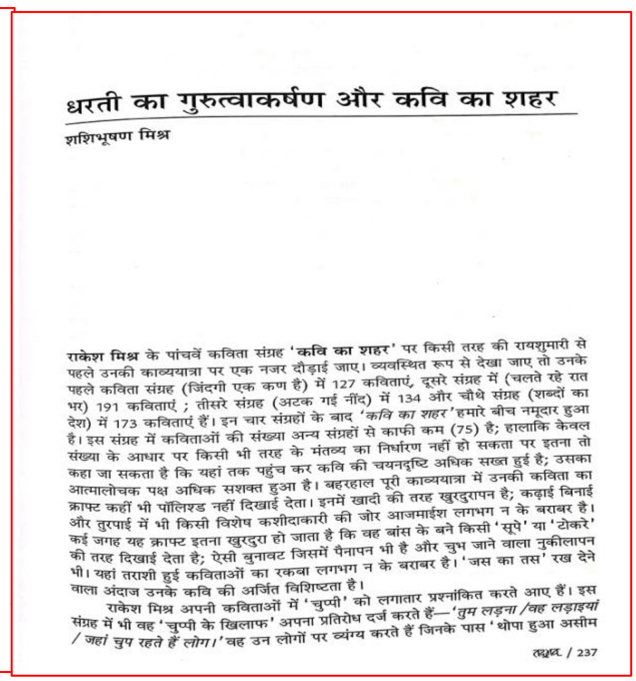
डॉ० शशिभूषण मिश्र के इस लेख में कवि राकेश मिश्र की कविताओं में वर्णित कवि की संवेदना को धरती के गुरुत्वाकर्षण तथा कवि के शहर को बाँदा शहर के रूप में व्यक्त किया गया है। डॉ० शशिभूषण मिश्र *धरती का गुरुत्वाकर्षण और कवि का शहर* लेख में कवि की संवेदनाओं को व्यक्त करते हुए कहते हैं कि राकेश मिश्र के पांचवे कविता संग्रह 'कवि का शहर' पर किसी तरह की रायशुमारी से पहले उनकी काव्य-यात्रा पर नजर दौड़ाई जाए। व्यवस्थित रूप से देखा जाए तो उनके पहले कविता संग्रह (जिन्दगी एक कण है) में 127 कविताएँ; तीसरे संग्रह (अटक गई नींद) में 134 और चौथे संग्रह

(शब्दों का देश) में 173 कविताएँ हैं। इन चार संग्रहों के बाद 'कवि का शहर' नमूदार हुआ है। इस संग्रह में कविताओं की संख्या अन्य संग्रहों से काफी कम (75) है; हालाँकि केवल संख्या के आधार पर किसी भी तरह के मंतव्य का निर्धारण नहीं हो सकता पर इतना तो कहा जा सकता है कि यहाँ तक पहुँच कर कवि की चयनदृष्टि अधिक सख्त हुई है; उसका आत्मालोचक पक्ष अधिक सशक्त हुआ है। बहरहाल पूरी काव्ययात्रा में उनकी कविता का क्राफ्ट कहीं भी पॉलिश्ड नहीं दिखाई देता। इनमें खादी की तरह खुरदुरापन है; कढ़ाई बिनाई और तुरपाई में भी किसी विशेष कशीदाकारी की जोर आजमाईश लगभग न के बराबर है। कई जगह यह क्राफ्ट इतना खुरदुरा हो जाता है कि वह बांस के बने किसी 'सूपे' या 'टोकरे' की तरह दिखाई देता है; ऐसी बुनावट जिसमें पैनापन भी है और चुभ जाने वाला नुकीलापन भी। यहाँ तराशी हुई कविताओं का रकबा लगभग न के बराबर है। 'जस का तस' रख देने वाला अंदाज उनके कवि की अर्जित विशिष्टता है।

राकेश मिश्र अपनी कविताओं में 'चुप्पी' को लगातार प्रश्नांकित करते आए हैं। इस संग्रह में भी वह 'चुप्पी के खिलाफ' अपना प्रतिरोध दर्ज करते हैं- 'तुम लड़ना/वह लड़ाइयाँ/जहाँ चुप रहते हैं लोग।' वह उन लोगों पर व्यंग्य करते हैं जिनके पास 'थोपा हुआ असीम धैर्य' होता है। कवि को भलीभाँति पता है कि 'उम्मीदों के घोषणा-पत्र जेबों में रखने' से कुछ नहीं बदलता। बदलाव के लिए जीवट और संघर्ष की जरूरत होती है; लेकिन हमारे समय की अधिकांश लड़ाइयाँ लोग 'चुप' रह कर ही जीत लेना चाहते हैं।



अनुक्रम



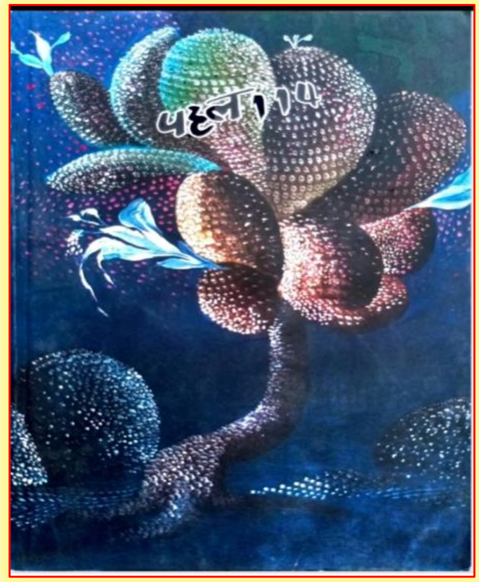
धरती का गुरुत्वाकर्षण और कवि का शहर

शशिभूषण मिश्र

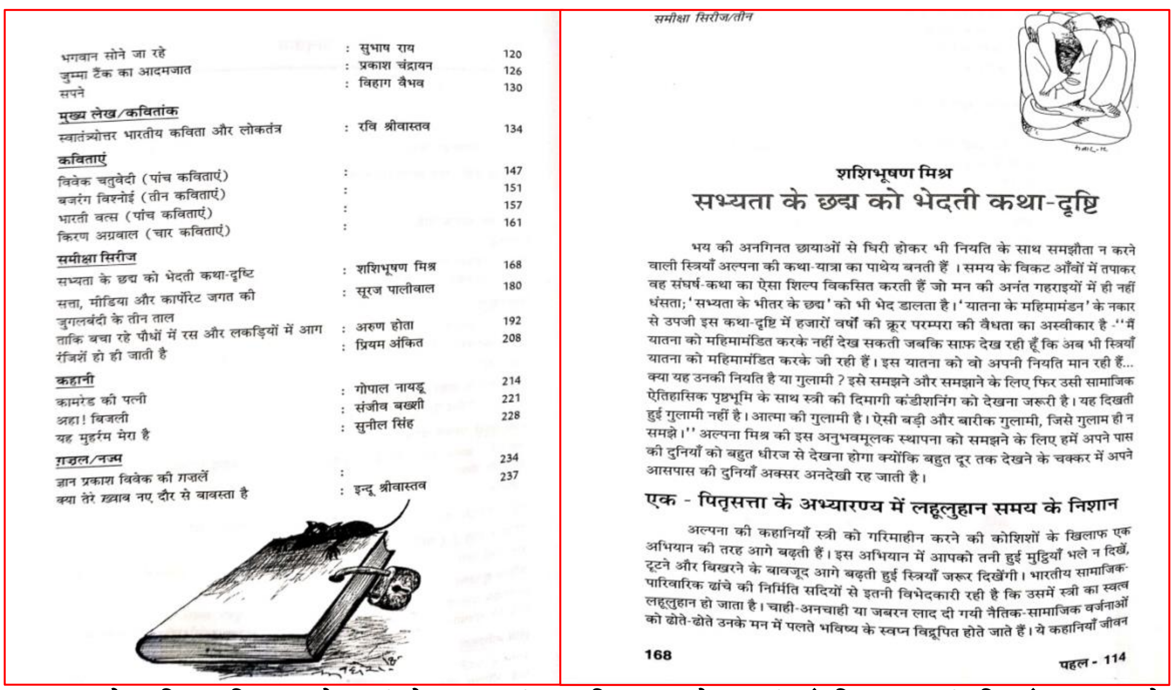
राकेश मिश्र के पांचवें कविता संग्रह '**कवि का शहर**' पर किसी तरह की रायशुमारी से पहले उनकी काव्ययात्रा पर एक नजर दौड़ाई जाए। व्यवस्थित रूप से देखा जाए तो उनके पहले कविता संग्रह (जिंदगी एक कण है) में 127 कविताएं, दूसरे संग्रह में (चलते रहे रात भर) 191 कविताएं ; तीसरे संग्रह (अटक गई नींद) में 134 और चौथे संग्रह (शब्दों का देश) में 173 कविताएं हैं। इन चार संग्रहों के बाद *'कवि का शहर'* हमारे बीच नमूदार हुआ है। इस संग्रह में कविताओं की संख्या अन्य संग्रहों से काफी कम (75) है; हालाकि केवल संख्या के आधार पर किसी भी तरह के मंतव्य का निर्धारण नहीं हो सकता पर इतना तो कहा जा सकता है कि यहां तक पहुंच कर कवि की चयनदृष्टि अधिक सख्त हुई है; उसका आत्मालोचक पक्ष अधिक सशक्त हुआ है। बहरहाल पूरी काव्ययात्रा में उनकी कविता का क्राफ्ट कहीं भी पॉलिश्ड नहीं दिखाई देता। इनमें खादी की तरह खुरदुरापन है; कढ़ाई बिनाई और तुरपाई में भी किसी विशेष कशीदाकारी की जोर आजमाईश लगभग न के बराबर है। कई जगह यह क्राफ्ट इतना खुरदुरा हो जाता है कि वह बांस के बने किसी 'सूपे' या 'टोकरे' की तरह दिखाई देता है; ऐसी बुनावट जिसमें पैनापन भी है और चुभ जाने वाला नुकीलापन भी। यहां तराशी हुई कविताओं का रकबा लगभग न के बराबर है। 'जस का तस' रख देने वाला अंदाज उनके कवि की अर्जित विशिष्टता है।

राकेश मिश्र अपनी कविताओं में 'चुप्पी' को लगातार प्रश्नांकित करते आए हैं। इस संग्रह में भी वह 'चुप्पी के खिलाफ' अपना प्रतिरोध दर्ज करते हैं—*'तुम लड़ना /वह लड़ाइयां / जहां चुप रहते हैं लोग।'* वह उन लोगों पर व्यंग्य करते हैं जिनके पास 'थोपा हुआ असीम

4.1.8 सभ्यता के छद्म को भेदती कथा-दृष्टि



डॉ० शशिभूषण मिश्र के इस आलोचनात्मक लेख में कहानीकार अल्पना मिश्र की कथा-यात्रा में स्त्री-संघर्ष पर दृष्टिपात करते हुए लिखते हैं कि भय की अनगिनत छायाओं से घिरी होकर भी नियति के साथ समझौता न करने वाली स्त्रियाँ अल्पना की कथा-यात्रा का पाथेय बनती हैं। समय के विकट आवों में तपाकर वह संघर्ष-कथा का एक ऐसा शिल्प विकसित कराती हैं जो मन की अनन्त गहराइयों में ही नहीं धंसता; 'सभ्यता के भीतर के छद्म' को भी भेद डालता है। 'यातना के महिमामंडन' के नकार से उपजी इस कथा-दृष्टि में हजारों वर्षों की क्रूर परम्परा की वैधता का अस्वीकार है- "मैं



समीक्षा सिरीज/तीन

शशिभूषण मिश्र

सभ्यता के छद्म को भेदती कथा-दृष्टि

भय की अनगिनत छायाओं से घिरी होकर भी नियति के साथ समझौता न करने वाली स्त्रियाँ अल्पना की कथा-यात्रा का पाथेय बनती हैं। समय के विकट आँवों में तपाकर वह संघर्ष-कथा का ऐसा शिल्प विकसित करती हैं जो मन की अनंत गहराइयों में ही नहीं धंसता; 'सभ्यता के भीतर के छद्म' को भी भेद डालता है। 'यातना के महिमामंडन' के नकार से उपजी इस कथा-दृष्टि में हजारों वर्षों की क्रूर परम्परा की वैधता का अस्वीकार है -"मैं यातना को महिमामंडित करके नहीं देख सकती जबकि साफ़ देख रही हूँ कि अब भी स्त्रियाँ यातना को महिमामंडित करके जी रही हैं। इस यातना को वो अपनी नियति मान रही हैं... क्या यह उनकी नियति है या गुलामी ? इसे समझने और समझाने के लिए फिर उसी सामाजिक ऐतिहासिक पृष्ठभूमि के साथ स्त्री की दिमागी कंडीशनिंग को देखना जरूरी है। यह दिखती हुई गुलामी नहीं है। आत्मा की गुलामी है। ऐसी बड़ी और बारीक गुलामी, जिसे गुलाम ही न समझे।" अल्पना मिश्र की इस अनुभवमूलक स्थापना को समझने के लिए हमें अपने पास की दुनियाँ को बहुत धीरज से देखना होगा क्योंकि बहुत दूर तक देखने के चक्कर में अपने आसपास की दुनियाँ अक्सर अनदेखी रह जाती है।

एक - पितृसत्ता के अभ्यारण्य में लहूलुहान समय के निशान

अल्पना की कहानियाँ स्त्री को गरिमाहीन करने की कोशिशों के खिलाफ एक अभियान की तरह आगे बढ़ती हैं। इस अभियान में आपको तनी हुई मुट्ठियाँ भले न दिखें, टूटने और बिखरने के बावजूद आगे बढ़ती हुई स्त्रियाँ जरूर दिखेंगी। भारतीय सामाजिक-पारिवारिक ढांचे की निर्मिति सदियों से इतनी विभेदकारी रही है कि उसमें स्त्री का स्वत्व लहूलुहान हो जाता है। चाही-अनचाही या जबरन लाद दी गयी नैतिक-सामाजिक वर्जनाओं को ढोते-ढोते उनके मन में पलते भविष्य के स्वप्न विद्रूपित होते जाते हैं। ये कहानियाँ जीवन

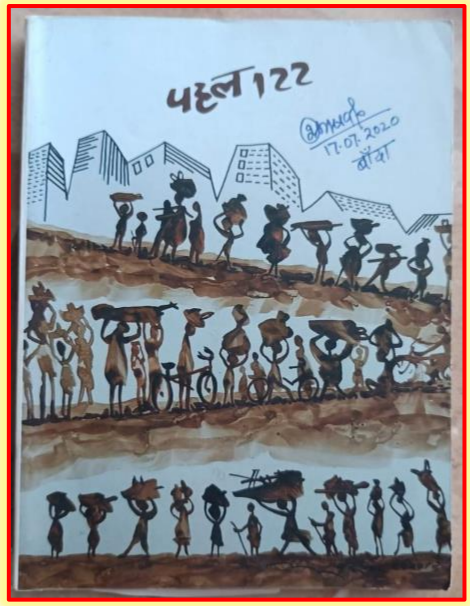
168 पहल - 114

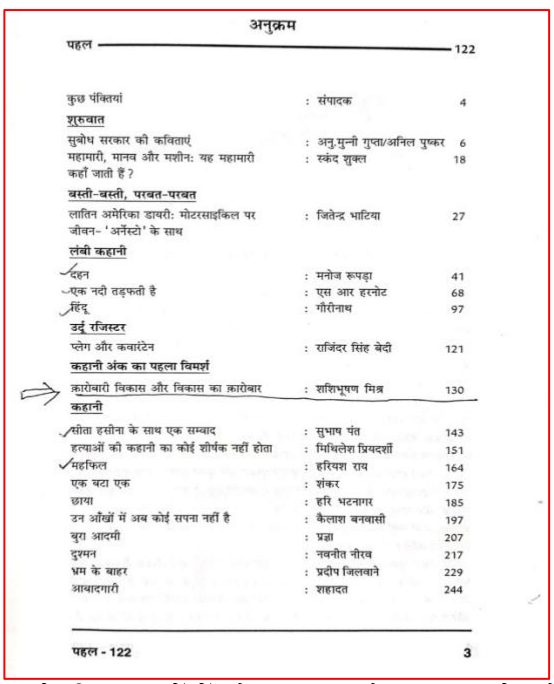
यातना को महिमामंडित करके नहीं देख सकती जबकि साफ़ देख रही हूँ कि अब भी स्त्रियाँ यातना को महिमामंडित करके जी रही हैं। इस यातना को वो अपनी नियति मान रही हैं...क्या यह उनकी नियति है या गुलामी? इसे समझने और समझाने के लिए फिर उसी सामाजिक ऐतिहासिक पृष्ठभूमि के साथ स्त्री की दिमागी कंडीशनिंग को देखना जरुरी है। यह दिखाती हुई गुलामी नहीं है। आत्मा की गुलामी है। ऐसी बड़ी और बारीक

गुलामी, जिसे गुलाम ही न समझे।" अल्पना मिश्र की इस अनुभवमूलक स्थापना को समझने के लिए हमें अपने पास की दुनिया को बहुत धीरज से देखना होगा क्योंकि कई बार दूर तक देखने के चक्कर में अपने आस-पास की दुनिया अनदेखी रह जाती है।

4.1.9 क़ारोबारी विकास और विकास का क़ारोबार

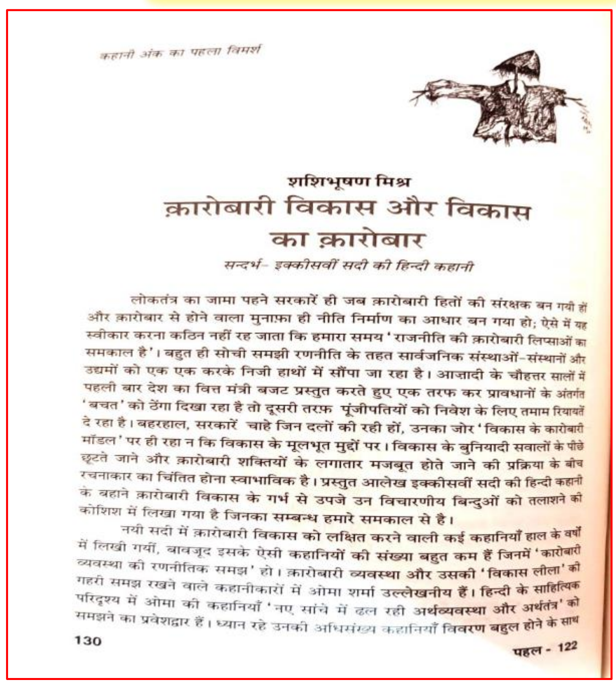
डॉ० शशिभूषण मिश्र ने इस आलोचनात्मक लेख में इक्कीसवीं सदी की हिन्दी कहानी के सन्दर्भ में लिखा है कि लोकतंत्र का जामा पहने सरकारें ही जब क़ारोबारी हितों की संरक्षक बन गयी हों और क़ारोबार से होने वाला मुनाफ़ा ही नीति निर्माण का आधार बन गया हो; ऐसे में यह स्वीकार करना कठिन नहीं रह जाता कि हमारा समय 'राजनीति की क़ारोबारी लिप्साओं का समकाल है'। बहुत ही सोची समझी रणनीति के तहत सार्वजनिक संस्थाओं-संस्थानों और उद्यमों को एक-एक करके निजी हाथों में सौंपा जा रहा है। आज़ादी के चौहत्तर सालों में पहली बार देश का वित्त मंत्री बजट प्रस्तुत




अनुक्रम

पहल — 122

पहल - 122 3


शशिभूषण मिश्र

क़ारोबारी विकास और विकास का क़ारोबार

सन्दर्भ- इक्कीसवीं सदी की हिन्दी कहानी

लोकतंत्र का जामा पहने सरकारें ही जब क़ारोबारी हितों की संरक्षक बन गयी हों और क़ारोबार से होने वाला मुनाफ़ा ही नीति निर्माण का आधार बन गया हो; ऐसे में यह स्वीकार करना कठिन नहीं रह जाता कि हमारा समय 'राजनीति की क़ारोबारी लिप्साओं का समकाल है'। बहुत ही सोची समझी रणनीति के तहत सार्वजनिक संस्थाओं-संस्थानों और उद्यमों को एक एक करके निजी हाथों में सौंपा जा रहा है। आज़ादी के चौहत्तर सालों में पहली बार देश का वित्त मंत्री बजट प्रस्तुत करते हुए एक तरफ कर प्रावधानों के अंतर्गत 'बचत' को ठेंगा दिखा रहा है तो दूसरी तरफ़ पूंजीपतियों को निवेश के लिए तमाम रियायतें दे रहा है। बहरहाल, सरकारें चाहे जिन दलों की रही हों, उनका जोर 'विकास के कारोबारी मॉडल' पर ही रहा न कि विकास के मूलभूत मुद्दों पर। विकास के बुनियादी सवालों के पीछे छूटते जाने और क़ारोबारी शक्तियों के लगातार मजबूत होते जाने की प्रक्रिया के बीच रचनाकार का चिंतित होना स्वाभाविक है। प्रस्तुत आलेख इक्कीसवीं सदी की हिन्दी कहानी के बहाने क़ारोबारी विकास के गर्भ से उपजे उन विचारणीय बिन्दुओं को तलाशने की कोशिश में लिखा गया है जिनका सम्बन्ध हमारे समकाल से है।

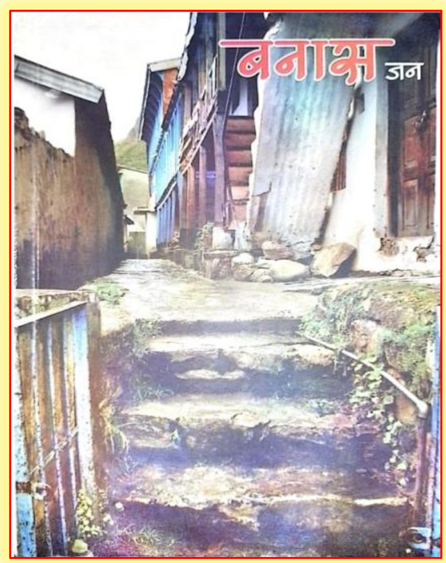
नयी सदी में क़ारोबारी विकास को लक्षित करने वाली कई कहानियाँ हाल के वर्षों में लिखी गयीं, बावजूद इसके ऐसी कहानियों की संख्या बहुत कम हैं जिनमें 'कारोबारी व्यवस्था की रणनीतिक समझ' हो। क़ारोबारी व्यवस्था और उसकी 'विकास लीला' की गहरी समझ रखने वाले कहानीकारों में ओमा शर्मा उल्लेखनीय हैं। हिन्दी के साहित्यिक परिदृश्य में ओमा की कहानियाँ 'नए सांचे में ढल रही अर्थव्यवस्था और अर्थतंत्र' को समझने का प्रवेशद्वार हैं। ध्यान रहे उनकी अधिसंख्य कहानियाँ विवरण बहुल होने के साथ

130 पहल - 122

करते हुए एक तरफ कर प्रावधानों के अंतर्गत 'बचत' को ठेंगा दिखा रहा है तो दूसरी तरफ़ पूंजीपतियों को निवेश के लिए तमाम रियायतें दे रहा है। बहरहाल, सरकारें चाहे जिन दलों की रही हों, उनका जोर 'विकास के कारोबारी मॉडल' पर ही रहा न कि विकास के मूलभूत मुद्दों पर। विकास के बुनियादी सवालों के पीछे छूटते जाने और क़ारोबारी शक्तियों के लगातार मजबूत होते जाने की प्रक्रिया के बीच रचनाकार का चिंतित होना स्वाभाविक है। प्रस्तुत आलेख इक्कीसवीं सदी की हिन्दी कहानी के बहाने क़ारोबारी विकास के गर्भ से उपजे उन विचारणीय बिन्दुओं को तलाशने की कोशिश में लिखा गया है जिनका सम्बन्ध हमारे समकाल से है।

इस लेख में इक्कीसवीं सदी की हिन्दी कहानी के उन सीमांतों को चिन्हित करने का प्रयास किया गया है जिनसे 'विकास और क़ारोबार के अन्तर्सम्बन्धों' को समझने में मदद मिलती हो। हिन्दी कहानी में बाजार का 'स्यापा' अधिक है, जबकि जरूरत 'बाजारीकरण की प्रक्रिया' को समझने और उसके मूल में काम कर रही कारोबारी शक्तियों की मंशा को पहचानने की है। विकास के नाम पर जिस कारोबारी साम्राज्य की नींव पिछले कुछ वर्षों से डाली जा रही है उसके आर्थिक-राजनीतिक निहितार्थों को भी समझने की जरूरत है।

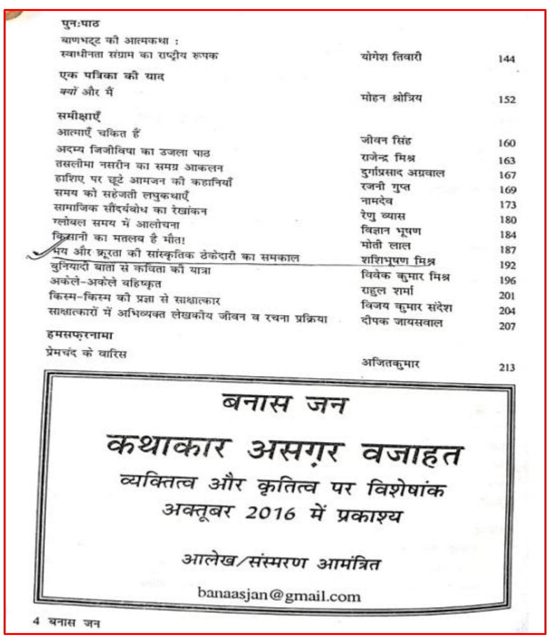
4.1.10 भय और क्रूरता की सांस्कृतिक ठेकेदारी का समकाल



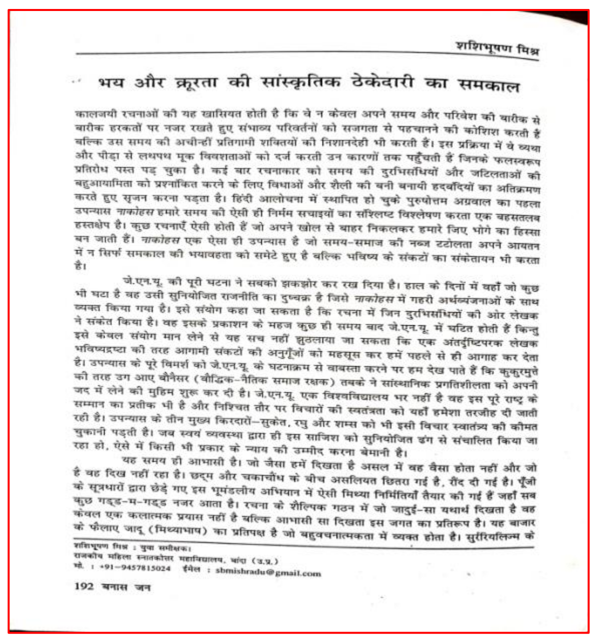
डॉ० शशिभूषण मिश्र इस आलोचनात्मक लेख में पुरुषोत्तम अग्रवाल के पहले उपन्यास 'नाकोहस' के सन्दर्भ में लिखते हैं कि कालजयी रचनाओं की यह खासियत होती है कि वे न केवल अपने समय और परिवेश की बारीक से बारीक हरकतों पर नजर रखते हुए संभाव्य परिवर्तनों को सजगता से पहचानने की कोशिश करती हैं बल्कि उस समय की अचीन्हीं प्रतिगामी शक्तियों की निशानदेही भी करती हैं। इस प्रक्रिया में वे व्यथा और पीड़ा से लथपथ मूक विवशताओं को दर्ज करती उन कारणों तक पहुँचती हैं जिनके फलस्वरूप प्रतिरोध पस्त पड़ चुका है। कई बार रचनाकार को समय की दुरभिसंधियों और जटिलताओं की बहुआयामिता को प्रश्नांकित करने के लिए विधाओं और शैली की बनी बनायी हदबंदियों का अतिक्रमण करते हुए सृजन करना पड़ता है। हिन्दी

आलोचना में स्थापित हो चुके पुरुषोत्तम अग्रवाल का पहला उपन्यास 'नाकोहस' हमारे समय की ऐसी ही निर्मम सच्चाइयों का संश्लिष्ट विश्लेषण करता एक बहसतलब हस्तक्षेप है। कुछ रचनाएँ ऐसी होती हैं जो अपने खोल से बाहर निकलकर हमारे जिए भोगे का हिस्सा बन जाती हैं। 'नाकोहस' एक ऐसा ही उपन्यास है जो समय-समाज की नब्ज टटोलता अपने आयतन में न सिर्फ समकाल की भयावहता को समेटे हुए है बल्कि भविष्य के संकटों का संकेतायन भी करता है।

जे०एन०यू० की पूरी घटना ने सबको झकझोर कर रख दिया है। हाल के दिनों में वहाँ जो कुछ भी घटा है वह उसी सुनियोजित राजनीति का दुष्चक्र है जिसे 'नाकोहस' में गहरी अर्थव्यंजनाओं के साथ व्यक्त किया गया है। इसे संयोग कहा जा सकता है कि रचना में जिन दुरभिसंधियों की ओर लेखक ने संकेत किया है; वह इसके प्रकाशन के महज कुछ ही समय बाद जे०एन०यू० में घटित होती है किन्तु इसे केवल संयोग मान लेने से यह सच नहीं झुठलाया जा सकता कि एक अंतर्दृष्टिपरक लेखक भविष्यदृष्टा की तरह आगामी संकटों की अनुगूंजों को महसूस कर हमें पहले से ही आगाह कर देता है। उपन्यास के पूरे विमर्श को जे०एन०यू० के



4 बनास जन



शशिभूषण मिश्र

भय और क्रूरता की सांस्कृतिक ठेकेदारी का समकाल

कालजयी रचनाओं की यह खासियत होती है कि वे न केवल अपने समय और परिवेश की बारीक से बारीक हरकतों पर नजर रखते हुए संभाव्य परिवर्तनों को सजगता से पहचानने की कोशिश करती हैं बल्कि उस समय की अचीन्हीं प्रतिगामी शक्तियों की निशानदेही भी करती हैं। इस प्रक्रिया में वे व्यथा और पीड़ा से लथपथ मूक विवशताओं को दर्ज करती उन कारणों तक पहुँचती हैं जिनके फलस्वरूप प्रतिरोध पस्त पड़ चुका है। कई बार रचनाकार को समय की दुरभिसंधियों और जटिलताओं की बहुआयामिता को प्रश्नांकित करने के लिए विधाओं और शैली की बनी बनायी हदबंदियों का अतिक्रमण करते हुए सृजन करना पड़ता है। हिंदी आलोचना में स्थापित हो चुके पुरुषोत्तम अग्रवाल का पहला उपन्यास *नाकोहस* हमारे समय की ऐसी ही निर्मम सचाइयों का संश्लिष्ट विश्लेषण करता एक बहसतलब हस्तक्षेप है। कुछ रचनाएँ ऐसी होती हैं जो अपने खोल से बाहर निकलकर हमारे जिए भोगे का हिस्सा बन जाती हैं। *नाकोहस* एक ऐसा ही उपन्यास है जो समय-समाज की नब्ज टटोलता अपने आयतन में न सिर्फ समकाल की भयावहता को समेटे हुए है बल्कि भविष्य के संकटों का संकेतायन भी करता है।

जे.एन.यू. की पूरी घटना ने सबको झकझोर कर रख दिया है। हाल के दिनों में वहाँ जो कुछ भी घटा है वह उसी सुनियोजित राजनीति का दुष्चक्र है जिसे *नाकोहस* में गहरी अर्थव्यंजनाओं के साथ व्यक्त किया गया है। इसे संयोग कहा जा सकता है कि रचना में जिन दुरभिसंधियों की ओर लेखक ने संकेत किया है। वह इसके प्रकाशन के महज कुछ ही समय बाद जे.एन.यू. में घटित होती है किन्तु इसे केवल संयोग मान लेने से यह सच नहीं झुठलाया जा सकता कि एक अंतर्दृष्टिपरक लेखक भविष्यद्रष्टा की तरह आगामी संकटों की अनुगूँजों को महसूस कर हमें पहले से ही आगाह कर देता है। उपन्यास के पूरे विमर्श को जे.एन.यू. के घटनाक्रम से वाबस्ता करने पर हम देख पाते हैं कि कुकुरमुत्ते की तरह उग आए बौनैसर (बौद्धिक-नैतिक समाज रक्षक) तबके ने सांस्थानिक प्रगतिशीलता को अपनी जद में लेने की मुहिम शुरू कर दी है। जे.एन.यू. एक विश्वविद्यालय भर नहीं है वह इस पूरे राष्ट्र के सम्मान का प्रतीक भी है और निश्चित तौर पर विचारों की स्वतंत्रता को यहाँ हमेशा तरजीह दी जाती रही है। उपन्यास के तीन मुख्य किरदारों—सुकेत, रघु और शम्स को भी इसी विचार स्वातंत्र्य की कीमत चुकानी पड़ती है। जब स्वयं व्यवस्था द्वारा ही इस साजिश को सुनियोजित ढंग से संचालित किया जा रहा हो, ऐसे में किसी भी प्रकार के न्याय की उम्मीद करना बेमानी है।

यह समय ही आभासी है। जो जैसा हमें दिखता है असल में वह वैसा होता नहीं और जो है वह दिख नहीं रहा है। छद्म और चकाचौंध के बीच असलियत छितरा गई है, रौंद दी गई है। पूँजी के सूत्रधारों द्वारा छेड़े गए इस भूमंडलीय अभियान में ऐसी मिथ्या निर्मितियाँ तैयार की गई हैं जहाँ सब कुछ गड्ड-म-गड्ड नजर आता है। रचना के शैल्पिक गठन में जो जादुई-सा यथार्थ दिखता है वह केवल एक कलात्मक प्रयास नहीं है बल्कि आभासी सा दिखता इस जगत का प्रतिरूप है। यह बाजार के फैलाए जादू (मिथ्याभाष) का प्रतिपक्ष है जो बहुवचनात्मकता में व्यक्त होता है। सुर्रियलिज्म के

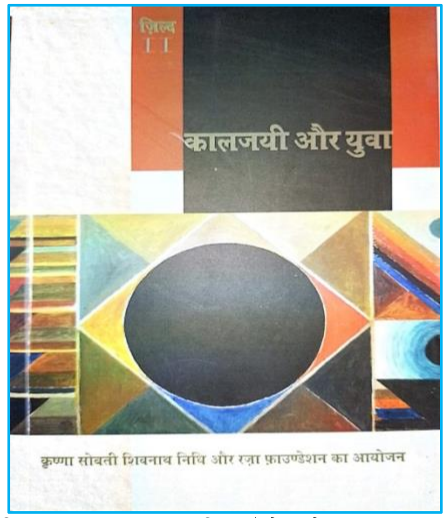
शशिभूषण मिश्र : युवा समीक्षक।
राजकीय महिला स्नातकोत्तर महाविद्यालय, बांदा (उ.प्र.)
मो. : +91-9457815024 ईमेल : sbmishradu@gmail.com

192 बनास जन

घटनाक्रम से वाबस्ता करने पर हम पाते हैं कि कुकुरमुत्ते की तरह उग आए बौनेसर (बौद्धिक-नैतिक-समाज रक्षक) तबके ने सांस्थानिक प्रगतिशीलता को अपनी जद में लेने की मुहिम शुरू कर दी है। जे०एन०यू० एक विश्वविद्यालय भर नहीं है वह इस पूरे राष्ट्र के सम्मान का प्रतीक भी है और निश्चित तौर पर विचारों की स्वतंत्रता

को यहाँ हमेशा तरजीह दी जाती रही है। उपन्यास के तीन मुख्य किरदारों- सुकेत, रघु और शम्स को भी इसी विचार स्वातंत्र्य की कीमत चुकानी पड़ती है। जब स्वयं व्यवस्था द्वारा ही इस साजिश को सुनियोजित ढंग से संचालित किया जा रहा हो, ऐसे में किसी भी प्रकार के न्याय की उम्मीद करना बेमानी है।

4.1.11 सूरदास के भ्रमरगीत के प्रगतिशील आयाम



डॉ० शशिभूषण मिश्र इस अलोचनात्मक लेख में लिखते हैं कि 'भ्रमरगीत' चली आ ही परम्परा से प्राप्त मान्यताओं, विचारों, विचारधाराओं को अपने जीवनानुभव से त्यागने और स्वीकारने की विवेकसम्मत दृष्टि के कारण एक नई पहचान बनाता है। समग्र स्वीकार में जो सरलीकरण है, वही सरलीकरण समग्र विरोध में भी है; इसी नाते सूरदास इन दोनों के बीच से रास्ता बनाते हैं। 'भ्रमरगीत' का स्वर इस मायने में समूचे भक्ति आन्दोलन में बिलकुल अलग तरह का है कि उसमें स्त्री के लिए न तो मर्यादा की पितृसत्तात्मक हदबन्दियाँ हैं और न ही प्राण त्याग देने वाली परम्पराओं का समर्थन। सूरदास गलत चीजों का सीधा विरोध करने के बजाय गलत के समानान्तर सत्य की बड़ी रेखा खींचने वाले रचनाकार हैं। विरोध से कहीं अधिक महत्वपूर्ण होता है समय के प्रवाह में विडम्बनाओं को चीन्हते हुए उन्हें रेखांकित करना। रेखांकन का यह बोध ही कवि को एक जिम्मेदारी से बांधता है, जिसके कारण कविता हर तरह के सरलीकरण से बच जाती है।

सूरदास के 'भ्रमरगीत' के माध्यम से मध्यकालीन समय में एक ऐसा प्रति-संचार रचा जिसमें जीवन से पलायन का नकार है। यह देखा जाना जरुरी है कि आखिर वो कौन सी परिस्थितियाँ थीं जिनके कारण सूर को भागवत में भ्रमरगीत की मौलिक सृष्टि करनी पड़ी। सूरदास के अध्ययन से क्या उस समय और समाज की शिनाख्त की जा सकती है? आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी ने अपनी 'सूर-साहित्य' पुस्तक में यह स्थापना दी है कि इस काल में "नई-नई जातियों के आने से नई-नई समस्याएँ खड़ी हो रहीं थीं...उस समय तक हिन्दू जाति के अन्दर एक क्षीण जीवनी शक्ति वर्तमान थी। इस जीवनी शक्ति के कारण ही नई व्यवस्थाएँ बन सकी थीं, परन्तु मुसलमानों के आने से वह शक्ति स्तम्भित सी हो गई। ऐसे अवसर पर सूर ने प्रेम के माध्यम से जीवन में सरसता

और आनन्द का संचार किया।" वह अपने समय के अनुभवों की शिनाख्त करते हुए यथार्थ की जमीन पर उद्यमशील समाज की परिकल्पना करते हैं।

निष्कर्ष रूप में यह कहा जा सकता है कि सूर की कविता का मानवीय अंश युग-सन्दर्भों के बदल जाने पर भी कालजयी साबित हुआ है। सूरदास प्रेमरस में सराबोर रसमय लोक-संस्कृति की सर्जना करते हैं, उनका ताना-बाना बुनते हैं। हर तरह के दम्भ को तोड़ने के लिए, चाहे फिर वह ज्ञान का हो, धन-सम्पत्ति का हो या रूप का हो। वह कविताई में ऐसी प्रगतिशील सोंच चुनते-बुनते हैं जिसकी नवीन गति के समक्ष समस्त कुभाव पराजित हो जाते हैं। आज हमें देखने की जरूरत है कि पूँजी और तकनीक की ताकत पर हमने जिस लुटेरी व्यवस्था को निर्मित किया है, वह अपने स्वरुप और वर्ताव में कितनी दीर्घजीवी है?

पाँच

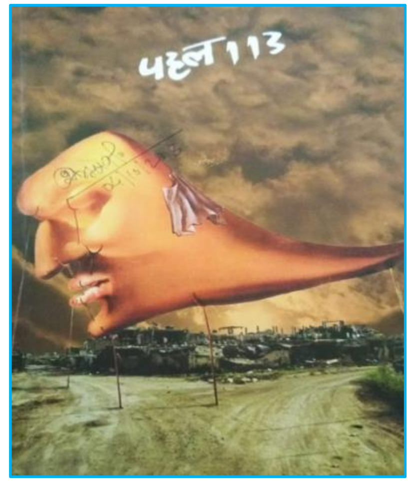
छह

सूरदास के भ्रमरगीत के प्रगतिशील आयाम

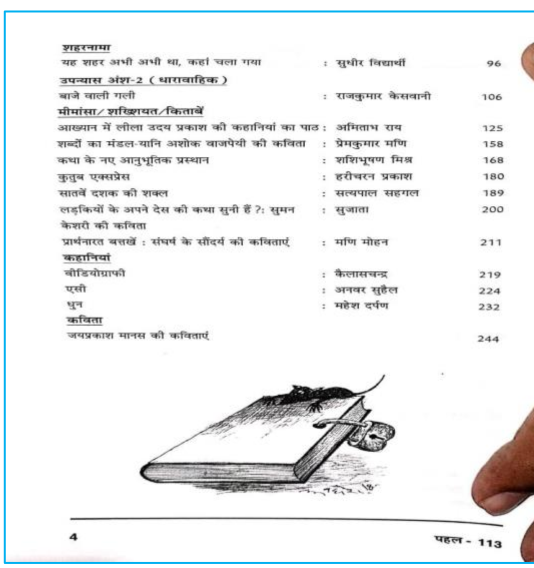
'भ्रमरगीत' चली आ रही परम्परा से प्राप्त मान्यताओं, विचारों, विचारधाराओं को अपने जीवनानुभव से त्यागने और स्वीकारने की विवेकसम्मत दृष्टि के कारण एक नयी पहचान बनाता है। समग्र स्वीकार में जो सरलीकरण है,वही सरलीकरण समग्र विरोध में भी है; इसी नाते सूरदास इन दोनों के बीच से रास्ता बनाते हैं। 'भ्रमरगीत' का स्वर इस मायने में समूचे भक्ति आन्दोलन में बिलकुल अलग तरह का है कि उसमें स्त्री के लिए न तो मर्यादा की पितृसत्तात्मक हदबन्दियाँ हैं और न ही प्राण त्याग देने वाली परम्पराओं का समर्थन। सूरदास ग़लत चीज़ों का सीधा विरोध करने के बजाय ग़लत के सामानान्तर सत्य की बड़ी रेखा खींचने वाले रचनाकार हैं। विरोध से कहीं अधिक महत्त्वपूर्ण होता है समय के प्रवाह में विडम्बनाओं को चीन्हते हुए उन्हें रेखांकित करना। रेखांकन का यह बोध ही कवि को एक जिम्मेदारी से बाँधता है, जिसके कारण कविता हर तरह के सरलीकरण से बच पाती है।

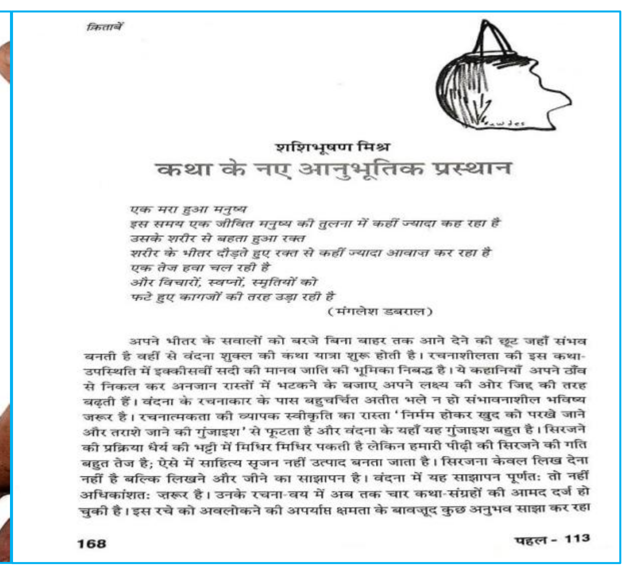
सूरदास ने 'भ्रमरगीत' के माध्यम से मध्यकालीन समय में एक ऐसा प्रति-संसार रचा जिसमें जीवन से पलायन का नकार है। यह देखा जाना ज़रूरी है कि आख़िर वो कौन सी परिस्थितियाँ थीं जिनके कारण सूर को भागवत में भ्रमरगीत की मौलिक सृष्टि करनी पड़ी। सूरदास के अध्ययन से क्या उस समय और समाज की समस्याओं की शिनाख़्त की जा सकती है? आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी ने अपनी 'सूर-साहित्य' पुस्तक में यह स्थापना दी है कि इस काल में ''नयी-नयी जातियों के आने से नयी नयी समस्याएँ खड़ी हो रही थीं...उस समय तक हिन्दू जाति के

4.1.12 कथा के नए आनुभूतिक प्रस्थान



डॉ० शशिभूषण मिश्र इस अलोचनात्मक लेख में लिखते हैं कि अपने भीतर के सवालों को बरजे बिना बाहर तक आने देने की छूट जहाँ सम्भव बनती है, वहीं से वंदना शुक्ला की कथा यात्रा शुरू होती है। रचनाशीलता की इस कथा-उपस्थिति में इक्कीसवीं सदी की मानव जाति की भूमिका निबद्ध है। ये कहानियाँ अपने ठाँव से निकल कर अनजान रास्तों में भटकने के बजाय अपने लक्ष्य की ओर जिद्द की तरह बढ़तीं हैं। वंदना के रचनाकार के पास बहुचर्चित अतीत भले न हो सम्भावनाशील भविष्य जरुर है। रचनात्मकता की व्यापक स्वीकृति का रास्ता 'निर्मम होकर खुद को परखे जाने और तराशे जाने की गुंजाइश' से फूटता है और वंदना के यहाँ यह गुंजाइश बहुत है। सिरजने की प्रक्रिया धैर्य की भट्टी में मिधिर-मिधिर पकती है लेकिन हमारी पीढ़ी की सिरजने की गति बहुत तेज है; ऐसे में साहित्य सृजन नहीं उत्पाद बनता जाता है। सिरजना केवल लिख देना नहीं है बल्कि लिखने और जीने का साझापन है। वंदना में यह साझापन पूर्णत: तो नहीं अधिकांशत: जरूर है।





शशिभूषण मिश्र

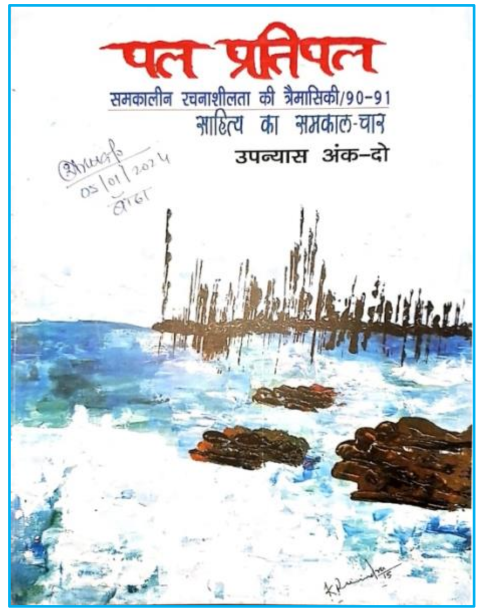
कथा के नए आनुभूतिक प्रस्थान

एक मरा हुआ मनुष्य
इस समय एक जीवित मनुष्य की तुलना में कहीं ज्यादा कह रहा है
उसके शरीर से बहता हुआ रक्त
शरीर के भीतर दौड़ते हुए रक्त से कहीं ज्यादा आवाज़ कर रहा है
एक तेज हवा चल रही है
और विचारों, स्वप्नों, स्मृतियों को
फटे हुए कागजों की तरह उड़ा रही है
(मंगलेश डबराल)

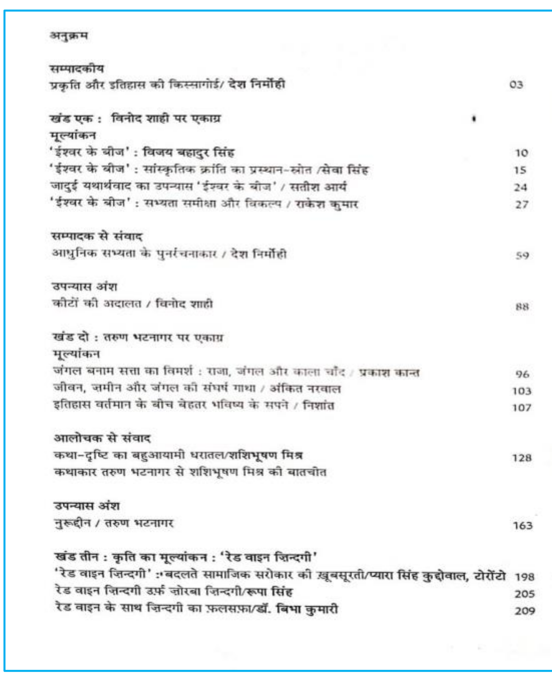
अपने भीतर के सवालों को बरजे बिना बाहर तक आने देने की छूट जहाँ संभव बनती है वहीं से वंदना शुक्ल की कथा यात्रा शुरू होती है। रचनाशीलता की इस कथा-उपस्थिति में इक्कीसवीं सदी की मानव जाति की भूमिका निबद्ध है। ये कहानियाँ अपने ठाँव से निकल कर अनजान रास्तों में भटकने के बजाए अपने लक्ष्य की ओर जिद्द की तरह बढ़ती हैं। वंदना के रचनाकार के पास बहुचर्चित अतीत भले न हो संभावनाशील भविष्य जरूर है। रचनात्मकता की व्यापक स्वीकृति का रास्ता 'निर्मम होकर खुद को परखे जाने और तराशे जाने की गुंजाइश' से फूटता है और वंदना के यहाँ यह गुंजाइश बहुत है। सिरजने की प्रक्रिया धैर्य की भट्टी में मिधिर मिधिर पकती है लेकिन हमारी पीढ़ी की सिरजने की गति बहुत तेज है; ऐसे में साहित्य सृजन नहीं उत्पाद बनता जाता है। सिरजना केवल लिख देना नहीं है बल्कि लिखने और जीने का साझापन है। वंदना में यह साझापन पूर्णतः तो नहीं अधिकांशतः जरूर है। उनके रचना-वय में अब तक चार कथा-संग्रहों की आमद दर्ज हो चुकी है। इस रचे को अवलोकने की अपर्याप्त क्षमता के बावजूद कुछ अनुभव साझा कर रहा

4.1.13 कथा-दृष्टि का बहु आयामी धरातल

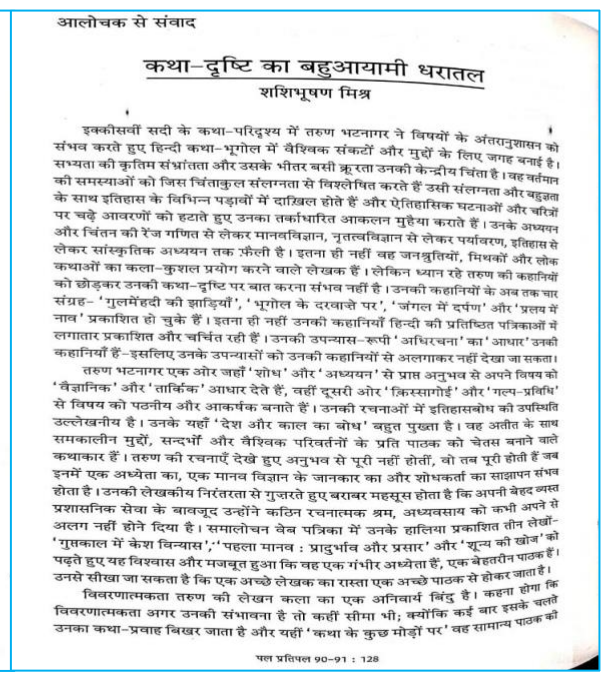
डॉ० शशिभूषण मिश्र इस अलोचनात्मक लेख में लिखते हैं कि इक्कीसवीं सदी के कथा-परिदृश्य में तरुण भटनागर ने विषयों के अंतरानुशासन को सम्भव करते हुए हिन्दी कथा-भूगोल में वैश्विक संकटों और मुद्दों के लिए जगह बनाई है। सभ्यता की कृतिम संभ्रांतता और उसके भीतर बसी क्रूरता और उनकी केन्द्रीय चिंता है। वह वर्तमान की समस्याओं को जिस चिंताकुल संलग्नता से विश्लेषित करते हैं उसी संलग्नता और बहुज्ञता के साथ इतिहास के विभिन्न पड़ावों में दाखिल होते हैं और ऐतिहासिक घटनाओं और चरित्रों पर चढ़े अवरणों



को हटाते हुए उनका तर्काधारित आकलन मुहैया कराते हैं। उनके अध्ययन और चिन्तन की रेंज गणित से लेकर मानवविज्ञान, नृतत्वविज्ञान से लेकर पर्यावरण, इतिहास से लेकर सांस्कृतिक अध्ययन तक फैली है। इतना ही नहीं वह जनश्रुतियों, मिथकों और लोक कथाओं का कला-कुशल प्रयोग करने वाले लेखक हैं लेकिन ध्यान रहे तरुण की कहानियों को छोड़कर उनकी कथा-दृष्टि पर बात करना सम्भव नहीं है। उनकी कहानियों में अब



अनुक्रम



आलोचक से संवाद

कथा-दृष्टि का बहुआयामी धरातल

शशिभूषण मिश्र

इक्कीसवीं सदी के कथा-परिदृश्य में तरुण भटनागर ने विषयों के अंतरानुशासन को संभव करते हुए हिन्दी कथा-भूगोल में वैश्विक संकटों और मुद्दों के लिए जगह बनाई है। सभ्यता की कृतिम संभ्रांतता और उसके भीतर बसी क्रूरता उनकी केन्द्रीय चिंता है। वह वर्तमान की समस्याओं को जिस चिंताकुल संलग्नता से विश्लेषित करते हैं उसी संलग्नता और बहुज्ञता के साथ इतिहास के विभिन्न पड़ावों में दाख़िल होते हैं और ऐतिहासिक घटनाओं और चरित्रों पर चढ़े आवरणों को हटाते हुए उनका तर्काधारित आकलन मुहैया कराते हैं। उनके अध्ययन और चिंतन की रेंज गणित से लेकर मानवविज्ञान, नृतत्वविज्ञान से लेकर पर्यावरण, इतिहास से लेकर सांस्कृतिक अध्ययन तक फ़ैली है। इतना ही नहीं वह जनश्रुतियों, मिथकों और लोक कथाओं का कला-कुशल प्रयोग करने वाले लेखक हैं। लेकिन ध्यान रहे तरुण की कहानियों को छोड़कर उनकी कथा-दृष्टि पर बात करना संभव नहीं है। उनकी कहानियों के अब तक चार संग्रह- 'गुलमेंहदी की झाड़ियाँ', 'भूगोल के दरवाज़े पर', 'जंगल में दर्पण' और 'प्रलय में नाव' प्रकाशित हो चुके हैं। इतना ही नहीं उनकी कहानियाँ हिन्दी की प्रतिष्ठित पत्रिकाओं में लगातार प्रकाशित और चर्चित रही हैं। उनकी उपन्यास-रूपी 'अधिरचना' का 'आधार' उनकी कहानियाँ हैं-इसलिए उनके उपन्यासों को उनकी कहानियों से अलगाकर नहीं देखा जा सकता।

तरुण भटनागर एक ओर जहाँ 'शोध' और 'अध्ययन' से प्राप्त अनुभव से अपने विषय को 'वैज्ञानिक' और 'तार्किक' आधार देते हैं, वहीं दूसरी ओर 'क़िस्सागोई' और 'गल्प-प्रविधि' से विषय को पठनीय और आकर्षक बनाते हैं। उनकी रचनाओं में इतिहासबोध की उपस्थिति उल्लेखनीय है। उनके यहाँ 'देश और काल का बोध' बहुत पुख्ता है। वह अतीत के साथ समकालीन मुद्दों, सन्दर्भों और वैश्विक परिवर्तनों के प्रति पाठक को चेतस बनाने वाले कथाकार हैं। तरुण की रचनाएँ देखे हुए अनुभव से पूरी नहीं होतीं, वो तब पूरी होती हैं जब इनमें एक अध्येता का, एक मानव विज्ञान के जानकार का और शोधकर्ता का साझापन संभव होता है। उनकी लेखकीय निरंतरता से गुज़रते हुए बराबर महसूस होता है कि अपनी बेहद व्यस्त प्रशासनिक सेवा के बावजूद उन्होंने कठिन रचनात्मक श्रम, अध्यवसाय को कभी अपने से अलग नहीं होने दिया है। समालोचन वेब पत्रिका में उनके हालिया प्रकाशित तीन लेखों- 'गुप्तकाल में केश विन्यास',''पहला मानव : प्रादुर्भाव और प्रसार' और 'शून्य की खोज' को पढ़ते हुए यह विश्वास और मजबूत हुआ कि वह एक गंभीर अध्येता हैं, एक बेहतरीन पाठक हैं। उनसे सीखा जा सकता है कि एक अच्छे लेखक का रास्ता एक अच्छे पाठक से होकर जाता है।

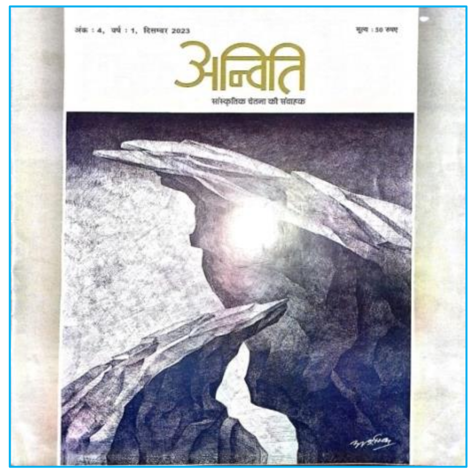
विवरणात्मकता तरुण की लेखन कला का एक अनिवार्य बिंदु है। कहना होगा कि विवरणात्मकता अगर उनकी संभावना है तो कहीं सीमा भी; क्योंकि कई बार इसके चलते उनका कथा-प्रवाह बिखर जाता है और यहीं 'कथा के कुछ मोड़ों पर' वह सामान्य पाठक की

पल प्रतिपल 90-91 : 128

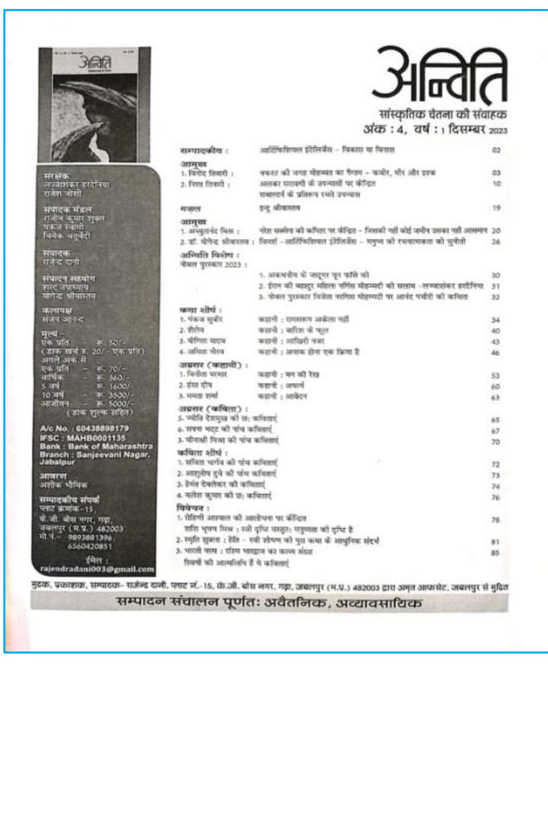
तक चार संग्रह- 'गुलमेहंदी की झाड़ियाँ', 'भूगोल के दरवाजे पर', 'जंगल में दर्पण' और 'प्रलय में नाव' प्रकाशित हो चुके हैं। इतना ही नहीं उनकी कहानियाँ हिन्दी की प्रतिष्ठित पत्रिकाओं में लगातार प्रकाशित और चर्चित रहीं हैं। उनकी उपन्यास रुपी 'अधिरचना' का 'आधार' उनकी कहानियाँ हैं-इसलिए उनके उपन्यासों को उनकी कहानियों से अलग कर नहीं देखा जा सकता।

4.1.14 स्त्री दृष्टि वस्तुत: मनुष्यता की दृष्टि है

डॉ० शशिभूषण मिश्र इस अलोचनात्मक लेख में लिखते हैं कि आलोचना किसी 'और' के बहाने अपने भीतर की एक जाँच है और फिर सृजन के जरिए समूचे मनुष्य के साथ जुड़ जाने की चाह। आलोचना अपने ही तलघर की विश्लेषणात्मक शिनाख्त है जो आलोचक की बेख्याली में दबे पाँव बाहर चली जाती है और फिर अपने गिरफ्त में ले उसकी 'आँख' बन जाती है।



इक्कीसवीं सदी की आलोचना में 'सृजनात्मक भाषा' और 'स्त्री-संवेदी दृष्टि' को पूँजीभूत करते हुए रोहिणी अग्रवाल ने आलोचना का संवादी स्वर निर्मित किया है। आलोचना की भाषा को संवेदनशील बनाने



अन्विति
सांस्कृतिक चेतना की संवाहक
अंक : 4, वर्ष : 1 दिसम्बर 2023

संरक्षक
लज्जाशंकर हरदेनिया
राजेश जोशी

संपादक मंडल
राजीव कुमार शुक्ल
पंकज स्वामी
विवेक चतुर्वेदी

संपादक
राजेन्द्र दानी

संपादन सहयोग
शरद उपाध्याय
योगेन्द्र श्रीवास्तव

कलापक्ष
संजय आनन्द

मूल्य –
एक प्रति – रू. 50/-
(डाक खर्च रु. 20/- एक प्रति)
अगले अंक से
एक प्रति – रू. 70/-
वार्षिक – रू. 360/-
5 वर्ष – रू. 1600/-
10 वर्ष – रू. 3500/-
आजीवन – रू. 5000/-
(डाक शुल्क सहित)

A/c No. : 60438898179
IFSC : MAHB0001135
Bank : Bank of Maharashtra
Branch : Sanjeevani Nagar, Jabalpur

आवरण
अशोक भौमिक

सम्पादकीय संपर्क
प्लाट क्रमांक-15,
के.जी. बोस नगर, गढ़ा,
जबलपुर (म.प्र.) 482003
मो.नं.- 9893881396,
6560420851
ईमेल :
rajendradani003@gmail.com

मुद्रक, प्रकाशक, सम्पादक- राजेन्द्र दानी, प्लाट नं.-15, के.जी. बोस नगर, गढ़ा, जबलपुर (म.प्र.) 482003 द्वारा अमृत आफसेट, जबलपुर से मुद्रित

सम्पादन संचालन पूर्णत: अवैतनिक, अव्यावसायिक



विवेचन — *रोहिणी अग्रवाल की आलोचना पर केंद्रित*

स्त्री दृष्टि वस्तुत: मनुष्यता की दृष्टि है

शशिभूषण मिश्र

आलोचना किसी 'और' के बहाने अपने भीतर की एक जाँच है और फिर सृजन के जरिए समूचे मनुष्य के साथ जुड़ जाने की चाह। आलोचना अपने ही तलघर की विश्लेषणात्मक शिनाख्त है जो आलोचक की बेख्याली में दबे पाँव बाहर चली आती है और फिर अपने गिरफ्त में ले उसकी 'आँख' बन जाती है। (कहानी का स्त्री समय : रोहिणी अग्रवाल, पृष्ठ -201)

इक्कीसवीं सदी की आलोचना में 'सृजनात्मक भाषा' और 'स्त्री-संवेदी दृष्टि' को पूंजीभूत करते हुए रोहिणी अग्रवाल ने आलोचना का संवादी स्वर निर्मित किया है । आलोचना की भाषा को संवेदनशील बनाने का जो यत्न उन्होंने किया है उससे रचना के मूल्यांकन की नई पगडंडियां फूटती हैं। उनकी नवीनतम आलोचना पुस्तक 'कहानी का स्त्री-समय' इसी यत्न की प्रतिश्रुति है। अपनी दीर्घकालीन प्रतिबद्धता और हस्तक्षेपकारी सक्रियता के साथ इन्होंने 'स्त्री-पुरुष की रूढ़ छवियों' से पोषित आलोचनात्मक मानदंडों को ध्वस्त किया है । उनकी स्पष्ट मान्यता है कि 'पुरुष दृष्टि से आरोपित आलोचनात्मक मानदंडों को ध्वस्त' किए बिना 'स्त्री लेखन की समूची पीड़ा और उम्मीद को', स्त्री लेखन की संघर्षशील परंपरा को, समग्रता समझना संभव नहीं है ।

इस पुस्तक के बहाने उनकी आलोचना दृष्टि के प्रस्थान बिंदुओं पर बात करना, बेहतर होगा। वह मानती हैं कि साहित्य की स्त्री दृष्टि वस्तुत: मनुष्यता की दृष्टि है -स्त्री-विमर्श चूँकि स्त्री अस्मिता को केन्द्र में लाकर उसे 'मनुष्य' रूप में समझे जाने की आवश्यकता पर बल देता है, इसलिए यह अनिवार्य रूप में समाज की विभिन्न संस्थाओं-परिवार, विवाह, धर्म, न्याय, मीडिया और सांस्कृतिक पूर्वाग्रहों को स्त्री के सन्दर्भ में देखता है। (पृष्ठ-12) साहित्य की स्त्री दृष्टि वर्चस्ववादी संरचनाओं का प्रति-पाठ है जो न केवल दृष्टि-दोष का समाधान तलाशती है बल्कि सांस्कृतिक संरचनाओं की स्थापित प्रणाली में बदलाव की जरूरत से हमें रू-ब-रू भी कराती है । इस पूरी पुस्तक में उनका चेतस स्वर गूंजता है और यह गूंज स्त्री जाति की सामूहिक गूंज बन जाती है ।

इस पुस्तक की मनोभूमिका को समझने के लिए आपको चारों खंडों ('विरासत'; 'सदी के आर पार'; 'सारा समकाल'; 'और अंत में') से गुजरना होगा । इन खण्डों के अलावा शुरुआत में 'साहित्य की स्त्री दृष्टि' और अंत में 'अस्मिता की तलाश और अच्छी कहानी की पहचान' को पढ़ते हुए रोहिणी अग्रवाल की कथा दृष्टि के बुनियादी आयामों को चीन्हा जा सकता है। कहानी के पाठ के समानांतर रोहिणी जी 'अपना पाठ' रचती हैं। इस तरह दो पाठों के मेल से एक नया और 'साझा पाठ' निर्मित होता है। कहानी में धँस कर, उसके चरित्रों से मूल्यवान लेनदेन करते हुए 'आलोचकीय पाठ' निर्मित करने और कहानी-संरचना में आलक्षित और दबे रह गए पाठ को सामने लाने में उनका कोई जवाब नहीं। आलोचना में अक्सर ऐसी स्थितियां कम देखने को मिलती हैं- जब कोई आलोचक किसी रचना के पात्रों से संवाद में इस तरह संलग्न दिखाई दे! वह सिर्फ कहानी के पाठ के भीतर ही प्रवेश नहीं करतीं बल्कि उसमें चित्रित पात्रों के 'जीवन-पाठ' से एकाकार हो जाती है; पात्रों की मनोभूमिकाओं का साक्षात्कार करती हैं और इस तरह समाजशास्त्रीय-अर्थशास्त्रीय-सांस्कृतिक दृष्टियों के अंतरानुशासन से एक वृहद और खुले पाठ तक हमें ले जाती हैं।

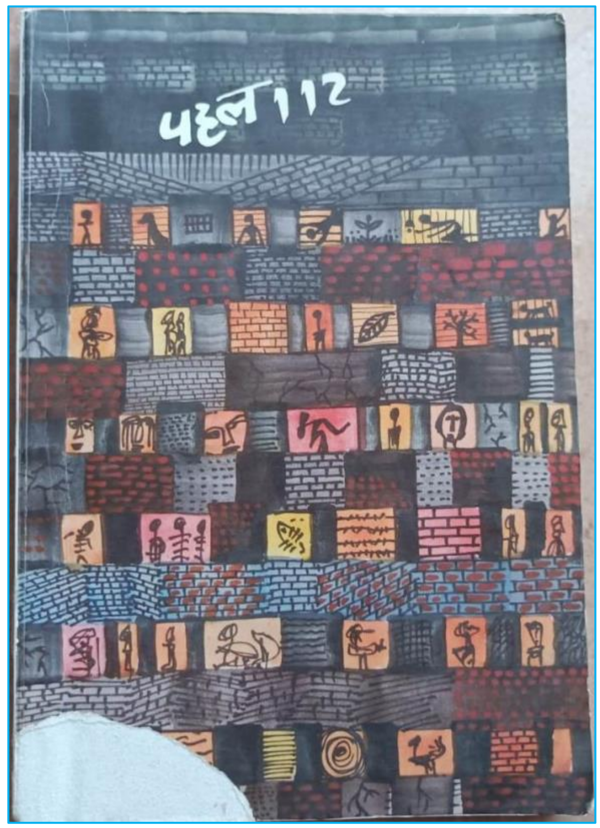
रोहिणी अग्रवाल निर्णयात्मक नहीं, मुखामुखम आलोचना की प्रस्तावक हैं। इस प्रस्तावना में वह स्त्री-संवेदी भाषा से ही नहीं, स्त्री-संवेदी दृष्टि बिंदुओं से पूरी कथा-परंपरा का निचोड़ प्रस्तुत करती हैं। जब वह शिवरानी देवी की स्त्री-चेतना की पहचान करती हैं, उनकी कहानी की नायिकाओं से मुखातिब होती हैं, तब पाती हैं कि शिवरानी देवी की कहानियों की नायिकाएं किसी भी शै से भयभीत होने वाली स्त्रियां नहीं हैं। वह बहुत साहस के साथ प्रेमचंद और शिवरानी देवी के बीच का फर्क तैयार करते हुए इस बात की तस्दीक करती हैं कि शिवरानी देवी का लेखन प्रेमचंद का कंट्रास्ट है; दहेज और अनमोल विवाह जैसी कुप्रथाओं के दुष्परिणामों को लेकर प्रेमचंद 'निर्मला' जैसा भाव विगलित उपन्यास लिखते हैं, वहीं शिवरानी देवी 'साहस' और 'उद्बोधनात्मक सक्रियता' की कहानियाँ लिखती हैं।

हिंसा को मनुष्य-स्वभाव की अन्यतम वृत्ति के रूप में रेखांकित करते हुए रोहिणी जी पारिवारिक और सांस्कृतिक 'शिष्टता के कोमल पाखंड' की खबर लेती हैं । यह देखना दिलचस्प है कि आखिर क्यों पितृसत्ता-पोषित आलोचना ने लगातार सुभद्रा कुमारी चौहान को अनदेखा किया! शिवरानी देवी को अगर प्रेमचंद की पत्नी होने का खामियाजा उठाना पड़ा तो सुभद्रा कुमारी चौहान की संवेदनात्मक शक्ति को 'खूब लड़ी मर्दानी वह तो झांसी वाली रानी' में बांधकर रिड्यूस कर दिया गया। वह सवाल करती हैं कि आखिर क्यों

अन्विति दिसम्बर 2023 — 78

का जो यत्न उन्होंने किया है उसमें रचना के मूल्यांकन की नई पगडंडियाँ फूटती हैं। उनकी नवीनतम आलोचना पुस्तक 'कहानी का स्त्री समय' इसी यत्न की प्रतिश्रुति है। अपनी दीर्घकालीन प्रतिबद्धता और हस्तक्षेपकारी सक्रियता के साथ इन्होंने 'स्त्री-पुरुष की रूढ़ छवियों' से पोषित आलोचनात्मक मानदंडों को ध्वस्त किया है। उनकी स्पष्ट मान्यता है कि 'पुरुष दृष्टि से आरोपित आलोचनात्मक मानदंडों को ध्वस्त' किए बिना 'स्त्री लेखन की समूची पीड़ा और उम्मीद को', स्त्री लेखन की संघर्षशील परम्परा को, समग्रता समझना सम्भव नहीं है।

4.1.15 दृष्टिबोध का उर्वर धरातल



डॉ० शशिभूषण मिश्र इस अलोचनात्मक लेख में लिखते हैं कि हिन्दी कहानी एक सदी की अनुभव-संपन्न यात्रा तय कर नई सदी में दाखिल हो चुकी है। नई सदी के इन दो दसकों को 'कथा के उर्जावान स्त्री-स्वर' के रूप में रेखांकित किया जा सकता है। आज इतनी बड़ी तादाद में महिला कथाकार न केवल रचनाशील हैं वरन कथा के भूगोल में 'नए आनुभूतिक प्रस्थान' निर्मित कर रहीं हैं। इन दो दसकों में जिन स्त्री रचनाकारों ने 'कथा की जमीन' को व्यापक सामाजिक सन्दर्भों में रूपांतरित करने की ठोस पहल की है, उनमें मनीषा कुलश्रेष्ठ एक हैं। इस आलेख के द्वारा मनीषा के प्रकाशित सात कहानी संग्रहों- बौनी होती परछाई, कठपुतलियाँ, कुछ भी तो रूमानी नहीं, केयर ऑफ स्वात घाटी, गन्धर्वगाथा, अनामा और किरदार के माध्यम से उनकी रचनात्मक यात्रा के 'कथा-सूत्रों' को जानने-पहचानने की कोशिश की गई है।

डायरी

* * *





शशि भूषण मिश्र

दृष्टिबोध का उर्वर धरातल

हिन्दी कहानी एक सदी की अनुभव-संपन्न यात्रा तय कर नयी सदी में दाख़िल हो चुकी है। नयी सदी के इन दो दशकों को 'कथा के ऊर्जावान स्त्री-स्वर' के रूप में रेखांकित किया जा सकता है। आज इतनी बड़ी तादाद में महिला कथाकार न केवल रचनाशील हैं वरन कथा के भूगोल में 'नए आनुभूतिक प्रस्थान' निर्मित कर रही हैं। इन दो दशकों में जिन स्त्री रचनाकारों ने 'कथा की ज़मीन' को व्यापक सामाजिक सन्दर्भों में रूपांतरित करने की ठोस पहल की है, उनमें मनीषा कुलश्रेष्ठ एक हैं। इस आलेख के द्वारा मनीषा के प्रकाशित सात कहानी संग्रहों- बौनी होती परछाई, कठपुतलियाँ, कुछ भी तो रूमानी नहीं, केयर ऑफ स्वात घाटी, गंधर्वगाथा, अनामा और किरदार के माध्यम से उनकी रचनात्मक यात्रा के 'कथा-सूत्रों' को जानने-पहचानने की कोशिश की गयी है -

एक - तरक्क़ीपसंद समय में कलाओं का निर्वासन

''तुम एक बहुरूपिए का साथ नहीं निभा सको तो आज़ाद हो बेग़म ज़माना ही बहुरूपिया है, हरेक आदमी एक स्वांग रचे बसा है।''

कितनी पीड़ा और अंतर्वेदना के बाद गफ़ूरिया के भीतर से कढ़े होंगे ये शब्द! एक कलाकार के अंतर्जगत में मानो सब कुछ ठहर-सा गया हो! यहाँ गफ़ूरिया के माथे पर उभरी चिंता की रेखाओं को बहुत साफ़ पढ़ा जा सकता है। परिस्थितियों की विवशता तो देखिए कि जिस कला के द्वारा वह समाज के बहुरूपिएपन को नंगा करता आया है, उसी कला को छोड़ने के लिए उसकी बेग़म जिद ठाने हैं। गफ़ूरिया की इस कसक भरी पीड़ा को राजेश जोशी के शब्दों में कहें तो 'लिखा जाना चाहिए इसे सवाल की तरह' कि कौन बहुरूपिया नहीं है? यह सवाल लोक-कलाकार की अंतर्वेदना को समकाल के ज्वलंत सवालों से नाथ देता है। हिन्दी कथा संसार में ख़ासकर पिछले दो दशकों में विरल हैं 'स्वांग' जैसी संश्लिष्ट

196

पहल - 112

"तुम एक बहुरूपिए का साथ नहीं निभा सको तो आज़ाद हो बेग़म जमाना ही बहुरूपिया है, हरेक आदमी एक स्वांग रचे बसा है।" कितनी पीड़ा और अंतर्वेदना के बाद गफूरिया के भीतर से कढ़े होंगे ये शब्द। एक कलाकार के अंतर्जगत में मानो सबकुछ ठहर-सा गया हो! यहाँ गफूरिया के माथे पर उभरी चिंता की रेखाओं को बहुत साफ़ पढ़ा जा सकता है। परिस्थितियों की विवशता तो देखिए कि जिस कला के द्वारा वह समाज के बहुरूपिएपन को नंगा करता आया है, उसी कला को छोड़ने के लिए उसकी बेग़म जिद ठाने है। गफूरिया की इस कसक भरी पीड़ा को राजेश जोशी के शब्दों में कहें तो 'लिखा जाना चाहिए इसे सवाल की तरह' कि कौन बहुरूपिया नहीं है? यह सवाल लोक-कलाकार की अंतर्वेदना को समकाल के ज्वलन्त सवालों से नाथ देता है।

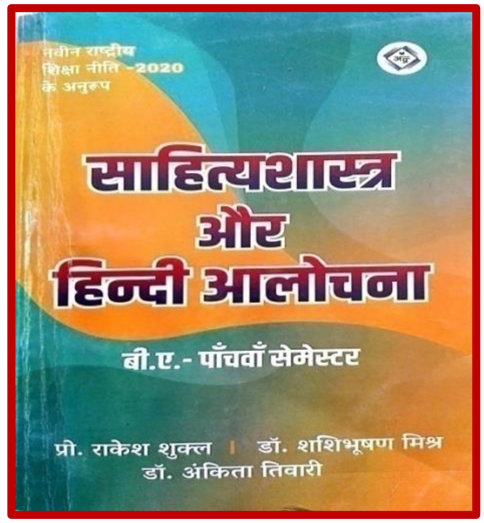
उपर्युक्त के अतिरिक्त डॉ० शशिभूषण मिश्र के आलोचनात्मक लेखों की सूची अत्यन्त वृहद है जिनमें शशिभूषण जी ने अनेक समकालीन विषयों पर आलोचनाएँ लिखीं हैं जो वास्तविकता एवं सत्य के धरातल पर शब्दबद्ध हैं, जिनमें से कुछ का विवरण निम्नलिखित है-

- रेणु की कहानियाँ: राजनीतिक आशय।
- रजनी गुप्त: समय के ताप से मुठभेड़ करती कहानियाँ।
- सत्यनारायण पटेल: कथा की परिवर्तनकारी भूमिका।
- ग्रामीण यथार्थ की गहन पड़ताल 'गाँव भीतर गाँव'।
- कात्यायनी: रणनीतिक प्रतिरोध की कविता।
- जीवन के जख्मों पर मरहम लगाती कहानियाँ।
- कहानी के लोकवृत्त में देशजता का घूसर मुहावरा।
- हदबंदियों से बाहर निकलती स्त्री का सच: 'अन्हियारे तलछट में चमका'।
- कारपोरेट कार्य-संस्कृति और नई सदी की हिन्दी कहानी।
- कहानी संरचना के प्रश्न और इक्कीसवीं सदी।
- मनुष्य और प्रकृति के सहकार को शब्दबद्ध।
- विस्थापन का संकट आदिवासी प्रतिरोध और हिन्दी उपन्यास।
- विकास का राजनीतिक समाजशास्त्र और हाशिए का समाज।
- जीवन की संभावना तलाशती कविताएँ।
- खुरदरे यथार्थ के बीच सम्भावना का उपस्थापन।
- स्फटिक दृढ़ता और प्रतिरोध की कविता।
- कहानी के नए प्रस्थान बिन्दु।

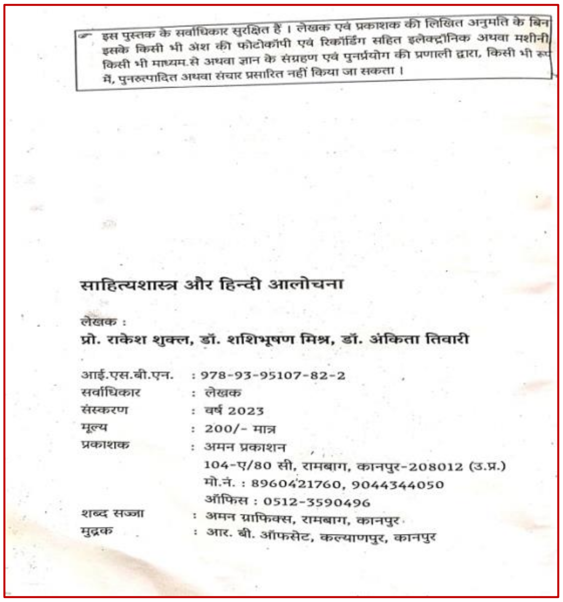
4.2 अन्य प्रकाशित/सम्पादित साहित्य

4.2.1 साहित्य शास्त्र और हिन्दी आलोचना (प्रकाशित पुस्तक)

डॉ० शशिभूषण मिश्र ने यह पुस्तक प्रो० राकेश शुक्ल एवं डॉ० अंकिता तिवारी जी के सहयोग से लिखी है। यह पुस्तक नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 के अनुरूप बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय सहित उत्तर प्रदेश सरकार के समस्त राज्य विश्वविद्यालयों एवं महाविद्यालयों हेतु एकीकृत हिन्दी पाठ्यक्रमानुसार बी०ए० पंचम सेमेस्टर में संचालित है तथा अमन प्रकाशन, कानपुर से प्रकाशित है।



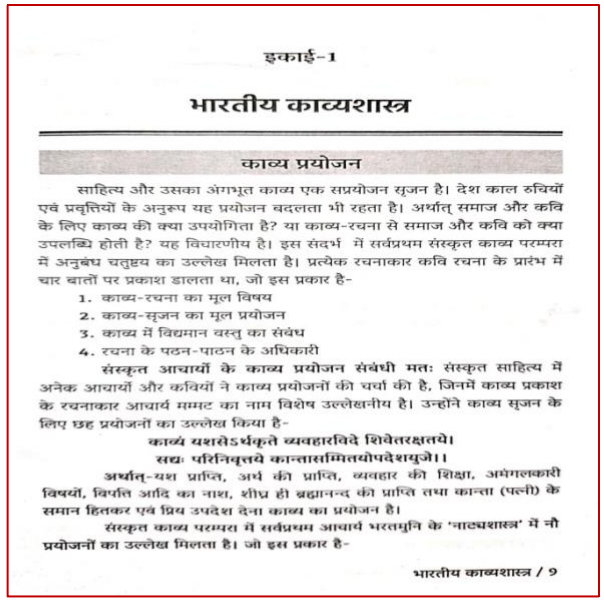
इस पुस्तक में भारतीय काव्यशास्त्र (काव्य प्रयोजन, काव्य लक्षण, काव्य हेतु, काव्य का स्वरुप तथा काव्य की आत्मा), भारतीय काव्य सिद्धांत (अलंकार सिद्धांत, रीति सिद्धांत, रस सिद्धांत, ध्वनि सिद्धांत, वक्रोक्ति सिद्धांत, औचित्य सिद्धांत), साहित्यशास्त्रीय अवाधाराणाएँ (काव्य रूप, काव्य गुण, शब्द शक्ति तथा काव्य दोष), नाट्यशास्त्र (भारतीय नाट्यशास्त्र का सामान्य परिचय, वृत्ति, अभिनय, रूपक कथा, नेता या नायक, नायिका तथा रंगमंचीय विशेषताएँ), पाश्चात्य काव्यशास्त्र (अरस्तू, कॉलरिज, वर्ड्सवर्थ तथा टी०एस०इलियट के सिद्धांत), हिन्दी आलोचना का इतिहास तथा सैद्धांतिकी (हिन्दी आलोचना का विकास, सैद्धांतिक आलोचना, स्वच्छन्दतावादी आलोचना, मार्क्सवादी आलोचना तथा मनोविश्लेषणवादी आलोचना), समीक्षा की विचारधाराएँ (नई समीक्षा, नव शास्त्रवाद, यथार्थवाद, आभिजात्यवाद, नव्य आभिजात्यवाद, कलावाद, बिम्बवाद, प्रतीकवाद, संरचनावाद, उत्तर संरचनावाद तथा विखंडन), आलोचक एवं आलोचना दृष्टि (रामचन्द्र शुक्ल: काव्य में लोकमंगल, प्रेमचन्द्र: साहित्य का उद्देश्य, जय शंकर प्रसाद: छायावाद और यथार्थवाद, हजारी प्रसाद द्विवेदी: आधुनिक साहित्य- नई मान्यताएँ, राम विलास वर्मा: तुलसी साहित्य में सामन्त विरोधी मूल्य, नामवर सिंह: नई और पुरानी तथा मुक्तिबोध: नई कविता का आत्मसंघर्ष) पर विस्तार से चर्चा की गई है जो विभिन्न राज्य विश्वविद्यालयों तथा महाविद्यालयों में अध्यनरत विद्यार्थियों, साहित्य प्रेमियों तथा शोधार्थियों के लिए उपयोगी पुस्तक है।



साहित्यशास्त्र और हिन्दी आलोचना

लेखक :
प्रो. राकेश शुक्ल, डॉ. शशिभूषण मिश्र, डॉ. अंकिता तिवारी

आई.एस.बी.एन.	: 978-93-95107-82-2
सर्वाधिकार	: लेखक
संस्करण	: वर्ष 2023
मूल्य	: 200/- मात्र
प्रकाशक	: अमन प्रकाशन 104-ए/80 सी, रामबाग, कानपुर-208012 (उ.प्र.) मो.नं. : 8960421760, 9044344050 ऑफिस : 0512-3590496
शब्द सज्जा	: अमन ग्राफिक्स, रामबाग, कानपुर
मुद्रक	: आर. बी. ऑफसेट, कल्याणपुर, कानपुर



इकाई-1

भारतीय काव्यशास्त्र

काव्य प्रयोजन

साहित्य और उसका अंगभूत काव्य एक सप्रयोजन सृजन है। देश काल रुचियों एवं प्रवृत्तियों के अनुरूप यह प्रयोजन बदलता भी रहता है। अर्थात् समाज और कवि के लिए काव्य की क्या उपयोगिता है? या काव्य-रचना से समाज और कवि को क्या उपलब्धि होती है? यह विचारणीय है। इस संदर्भ में सर्वप्रथम संस्कृत काव्य परम्परा में अनुबंध चतुष्टय का उल्लेख मिलता है। प्रत्येक रचनाकार कवि रचना के प्रारंभ में चार बातों पर प्रकाश डालता था, जो इस प्रकार है-

1. काव्य-रचना का मूल विषय
2. काव्य-सृजन का मूल प्रयोजन
3. काव्य में विद्यमान वस्तु का संबंध
4. रचना के पठन-पाठन के अधिकारी

संस्कृत आचार्यों के काव्य प्रयोजन संबंधी मतः संस्कृत साहित्य में अनेक आचार्यों और कवियों ने काव्य प्रयोजनों की चर्चा की है, जिनमें काव्य प्रकाश के रचनाकार आचार्य मम्मट का नाम विशेष उल्लेखनीय है। उन्होंने काव्य सृजन के लिए छह प्रयोजनों का उल्लेख किया है-

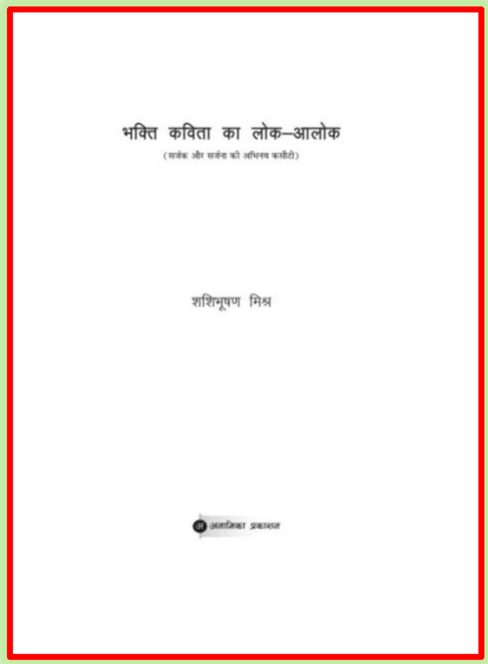
काव्यं यशसेऽर्थकृते व्यवहारविदे शिवेतरक्षतये।
सद्यः परिनिवृत्तये कान्तासम्मितयोपदेशयुजे।।

अर्थात्-यश प्राप्ति, अर्थ की प्राप्ति, व्यवहार की शिक्षा, अमंगलकारी विषयों, विपत्ति आदि का नाश, शीघ्र ही ब्रह्मानन्द की प्राप्ति तथा कान्ता (पत्नी) के समान हितकर एवं प्रिय उपदेश देना काव्य का प्रयोजन है।

संस्कृत काव्य परम्परा में सर्वप्रथम आचार्य भरतमुनि के 'नाट्यशास्त्र' में नौ प्रयोजनों का उल्लेख मिलता है। जो इस प्रकार है-

भारतीय काव्यशास्त्र / 9

4.2.2 भक्ति कविता का लोक-आलोक (प्रकाशित पुस्तक)



डॉ० शशिभूषण मिश्र द्वारा लिखित यह आलोचनात्मक पुस्तक भक्ति कविता की मजबूती तथा मानवतावादी भावना को प्रकाश में लाती है। डॉ० शशिभूषण मिश्र कहते हैं कि भक्ति कविता की रचना-भूमि निजी के समानान्तर सामूहिकता के उर्वर तत्वों से बनी है। इस जमीन को हम जितनी बार खोदते-गोड़ते हैं; उतनी ही बार संभावनाओं की नई कोपलें फूट पड़ती हैं। भक्ति कविता जन-जीवन के भीतर चलने वाले असंख्य अन्तर्द्वन्दों-तनावों, प्रश्नाकुलताओं, विभ्रमों-विभीषिकाओं, निराशाओं-आकांक्षाओं की साक्षी रही है। भक्ति कालीन रचनाकारों ने अपने अनुभव, अनुभूति के बल पर युग-सत्य को रचना-कर्म में ढालने की कोशिश की है। सृजन की इस भट्टी में पूरा युग खौलता है- उससे निकला गाढ़ा अनुभव हमारी स्मृति को नई चमक देता है।

भक्ति कविता के विभिन्न आयामों (मानवतावादी भावना, मानवीय मूल्य, सांस्कृतिक अध्ययन पद्धति, लोकानुभवों आदि) पर बातचीत करनी होगी। आज जिस तरह सीमाओं के लिए विभिन्न राष्ट्रों के बीच संघर्ष चल रहे हैं, दुनिया को युद्ध की विभीषिका में धकेल दिया गया है, उसके मद्देनजर-भक्ति कविता की मानवतावादी सोंच से प्रेरणा लेने की जरुरत है। भक्ति साहित्य सरहदों की छद्म दीवारों को अस्वीकार करता है, वह राष्ट्र-राज्य के परे जाकर समूची मानव जाति के कल्याण की चेष्टा करता है। आज जहाँ हम गुटबंदियों में सिमट कर रह गए है वहीं भक्ति साहित्य विभिन्न विरोधी विचारधाराओं का मनुष्यता की शर्त पर एकीकरण करता है। भक्ति साहित्य मनुष्यता का भाव-विस्तार कर सहकारिता जैसे मूल्यों की प्रतिष्ठा करता है। इन सहकारी मूल्यों की आज के समय में बहुत आवश्यकता है। भक्ति कविता की मनोभूमिका में प्रभुता से दूर शरणागत भक्त की चित्तवृत्तियाँ ही सक्रिय दिखाई देती हैं। सत्ता विमर्श के अन्तर्गत इन स्थापनाओं की नोटिस ली जानी जरुरी है। यह पुस्तक इन्हीं प्रयासों की प्रतिश्रुति है।

इस पुस्तक में भक्ति साहित्य में अभिव्यक्त समाज एवं संस्कृति, नए विमर्शों के अलोक में भक्ति साहित्य, भक्ति साहित्य के पुनर्मूल्यांकन का प्रश्न और इतिहासकारों की भूमिका, भक्ति साहित्य: चिन्तन के नए आयाम तथा भक्ति कविता के लोक-आलोक पर दृष्टिपात किया गया है।



पुस्तक के सर्वाधिकार सुरक्षित हैं। प्रकाशक/लेखक की लिखित अनुमति के बिना इसके किसी भी अंश को, किसी भी माध्यम से प्रयोग नहीं किया जा सकता।

भक्ति कविता का लोक-आलोक
© शशिभूषण मिश्र 2024

प्रकाशक
अनामिका प्रकाशन
52 तुलारामबाग, प्रयागराज-211006
फोन : 9415347186, 9264945248
e-mail : anamikabooks@gmail.com
vinodshukla185@gmail.com

मुद्रक
MTL, Manipal

टाईप सेटिंग एवं लेआउट
मानस कम्प्यूटर्स, प्रयागराज

मूल्य : रु0 450

प्रथम संस्करण : 2024
ISBN : 978-93-90683-



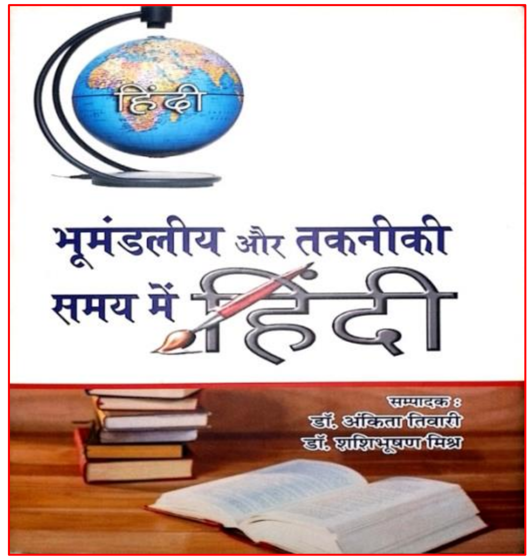
भक्ति-साहित्य में अभिव्यक्त समाज एवं संस्कृति

समाज एवं संस्कृति के अन्तःसम्बन्धों की पहचान भक्ति आन्दोलन की केन्द्रीय चिंताओं में से एक है। भक्ति साहित्य जहां एक ओर लोक जीवन से शक्ति पाता है वहीं दूसरी ओर सामजिक विकृतियों का प्रतिपाठ रचता है। जाति-पांति, ऊँच-नीच का विरोध करने तथा भेदभाव और अन्याय से बनी व्यवस्था का प्रतिपक्ष रचने में भक्ति काव्य की युगांतकारी भूमिका रही है। सामाजिक अंतर्वस्तु में बदलाव और परिवर्तन के लिए संतो की सक्रियता देखते बनती है। इनका उद्देश्य ऐसे जीवन मूल्यों का प्रतिपादन करना था जिससे पुरोहितवाद, पुराणवाद, यज्ञवाद, कर्मकाण्डवाद आदि के चलन को कम किया जा सके। अपमानित जीवन जीने को अभिशप्त निचले वर्ग में आत्मविश्वास पैदा करने और विश्वास को कायम रखने के लिए संतो ने विभिन्न स्थानों का भ्रमण किया और जनता तक अपने सन्देश पहुंचाते रहे। इन संत रचनाकारों ने अपने चिंतन और साहित्य से भारतीय समाज एवं संस्कृति के इस सत्य को ध्वनित किया कि ईश्वर के समक्ष न कोई छोटा है न कोई बड़ा है बल्कि उसकी नजर में सभी मनुष्य बराबर हैं। समतामूलक दृष्टि के द्वारा समाज में परिवर्तन लाने के लिए संतों ने व्यक्तिगत और सामाजिक स्तर पर कई प्रयास किए। इन संतों की संघर्ष क्षमता के नाते ही भक्ति कविता के भीतर अपने समय के असहज सवालों से जद्दोजहद करने की क्षमता विकसित होती है।

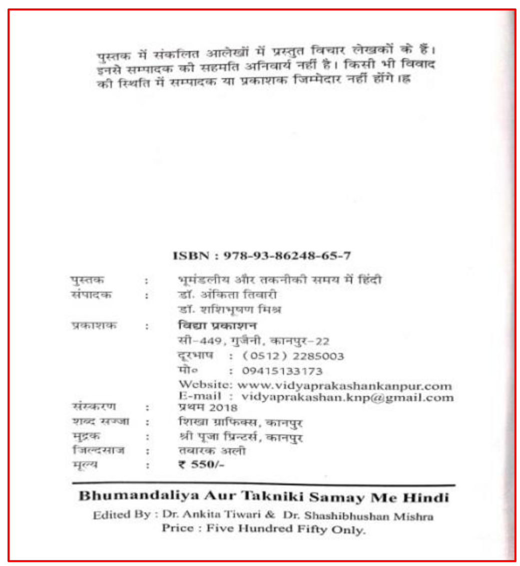
जातीय चेतना के विकास में भक्ति साहित्य ने भारतीय जनता में एक नये बोध को जन्म दिया और जीने-समझने की समतामूलक दृष्टि प्रदान की। वह आम अवाम की अभिरुचियों का संवाहक है। वह जातीयता के विकास का उत्स है। इस आन्दोलन से निकले कवि हमारी जातीय स्मृति में एक नई चमक पैदा करते हैं। भक्तिकाव्य का संदेश एक ओर जहां मुक्ति और निर्वाण चिंतन को चुनौती था, वहीं दूसरी ओर इस लोक की महिमा को परलोक के सामने मजबूती से स्थापित करना था। जीवन के सम्बन्ध में उनकी विचारधारा थी कि - संसार मिथ्या नहीं है। वह

शशिभूषण मिश्र || 15

4.2.3 भूमंडलीय और तकनीकी समय में हिन्दी (सम्पादित पुस्तक)



डॉ० शशिभूषण मिश्र ने डॉ० अंकिता तिवारी के साथ मिलकर भूमंडलीय और तकनीकी समय में हिन्दी पुस्तक का सम्पादन किया है जो विद्या प्रकाशन, गुजैनी कानपुर उत्तर प्रदेश से प्रकाशित है। डॉ० शशिभूषण मिश्र कहते हैं कि इस पुस्तक में हिन्दी कविता का भविष्य कैसा हो? पर तथा कम्प्यूटर में हिन्दी की भूमिका पर विभिन्न शोध आलेखों को प्रकाशित किया गया है। हिन्दी का विकास हो-हल्ला करने तथा राजनीति करने से नहीं होगा बल्कि हिन्दी का विकास तब होगा जब हम उसे तकनीकी से समृद्ध बनाएँगे जिसका उल्लेख सम्पादकीय में डॉ० शशिभूषण मिश्र ने किया है।



पुस्तक में संकलित आलेखों में प्रस्तुत विचार लेखकों के हैं। इनसे सम्पादक की सहमति अनिवार्य नहीं है। किसी भी विवाद की स्थिति में सम्पादक या प्रकाशक जिम्मेदार नहीं होंगे।ह

ISBN : 978-93-86248-65-7

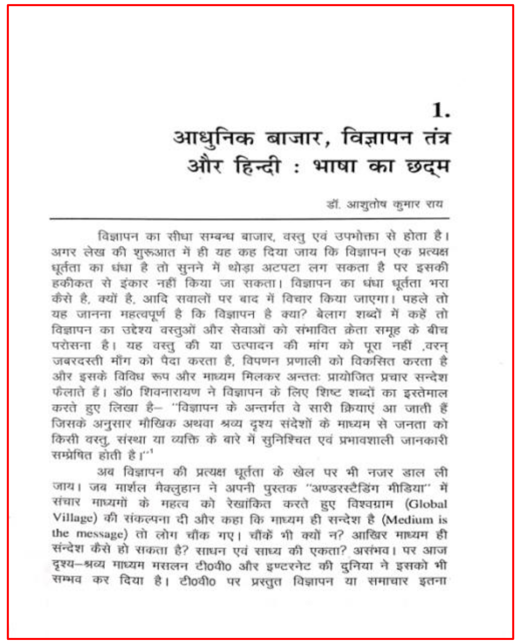
पुस्तक : भूमंडलीय और तकनीकी समय में हिंदी
संपादक : डॉ. अंकिता तिवारी
डॉ. शशिभूषण मिश्र
प्रकाशक : विद्या प्रकाशन
सी-449, गुजैनी, कानपुर-22
दूरभाष : (0512) 2285003
मो० : 09415133173
Website: www.vidyaprakashankanpur.com
E-mail : vidyaprakashan.knp@gmail.com
संस्करण : प्रथम 2018
शब्द सज्जा : शिखा ग्राफिक्स, कानपुर
मुद्रक : श्री पूजा प्रिन्टर्स, कानपुर
जिल्दसाज : तबारक अली
मूल्य : ₹ 550/-

Bhumandaliya Aur Takniki Samay Me Hindi
Edited By : Dr. Ankita Tiwari & Dr. Shashibhushan Mishra
Price : Five Hundred Fifty Only.

सभ्यता के हर दौर में एक भाषा में दूसरी भाषा के नए शब्द शामिल होते रहे हैं। यह एक अंतहीन प्रक्रिया है। हिन्दी भी ऐसी ही भाषा है जिसने कई पुराने पड़ चुके शब्दों को छोड़ नए शब्दों को आत्मसात किया है। 'शुद्ध भाषा' का आग्रह लेकर हिन्दी को आगे नहीं बढ़ाया जा सकता, क्योंकि 'शुद्ध' भाषा जैसी कोई अवधारणा नहीं होती। आप हिन्दी का कोई वाक्य उठाकर देख लीजिए उसमें एक भी शब्द ऐसा नहीं मिलेगा जो कहीं और से न आया हो। या तो वह संस्कृत से आया है या अन्य भारतीय भाषाओं से या फिर अरबी, फारसी, पुर्तगाली आदि भाषाओं से। भाषा ऐसे ही बनती है।

पिछले दो दशकों में हिन्दी में अंग्रेजी के शब्दों का जिस तरह प्रचलन बढ़ा है उसे लेकर काफी बहसें हुई हैं। हिन्दी की साहित्यिक बिरादरी और भाषा अध्येताओं ने इसको लेकर अपनी चिंताएं भी जाहिर की हैं।

जहाँ तक अंग्रेजी के शब्दों के प्रचलन की बात है वहाँ अगर किसी कम प्रयोग में लाए जाने वाले हिन्दी के शब्द की जगह ऐसा कोई शब्द मिल जाए जो बोलने में भी आसान और सहज हो तथा लिखने में भी सरल हो तो उसे अपनाने में कोई दिक्कत नहीं है। इसमें इतनी चिंता की जरूरत नहीं है। हिन्दी में नए शब्द अपनाने की प्रक्रिया को भाषाई अस्मिता के सवाल से भी जोड़ना उपयुक्त नहीं है। क्या अंग्रेजी नहीं बदली है! आज जो अंग्रेजी लिखी और बोली जा रही वह पहले की अंग्रेजी से बहुत बदली हुई है। उसे लिखने का तरीका बदला है, बोलने का एक्सेंट बदला है।



1.

आधुनिक बाजार, विज्ञापन तंत्र और हिन्दी : भाषा का छद्म

डॉ. आशुतोष कुमार राय

विज्ञापन का सीधा सम्बन्ध बाजार, वस्तु एवं उपभोक्ता से होता है। अगर लेख की शुरूआत में ही यह कह दिया जाय कि विज्ञापन एक प्रत्यक्ष धूर्तता का धंधा है तो सुनने में थोड़ा अटपटा लग सकता है पर इसकी हकीकत से इंकार नहीं किया जा सकता। विज्ञापन का धंधा धूर्तता भरा कैसे है, क्यों है, आदि सवालों पर बाद में विचार किया जाएगा। पहले तो यह जानना महत्वपूर्ण है कि विज्ञापन है क्या? बेलाग शब्दों में कहें तो विज्ञापन का उद्देश्य वस्तुओं और सेवाओं को संभावित क्रेता समूह के बीच परोसना है। यह वस्तु की या उत्पादन की मांग को पूरा नहीं ,वरन् जबरदस्ती माँग को पैदा करता है, विपणन प्रणाली को विकसित करता है और इसके विविध रूप और माध्यम मिलकर अन्ततः प्रायोजित प्रचार सन्देश फैलाते हैं। डॉ० शिवनारायण ने विज्ञापन के लिए शिष्ट शब्दों का इस्तेमाल करते हुए लिखा है– "विज्ञापन के अन्तर्गत वे सारी क्रियाएं आ जाती हैं जिसके अनुसार मौखिक अथवा श्रव्य दृश्य संदेशों के माध्यम से जनता को किसी वस्तु, संस्था या व्यक्ति के बारे में सुनिश्चित एवं प्रभावशाली जानकारी सम्प्रेषित होती है।"[1]

अब विज्ञापन की प्रत्यक्ष धूर्तता के खेल पर भी नजर डाल ली जाय। जब मार्शल मैक्लुहान ने अपनी पुस्तक "अण्डरस्टैंडिंग मीडिया" में संचार माध्यमों के महत्व को रेखांकित करते हुए विश्वग्राम (Global Village) की संकल्पना दी और कहा कि माध्यम ही सन्देश है (Medium is the message) तो लोग चौंक गए। चौंकें भी क्यों न? आखिर माध्यम ही संन्देश कैसे हो सकता है? साधन एवं साध्य की एकता? असंभव। पर आज दृश्य–श्रव्य माध्यम मसलन टी०वी० और इण्टरनेट की दुनिया ने इसको भी सम्भव कर दिया है। टी०वी० पर प्रस्तुत विज्ञापन या समाचार इतना

अगर हम हिन्दी को वैश्विक परिदृश्य में व्यापक स्वीकृति वाली भाषा के रूप में देखना चाहते हैं तो हमें जरूरी बदलाव स्वीकार करने होंगे। बहरहाल हमें इस स्वीकार के साथ इस बुनियादी बात पर भी विचार करना होगा की भूमंडलीकरण की आड़ में जिस भाषाई साम्राज्यवाद की नीति को आगे बढ़ाया जा रहा है, उसे कैसे रोका जाये क्योंकि भाषा एक ऐतिहासिक, सामाजिक और सांस्कृतिक संरचना है। दरअसल भाषाई साम्राज्यवाद केवल भाषाई नहीं होता, वह आर्थिक, राजनीतिक और सांस्कृतिक साम्राज्यवाद से अभिन्न रूप से जुड़ा हुआ होता है। इसलिए इस विषय पर गम्भीर विचार विमर्श की जरूरत है।

भाषा केवल संवाद का माध्यम भर नहीं होती वह ज्ञानोत्पादन का माध्यम भी होती है। लेकिन हिन्दी ज्ञानोत्पादन के मामले में अभी अंग्रेजी की बराबरी में नहीं आयी है। जिस दिन वह इस बराबरी पर आ जाएगी उसे अपने आप वैश्विक स्वीकृति मिल जाएगी। सबसे गंभीर चिंता की बात यह है कि हिन्दी पट्टी में हिन्दी में ज्ञानोत्पादन को लेकर कोई बेचैनी नहीं दिखाई देती। यह भी विचारणीय है कि मानविकी, समाज विज्ञान और विज्ञान के विषयों में हिन्दी में पठन-पाठन के लिए उपयुक्त माहौल बने।

तकनीक ने हिन्दी भाषा को नया विस्तार दिया है। यह तथ्य है कि हिन्दी ने तकनीक के साथ मित्रवत साझेदारी की है और अपने को उसके अनुरूप ढालने की कोशिश की है। हिन्दी के वैश्वीकरण में तकनीक और

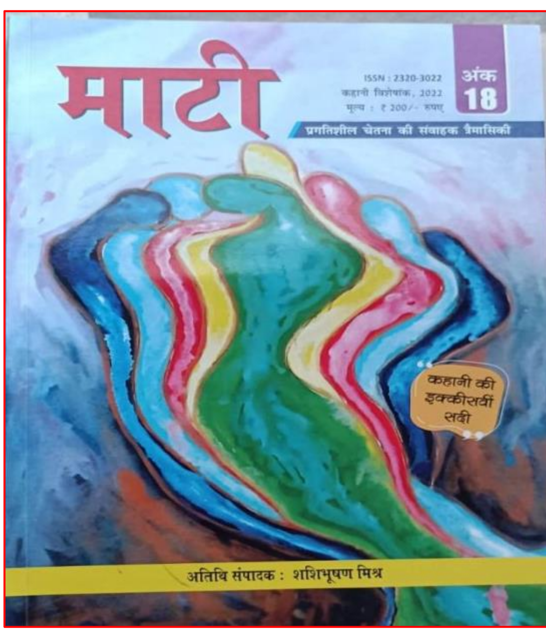
प्रौद्योगिकी ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। अंग्रेजी की व्यापकता को तकनीक से जोड़कर देखा जाता है पर क्या हमें यह नहीं समझना चाहिए कि तकनीक सभी भाषाओं के लिए समानरूप से उपयोगी होती है। जो जितना प्रयोग करेगा वह उतना सफल होगा। अंग्रेजी बोलने वालों ने इतने प्रयोग किये इसीलिए अंग्रेजी इतनी सफल हुई। हमें उससे आतंकित होने की बजाय सीखना चाहिए।

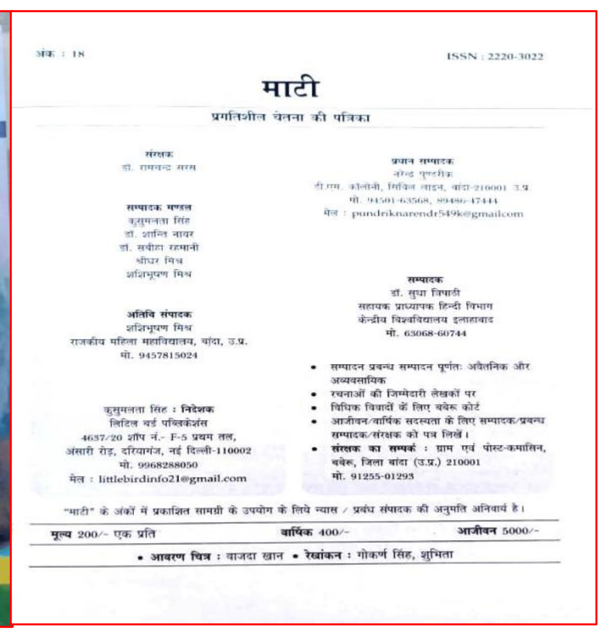
अनुवाद और प्रूफ की समस्या हिन्दी के समक्ष बड़ी चुनौतियाँ हैं जिनके प्रति हिन्दी वालों को सचेत रहना पड़ेगा। अंग्रेजी के अखबार और चैनल अपनी भाषा के प्रति जितने सजग हैं, हिन्दी के अखबारों और चैनलों में ऐसी सजगता नहीं दिखती। इन मुद्दों पर मंथन करने की आवश्यकता है।

'भूमंडलीय और तकनीकी समय में हिन्दी' विषय पर आयोजित दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी में इन सभी मुद्दों पर व्यापक विचार-विमर्श किया गया। इस पुस्तक में संकलित आलेख संगोष्ठी में प्राध्यापकों एवं शोधार्थियों द्वारा प्रस्तुत किए गए शोध पत्रों पर आधारित है।

4.2.4 माटी (सम्पादित पत्रिका)

डॉ० शशिभूषण मिश्र ने केदार स्मृति न्यास बाँदा से प्रकाशित माटी पत्रिका (प्रगतिशील चेतना की पत्रिका) के कहानी विशेषांक (2022) अंक 18 का अतिथि सम्पादक के रूप में सम्पादन किया है। माटी के प्रधान सम्पादक नरेन्द्र पुण्डरीक, बाँदा हैं।




अंक : 18 ISSN : 2220-3022

माटी

प्रगतिशील चेतना की पत्रिका

संरक्षक
डॉ. रामचन्द्र सरस

सम्पादक मण्डल
कुसुमलता सिंह
डॉ. शान्ति नायर
डॉ. सबीहा रहमानी
श्रीधर मिश्र
शशिभूषण मिश्र

अतिथि संपादक
शशिभूषण मिश्र
राजकीय महिला महाविद्यालय, बांदा, उ.प्र.
मो. 9457815024

कुसुमलता सिंह : **निदेशक**
लिटिल बर्ड पब्लिकेशंस
4637/20 शॉप नं.- F-5 प्रथम तल,
अंसारी रोड, दरियागंज, नई दिल्ली-110002
मो. 9968288050
मेल : littlebirdinfo21@gmail.com

प्रधान सम्पादक
नरेन्द्र पुण्डरीक
डी.एम. कॉलोनी, सिविल लाइन, बांदा-210001 उ.प्र.
मो. 94501-63568, 89486-17444
मेल : pundriknarendr549k@gmailcom

सम्पादक
डॉ. सुधा त्रिपाठी
सहायक प्राध्यापक हिन्दी विभाग
केन्द्रीय विश्वविद्यालय इलाहाबाद
मो. 63068-60744

- सम्पादन प्रबन्ध सम्पादन पूर्णतः अवैतनिक और अव्यवसायिक
- रचनाओं की जिम्मेदारी लेखकों पर
- विधिक विवादों के लिए बबेरू कोर्ट
- आजीवन/वार्षिक सदस्यता के लिए सम्पादक/प्रबन्ध सम्पादक/संरक्षक को पत्र लिखें।
- **संरक्षक का सम्पर्क** : ग्राम एवं पोस्ट-कमासिन, बबेरू, जिला बांदा (उ.प्र.) 210001 मो. 91255-01293

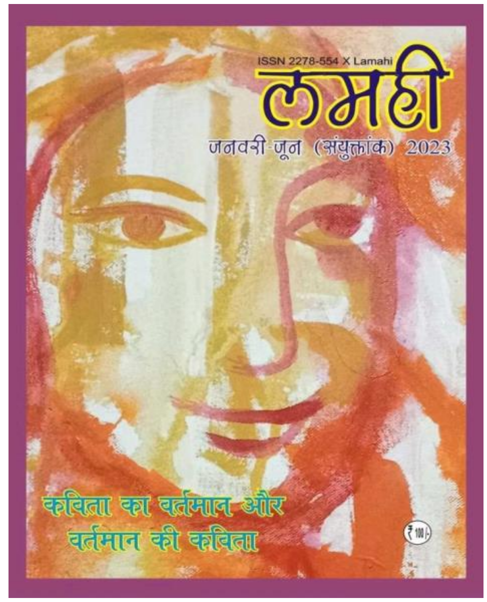
"माटी" के अंकों में प्रकाशित सामग्री के उपयोग के लिये न्यास / प्रबंध संपादक की अनुमति अनिवार्य है।

मूल्य 200/- एक प्रति **वार्षिक** 400/- **आजीवन** 5000/-

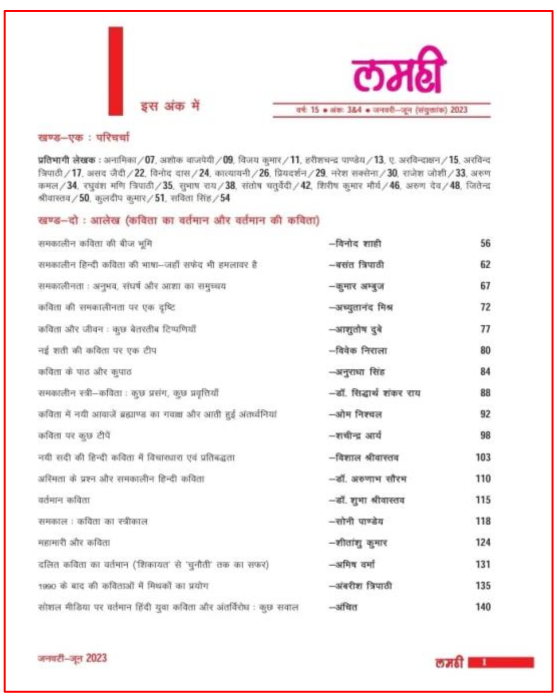
• **आवरण चित्र** : वाजदा खान • **रेखांकन** : गोकर्ण सिंह, शुभिता

4.2.5 लमही (सम्पादित पत्रिका)

डॉ० शशिभूषण मिश्र द्वारा सम्पादित विवेक खण्ड, गोमती नगर, लखनऊ से प्रकाशित होने वाली तथा मुंशी प्रेमचन्द्र के गाँव के नाम से निकलने वाली यू०जी०सी० केयर लिस्टेड पत्रिका 'लमही' है। 'लमही' के तीन अंकों का डॉ० शशिभूषण मिश्र ने अतिथि सम्पादक के रूप में सम्पादन किया है।



'लमही' का जनवरी-जून (संयुक्तांक) 2023 'कविता का वर्तमान और वर्तमान की कविता' अंक 50 वर्षों की '*कविता की प्रवृत्तियों'* पर था जिसमें खण्ड-एक में 25 प्रसिद्ध कवियों के साक्षात्कार हैं तथा खण्ड-दो में नई सदी की कविता सन 1990 से लेकर अद्यतन लगभग तीन दशकों की कविता से सम्बन्धित 42 शोध आलेख प्रकाशित हैं।



इस अंक में

लमही

वर्ष: 15 • अंक: 3&4 • जनवरी–जून (संयुक्तांक) 2023

खण्ड–एक : परिचर्चा

खण्ड–दो : आलेख (कविता का वर्तमान और वर्तमान की कविता)

जनवरी–जून 2023 लमही 1



आवरण प्रथम, द्वितीय, तृतीय व चतुर्थ : शीला शर्मा

प्रधान संपादक* ☐ विजय राय
संपादक* ☐ ऋत्विक राय
संयुक्त संपादक* ☐ ऋतिका ☐ वत्सल कक्कड़
इस अंक के अतिथि संपादक* ☐ शशिभूषण मिश्र

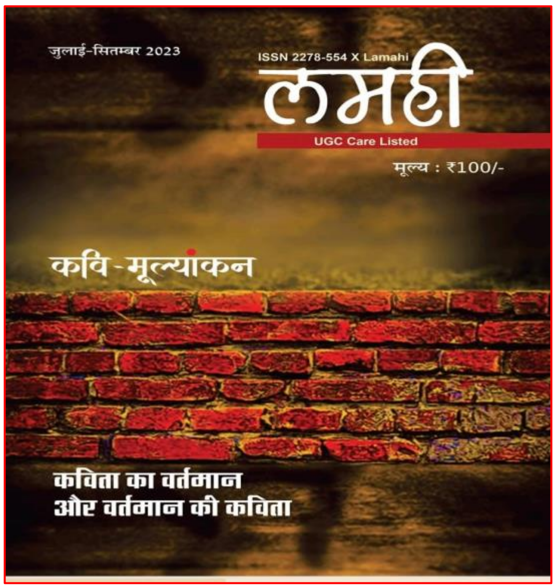
संपादकीय एवं व्यवस्थापकीय संपर्क
3@343, विवेक खण्ड, गोमती नगर लखनऊ–226010
ईमेल : vijairai.lamahi@gmail.com, मो० : 9454501011
इस अंक का मूल्य : 100/– रुपये मात्र

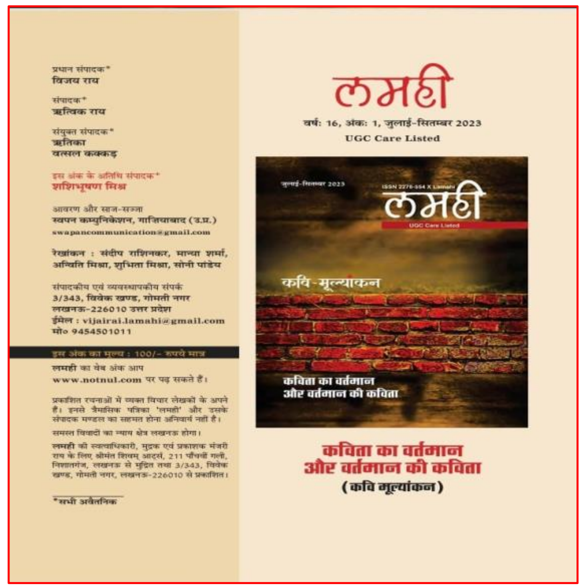
"लमही का वेब अंक आप Not Nul (www.notnul.com) पर पढ़ सकते हैं।"

"लमही" की स्वत्वाधिकारी, मुद्रक एवं प्रकाशक मंजरी राय के लिए श्रीमंत शिवम् आर्ट्स, 211 पाँचवीं गली, निशातगंज, लखनऊ से मुद्रित तथा 3/343, विवेक खण्ड, गोमती नगर, लखनऊ-226010 से प्रकाशित।
संपादक–ऋत्विक राय*
वर्ष: 15 • अंक: 3&4 • जनवरी–जून (संयुक्तांक) 2023

2 लमही जनवरी–जून 2023

'लमही' के जुलाई-सितम्बर 2023 के इस अंक में 150 कवियों का एक साथ मूल्यांकन 'कवि मूल्यांकन' शीर्षक के अन्तर्गत किया गया है। डॉ० शशिभूषण मिश्र कहते हैं कि पहली बार हिन्दी कविता में किसी पत्रिका ने 150 कवियों का एक साथ मूल्यांकन किया है जिसमें आलोचनात्मक लेख हों। देश के तमाम विश्वविद्यालयों में इसकी पी०डी०एफ० प्रतियाँ भेजी गईं। डॉ० शशिभूषण मिश्र ने अतिथि सम्पादक के रूप में इस अंक का भी सम्पादन किया है।







लमही का अक्टूबर-दिसम्बर 2023 से जनवरी-मार्च 2024 के अंक में 'स्त्री कविता की जमीन और कविता का वर्तमान' शीर्षक के अन्तर्गत 125 स्त्री कवियों की कविताई पर सात खण्डों में सामग्री प्रकाशित हुई जिसका अतिथि सम्पादन डॉ० शशिभूषण मिश्र ने किया। डॉ० शशिभूषण मिश्र कहते है कि देश में पहली बार 125 स्त्री कवियों की कविताओं पर कोई अंक आया। देश के विभिन्न विश्वविद्यालयों ने इसका संज्ञान लेकर अपने

पाठ्यक्रमों की सन्दर्भ पुस्तकों/पत्रिकाओं के रूप में शामिल किया। यह देश के शोधार्थियों के लिए विशेष तौर पर काम आने वाला अपरिहार्य अंक बना क्योंकि उनके पास ऐसी कोई पुस्तक/पत्रिका नहीं थी जिसमें समग्र कविता और स्त्रियों की कविताओं को भी देखा जा सके।


प्रधान संपादक*
विजय राय
संपादक*
ऋत्विक राय
संयुक्त संपादक*
ऋतिका
वत्सल कक्कड़
इस अंक के अतिथि संपादक*
शशिभूषण मिश्र
आवरण और साज-सज्जा
स्वपन कम्युनिकेशन, गाजियाबाद (उ.प्र.)
swapancommunication@gmail.com
रेखांकन : अनुप्रिया, शशिभूषण बडोनी
संपादकीय एवं व्यवस्थापकीय संपर्क
3/343, विवेक खण्ड, गोमती नगर
लखनऊ-226010 उत्तर प्रदेश
ईमेल : vijairai.lamahi@gmail.com
मो० 9454501011
इस अंक का मूल्य : 100/-रुपये मात्र
लमही का येब अंक आप www.notnul.com पर पढ़ सकते हैं।
*सभी अवैतनिक

लमही
वर्षः 16, अंकः 2-3, अक्टूबर-दिसम्बर 2023 से जनवरी-मार्च 2024
UGC Care Listed


लमही
वर्षः 16, अंकः 2-3, अक्टूबर-दिसम्बर 2023 से जनवरी-मार्च 2024
इस अंक में

स्त्री कविता की ज़मीन और कविता का वर्तमान

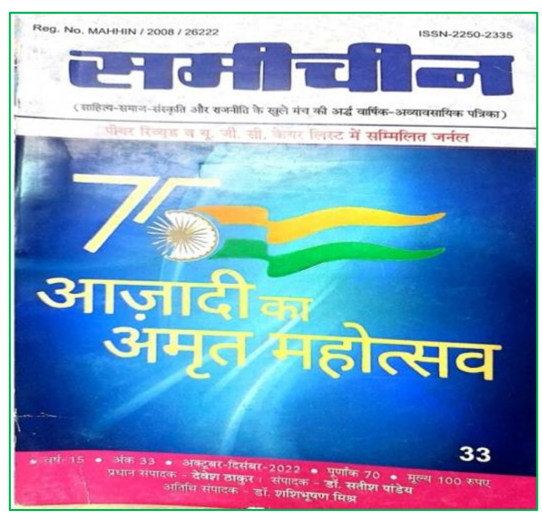
स्मृति का उजास

समकालीनता की बीजभूमि

समकालीनता की नयी भूमि

2

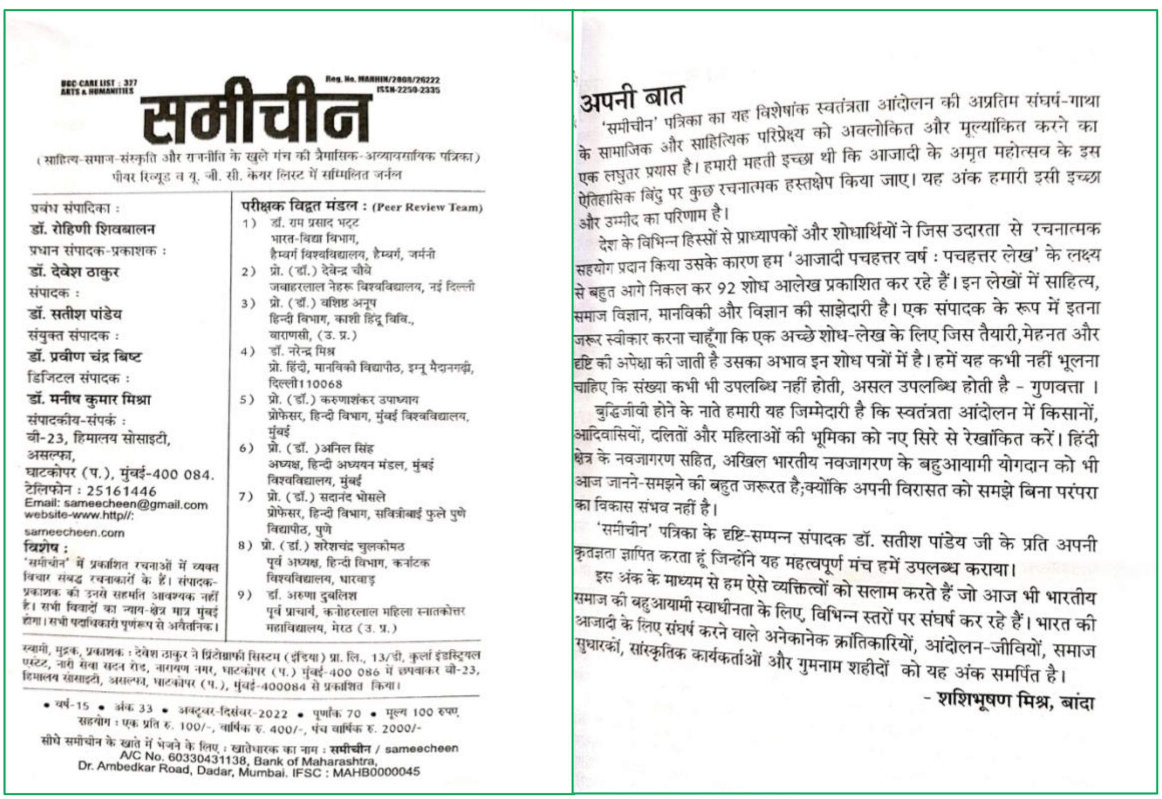
4.2.6 समीचीन (सम्पादित पत्रिका)



डॉ० शशिभूषण मिश्र ने पीयर रिव्यूड तथा यू०जी०सी० केयर लिस्टेड जर्नल में सम्मिलित पत्रिका समीचीन के 33 वें अंक अक्टूबर-दिसम्बर 2022, आजादी के 75 वें वर्ष जिसे 'आजादी का अमृत महोत्सव' के रूप में मनाया गया, का अतिथि सम्पादक के में रूप में सम्पादन किया। जिसमें डॉ० शशिभूषण मिश्र का लेख 'निराला के काव्य में जन-जागरण और राष्ट्रीयता का स्वर' भी प्रकाशित हुआ। इसमें कुल 92 शोध आलेख प्रकाशित हुए।

डॉ० शशिभूषण मिश्र सम्पादकीय में लिखते हैं कि 'समीचीन' पत्रिका का यह विशेषांक स्वतंत्रता आन्दोलन की अप्रतिम संघर्ष-गाथा के सामाजिक और साहित्यिक परिप्रेक्ष्य को अवलोकित और मूल्यांकित करने का एक लघुतर प्रयास है। हमारी महती इच्छा थी की आजादी के अमृत महोत्सव के इस ऐतिहासिक बिन्दु पर कुछ रचनात्मक हस्तक्षेप किया जाए। यह अंक हमारी इसी इच्छा और उम्मीद का परिणाम है।

डॉ० शशिभूषण मिश्र 'समीचीन' पत्रिका के सम्पादक डॉ० सतीश पाण्डेय के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित करते हैं। वे आगे लिखते हैं कि डॉ० सतीश पाण्डेय द्वारा यह महत्वपूर्ण मंच उन्हें उपलब्ध कराया गया। उन्होंने स्पष्ट किया है कि इस अंक के माध्यम से वे ऐसे व्यक्तियों को सलाम करते हैं जो आज भी भारतीय समाज की बहु-आयामी स्वाधीनता के लिए, विभिन्न स्तरों पर संघर्ष कर रहे हैं। भारत की आज़ादी के लिए संघर्ष करने वाले अनेकानेक क्रांतिकारियों, आन्दोलन-जीवियों, समाज सुधारकों, सांस्कृतिक कार्यकर्ताओं और गुमनाम शहीदों को यह अंक समर्पित है।



UGC CARE LIST : 377
ARTS & HUMANITIES

Reg. No. MAHHIN/2008/26222
ISSN-2250-2335

समीचीन

(साहित्य-समाज-संस्कृति और राजनीति के खुले मंच की त्रैमासिक-अव्यावसायिक पत्रिका)
पीयर रिव्यूड व यू. जी. सी. केयर लिस्ट में सम्मिलित जर्नल

प्रबंध संपादिका :
डॉ. रोहिणी शिवबालन
प्रधान संपादक-प्रकाशक :
डॉ. देवेश ठाकुर
संपादक :
डॉ. सतीश पांडेय
संयुक्त संपादक :
डॉ. प्रवीण चंद्र बिष्ट
डिजिटल संपादक :
डॉ. मनीष कुमार मिश्रा
संपादकीय-संपर्क :
बी-23, हिमालय सोसाइटी,
असल्फा,
घाटकोपर (प.), मुंबई-400 084.
टेलिफोन : 25161446
Email: sameecheen@gmail.com
website-www.http//:
sameecheen.com

विशेष :
'समीचीन' में प्रकाशित रचनाओं में व्यक्त विचार संबद्ध रचनाकारों के हैं। संपादक-प्रकाशक की उनसे सहमति आवश्यक नहीं है। सभी विवादों का न्याय-क्षेत्र मात्र मुंबई होगा। सभी पदाधिकारी पूर्णरूप से अवैतनिक।

परीक्षक विद्वत मंडल : (Peer Review Team)
1) डॉ. राम प्रसाद भट्ट
भारत-विद्या विभाग,
हैम्बर्ग विश्वविद्यालय, हैम्बर्ग, जर्मनी
2) प्रो. (डॉ.) देवेन्द्र चौबे
जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय, नई दिल्ली
3) प्रो. (डॉ.) वशिष्ठ अनूप
हिन्दी विभाग, काशी हिंदू विवि.,
वाराणसी, (उ. प्र.)
4) डॉ. नरेन्द्र मिश्र
प्रो. हिंदी, मानविकी विद्यापीठ, इग्नू मैदानगढ़ी,
दिल्ली110068
5) प्रो. (डॉ.) करुणाशंकर उपाध्याय
प्रोफेसर, हिन्दी विभाग, मुंबई विश्वविद्यालय,
मुंबई
6) प्रो. (डॉ.)अनिल सिंह
अध्यक्ष, हिन्दी अध्ययन मंडल, मुंबई
विश्वविद्यालय, मुंबई
7) प्रो. (डॉ.) सदानंद भोसले
प्रोफेसर, हिन्दी विभाग, सवित्रीबाई फुले पुणे
विद्यापीठ, पुणे
8) प्रो. (डॉ.) शरेशचंद्र चुलकीमठ
पूर्व अध्यक्ष, हिन्दी विभाग, कर्नाटक
विश्वविद्यालय, धारवाड़
9) डॉ. अरुणा दुबलिश
पूर्व प्राचार्य, कनोहरलाल महिला स्नातकोत्तर
महाविद्यालय, मेरठ (उ. प्र.)

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक : देवेश ठाकुर ने प्रिंटोग्राफी सिस्टम (इंडिया) प्रा. लि., 13/डी, कुर्ला इंडस्ट्रियल एस्टेट, नारी सेवा सदन रोड, नारायण नगर, घाटकोपर (प.) मुंबई-400 086 में छपवाकर बी-23, हिमालय सोसाइटी, असल्फा, घाटकोपर (प.), मुंबई-400084 से प्रकाशित किया।

• वर्ष-15 • अंक 33 • अक्टूबर-दिसंबर-2022 • पूर्णांक 70 • मूल्य 100 रुपए.
सहयोग : एक प्रति रु. 100/-, वार्षिक रु. 400/-, पंच वार्षिक रु. 2000/-
सीधे समीचीन के खाते में भेजने के लिए : खातेधारक का नाम : **समीचीन** / sameecheen
A/C No. 60330431138, Bank of Maharashtra,
Dr. Ambedkar Road, Dadar, Mumbai. IFSC : MAHB0000045

अपनी बात

'समीचीन' पत्रिका का यह विशेषांक स्वतंत्रता आंदोलन की अप्रतिम संघर्ष-गाथा के सामाजिक और साहित्यिक परिप्रेक्ष्य को अवलोकित और मूल्यांकित करने का एक लघुतर प्रयास है। हमारी महती इच्छा थी कि आजादी के अमृत महोत्सव के इस ऐतिहासिक बिंदु पर कुछ रचनात्मक हस्तक्षेप किया जाए। यह अंक हमारी इसी इच्छा और उम्मीद का परिणाम है।

देश के विभिन्न हिस्सों से प्राध्यापकों और शोधार्थियों ने जिस उदारता से रचनात्मक सहयोग प्रदान किया उसके कारण हम 'आजादी पचहत्तर वर्ष : पचहत्तर लेख' के लक्ष्य से बहुत आगे निकल कर 92 शोध आलेख प्रकाशित कर रहे हैं। इन लेखों में साहित्य, समाज विज्ञान, मानविकी और विज्ञान की साझेदारी है। एक संपादक के रूप में इतना जरूर स्वीकार करना चाहूँगा कि एक अच्छे शोध-लेख के लिए जिस तैयारी,मेहनत और दृष्टि की अपेक्षा की जाती है उसका अभाव इन शोध पत्रों में है। हमें यह कभी नहीं भूलना चाहिए कि संख्या कभी भी उपलब्धि नहीं होती, असल उपलब्धि होती है - गुणवत्ता ।

बुद्धिजीवी होने के नाते हमारी यह जिम्मेदारी है कि स्वतंत्रता आंदोलन में किसानों, आदिवासियों, दलितों और महिलाओं की भूमिका को नए सिरे से रेखांकित करें। हिंदी क्षेत्र के नवजागरण सहित, अखिल भारतीय नवजागरण के बहुआयामी योगदान को भी आज जानने-समझने की बहुत जरूरत है;क्योंकि अपनी विरासत को समझे बिना परंपरा का विकास संभव नहीं है।

'समीचीन' पत्रिका के दृष्टि-सम्पन्न संपादक डॉ. सतीश पांडेय जी के प्रति अपनी कृतज्ञता ज्ञापित करता हूं जिन्होंने यह महत्वपूर्ण मंच हमें उपलब्ध कराया।

इस अंक के माध्यम से हम ऐसे व्यक्तित्वों को सलाम करते हैं जो आज भी भारतीय समाज की बहुआयामी स्वाधीनता के लिए, विभिन्न स्तरों पर संघर्ष कर रहे हैं। भारत की आजादी के लिए संघर्ष करने वाले अनेकानेक क्रांतिकारियों, आंदोलन-जीवियों, समाज सुधारकों, सांस्कृतिक कार्यकर्ताओं और गुमनाम शहीदों को यह अंक समर्पित है।

- शशिभूषण मिश्र, बांदा

4.2.7 अन्य लेखन

डॉ० शशिभूषण मिश्र के 150 से अधिक आलोचनात्मक लेखों को देश की विभिन्न प्रतिष्ठित पत्रिकाओं ने प्रकाशित किया। पिछले एक दशक में डॉ० शशिभूषण मिश्र की पहचान उल्लेखनीय सम्पादित अंकों के कारण हुई है तथा साहित्यिक राष्ट्रीय छवि 'लमही' पत्रिका से हुई है। ज्ञान रंजन के सम्पादन में जबलपुर से निकलने वाली ख्यातिलब्ध पत्रिका 'पहल' ने मिश्र जी के लेखों को लगातार छापा तथा हिन्दी पट्टी में साहित्यिक पहचान दिलाई।

डॉ० शशिभूषण मिश्र के लेख पहल, हंस, तद्भव, कथादेश, वसुधा, लमही, पक्षधर, बनासजन, कथाक्रम, समीक्षा, मधुमती, मंतव्य, समवेत, पूर्वग्रह, माटी, प्रयाग पथ, वचन, समलोचन, बहुवचन, अन्विति आदि पत्रिकाओं में प्रकाशित हुए हैं।



पञ्चम अध्याय

निष्कर्ष एवं सुझाव

6.1 निष्कर्ष

6.2 शैक्षिक निहितार्थ

6.3 अध्ययन के सुझाव

6.4 शैक्षिक उपादेयता

6.5 भावी शोध हेतु सुझाव

पंचम अध्याय

निष्कर्ष एवं सुझाव

6.1 निष्कर्ष

शोधकर्ता द्वारा प्रस्तुत लघु शोध-प्रबन्ध **"डॉ० शशिभूषण मिश्र का साहित्यिक एवं शैक्षिक योगदान"** के निम्नलिखित निष्कर्ष प्राप्त किए गए हैं-

- डॉ० शशिभूषण मिश्र *जी का बचपन आर्थिक अभाव में बीता, फिर भी इन्होंने अपनी मेहनत और लगन से हिन्दी परास्नातक, जे०आर०एफ०, एम०फिल० तथा पी०-एच० डी० तक की शिक्षा पूर्ण की।*
- मिश्र *जी ने अपनी सेवायोजन यात्रा अस्थाई रूप से शासकीय महाविद्यालय, जैतपुर जिला-शहडोल म०प्र० से प्रारम्भ की तथा इसके बाद उत्तर प्रदेश के विभिन्न राजकीय महाविद्यालयों में शिक्षण कार्य करते हुए वर्तमान में राजकीय महिला स्नातकोत्तर महाविद्यालय, बाँदा में कार्यरत हैं।*
- डॉ० शशिभूषण मिश्र जी ने *अपने जीवन काल में आगरा, दिल्ली, जबलपुर, राजस्थान एवं उच्च शिक्षा संस्थान, शिमला इत्यादि देश के विभिन्न स्थलों की यात्राएँ की हैं।*
- डॉ० शशिभूषण मिश्र जी ने *एक पुस्तक (हिन्दी कविता का लोक-आलोक) की रचना की तथा देश की प्रसिद्द पुस्तकों एवं पत्रिकाओं में इनके आलोचनात्मक लेख एवं शोध आलेख प्रकाशित हुए तथा माटी, लमही एवं समीचीन पत्रिका का अतिथि सम्पादक के रूप में सम्पादन भी किया हैं। इन्होंने हिन्दी साहित्य की विपुल सेवा की है तथा उनकी लेखनी अभी भी अनवरत जारी है।*
- डॉ० शशिभूषण मिश्र जी सामाजिक सरोकारों के प्रति चैतन्य एवं संवेदनशील आलोचक हैं। उनका हृदय छल-छिद्र से दूर सहजता में रमता है तथा हिन्दी को तकनीकी से जोड़ने के लिए समर्पित हैं। उनके इसी स्वभाव का परिचय उनकी रचनाओं में मिलता है।

- डॉ० शशिभूषण मिश्र जी *साहित्यिक सम्मेलनों एवं संगोष्ठियों में सहभागिता कर अपने साहित्य की छटा बिखेरते रहते हैं एवं हिन्दी के सम्मान के लिए सदैव संघर्षरत रहते हैं।*
- डॉ० शशिभूषण मिश्र जी ने विद्यार्थियों, शोधार्थियों, साहित्यकारों एवं जन सामान्य के लिए अनेक समकालीन मुद्दों पर आलोचनाओं, शोध आलेखों एवं कवियों की समीक्षा की हैं।

6.2 शैक्षिक निहितार्थ

- डॉ० शशिभूषण मिश्र जी के जीवन से हमें प्रेरणा लेनी चाहिए कि जीवन में कितने भी अभाव, कठिनाई, गरीबी इत्यादि के बाद भी लगन, परिश्रम एवं दृढ़ संकल्प से उच्च शिक्षा के लक्ष्य को प्राप्त किया जा सकता है।
- डॉ० शशिभूषण मिश्र जी की सेवायोजन यात्रा से हमें यह सीख मिलती हैं कि अध्ययन यात्रा पूर्ण होने पर किसी भी सेवायोजन से, भले ही वह कितना ही छोटा एवं अस्थाई प्रकृति का ही क्यों ना हो जुड़ जाना चाहिए तथा उसमें रहते हुए निरन्तर उन्नति का प्रयास करना चाहिए लेकिन अपनी खेती एवं अपने गाँव से अवश्य जुड़े रहना चाहिए। उनका मानना है कि जो व्यक्ति अपनी जड़ों से कट जाता है, वह कहीं का नहीं रहता।
- प्रत्येक व्यक्ति को जीवन में जब भी अवसर मिले भ्रमण एवं यात्रा पर जाना चाहिए। इससे हमें देश की सभ्यता एवं संस्कृति को निकट से जानने का अवसर मिलता है। हमारा देश विभिन्न संस्कृतियों का देश है। अनेकता में एकता एवं वसुधैव कुटुंबकम के दर्शन हमें सांस्कृतिक यात्राओं के दौरान मिलते हैं। विद्यालयों द्वारा प्रत्येक स्तर का विद्यार्थियों को दूर-दराज (भिन्न सांस्कृतिक परिषद से परिचित कराने हेतु) भ्रमण हेतु ले जाना चाहिए।
- व्यक्ति को जीवन में कुछ ना कुछ करते रहना चाहिए, लगनशील व्यक्ति मुकाम पर पहुँचता ही है, हमें भी डॉ० शशिभूषण मिश्र जी के जीवन से प्रेरणा प्राप्त कर किसी क्षेत्र विशेष में निरन्तर अपना योगदान करते रहना चाहिए।

- हमें भी डॉ० शशिभूषण मिश्र जी की भाँति पर्यावरण तथा समाज के प्रति संवेदनशील होना चाहिए, तभी सही अर्थों में राष्ट्र का विकास सम्भव है।
- डॉ० शशिभूषण मिश्र जी ने सरकारी प्रोफेसर होते हुए भी स्वयं को साहित्य लेखन की साधना में डुबो दिया तथा हिन्दी के उत्थान के लिए प्रतिपल समर्पित हैं। मिश्र जी तीन शोधार्थियों के पी०-एच०डी० शोध निर्देशक हैं तथा यू०जी०सी० नेट/जे०आर०एफ० में बच्चियों की पत्नी डॉ० अंकिता तिवारी जी के साथ मिलकर निःशुल्क सहायता करते हैं। हमें भी इनसे प्रेरणा लेकर आजीवन कुछ ना कुछ उपयोगी करते रहना चाहिए।
- डॉ० शशिभूषण मिश्र जी के जीवन से प्रेरणा लेकर हमें भी अपने अन्दर विभिन्न गुणों का विकास करना चाहिए तथा विभिन्न सामाजिक कार्यक्रमों में भाग लेकर समाज एवं राष्ट्र को लाभान्वित करना चाहिए।
- शिक्षा के विभिन्न स्तरों पर हिन्दी की पाठ्य पुस्तकों में डॉ० शशिभूषण मिश्र जी की आलोचनाओं को सम्मिलित किया जा सकता है जिससे विद्यार्थियों में चिन्तन क्षमता का विकास होगा।

6.3 अध्ययन के सुझाव

प्रस्तुत लघु शोध में डॉ० शशिभूषण मिश्र का साहित्यिक एवं शैक्षिक योगदान के विश्लेषणात्मक अध्ययन के पश्चात पाया कि, किसी भी शोध कार्य का यह लक्ष्य होना चाहिए कि, उसके द्वारा अपेक्षित सुधार हों।

प्रस्तुत शोध अध्ययन के आधार पर निम्नलिखित सुझाव प्रस्तुत किए जा रहे हैं-

- विद्यालयों में हिन्दी शिक्षकों को विषय के ज्ञान के साथ-साथ तकनीकी ज्ञान, शुद्ध लेखन तथा प्राचीन गौरवशाली भारतीय संस्कृति का भी ज्ञान होना चाहिए।
- शिक्षकों को अपने सांस्कृतिक, आध्यात्मिक एवं आधुनिक शिक्षण पद्धति के ज्ञान को पुस्तकों पत्र-पत्रिकाओं, वेद, पुराणों, इन्टरनेट आदि से नवीन करते रहना चाहिए।

- व्यस्तता के इस दौर में शिक्षकों में तनाव का होना स्वाभाविक है अतएव समय-समय पर अंशकालीन या अल्पकालीन प्राचीन भारतीय सांस्कृतिक, आध्यात्मिक प्रोजेक्ट वर्क में भाग तथा योग को दिनचर्या में अपनाना चाहिए।
- आज हिन्दी एवं हिन्दुस्तान के प्रति लोगों में प्रेम कम होता जा रहा है अतएव विद्यालयों में बच्चों को भारतीय संस्कृति और नैतिकता से जुड़े प्रोजेक्ट कार्य देने चाहिए जिससे बच्चे अपनी संस्कृति एवं माँ हिन्दी के बारे में जान सकेंगे।
- विद्यालयों को वर्तमान शैक्षिक वातावरण में पाश्चात्य अन्धानुकरण को देखते हुए भारतीय संस्कृति और अध्यात्म के महत्त्व को समझाना चाहिए तथा आधुनिक शिक्षा के साथ-साथ इसके प्रति जागरूकता बढ़ानी चाहिए।
- शुद्ध हिन्दी लेखन आज की व्यापक समस्या है। शुद्ध हिन्दी लेखन की समस्या हिन्दी भाषी क्षेत्र में ही सर्वाधिक है अतएव इसे गम्भीरता से लेकर प्राथमिक स्तर से ही सुधार करना चाहिए तथा इन्टर कॉलेज के हिन्दी विषय के विशेषज्ञों को प्राथमिक और उच्च प्राथमिक स्तर पर कार्यशालाओं का आयोजन एवं मूल्यांकन किया जाना चाहिए।
- प्राय: ऐसा देखने को मिलता है कि हिन्दी भाषा का शिक्षक पद्य का सस्वर वाचन न करके उसे गद्य की तरह पढ़ता है जिससे बच्चों में रूचि जागृत नहीं हो पाती अतएव शिक्षकों को सस्वर वाचन करना चाहिए।
- पहले हिन्दी के कवि, आलोचक आदि निकलते थे लेकिन वर्तमान में साहित्य सर्जना खत्म सी होती जा रही है अतएव शिक्षकों को चाहिए कि वे बच्चों में साहित्य सर्जना का अन्वेषण करें तथा सतत प्रेरणा एवं अवसर प्रदान करते रहें।
- शिक्षकों में आज व्यावसायिक नैतिकता की कमी देखी जा रही है जिससे बचने के लिए शिक्षकों को चाहिए कि वे शिक्षण को व्यावसाय की तरह ना मानकर राष्ट्र निर्माण के प्रति अपना दायित्व मानकर अध्यापन कार्य करें।

- माध्यमिक और उच्च स्तर पर पाठ्यक्रम निर्माण में विशेष ध्यान दिया जाना चाहिए तथा पाठ्यक्रम को समय-समय पर देश एवं समाज की जरूरतों के अनुरूप परिवर्तित होते रहना चाहिए। पाठयक्रम में तकनीकी ज्ञान को अवश्य शामिल किया जाना चाहिए।
- आज हिन्दी की उपेक्षा माननीय सर्वोच्च न्यायालय में भी की जा रही है तथा सुनवाई एवं बहस के दौरान अंग्रेजी भाषा का ही प्रयोग किया जा रहा है। अतएव ऐसे में हिन्दी भाषा के उत्थान के लिए संसद स्तर पर भी प्रयास किए जाने चाहिए।
- अंत में हम कह सकते हैं कि समाज के सभी वर्गों के लिए शिक्षा की उचित व्यवस्था होनी चाहिए एवं शिक्षा को भारतीय संस्कृति एवं नैतिक मूल्यों से जुडी होनी चाहिए तथा प्रासंगिक साहित्य को वरीयता देनी चाहिए जिससे राष्ट्र निर्माण में शिक्षा अपना सम्पूर्ण योगदान दे सकेगी।

6.4 शैक्षिक उपादेयता

प्रस्तुत लघु शोध-प्रबन्ध **डॉ० शशिभूषण मिश्र का साहित्यिक एवं शैक्षिक योगदान** से प्राप्त निष्कर्षो के आधार पर हम कह सकते हैं, कि यह अध्ययन शिक्षा के साथ-साथ अन्य क्षेत्रों में भी महती उपयोगिता रखता है। वर्तमान सामाजिक परिवेश में जब मानवीय मूल्य और प्राचीन भारतीय संस्कृति केवल किताबों में सिमट कर रह गए हैं। छात्र अति भौतिकवादी परिवेश में पाश्चात्य संस्कृति के अंधानुकरण के कारण अपने सदाचार और संस्कारों को विस्मृत करते जा रहे हैं। तब इस संक्रमण काल में छात्रों के आधारभूत मूल्यों और संस्कारों तथा नैतिकता को समाविष्ट करने में यह लघु शोध प्रभावी सिद्ध होगा। जहाँ पर शिक्षा और साहित्य दोनों का समावेश हो जाता है। वहाँ पर प्रगति के सारे मार्ग प्रशस्त एवं दृष्टिगोचर होते हैं।

डॉ० शशिभूषण मिश्र जी का दृढ़ विश्वास है कि आध्यात्मिक, सांस्कृतिक समन्वय से शिक्षा इक्कीसवीं शताब्दी में अपने नवीन आदर्श स्थापित करेगी तथा मानवीय मूल्य केवल पुस्तकों तक सीमित न रहकर बालकों में संस्कार रूप में दृष्टिगोचर होंगे। लघु शोध-प्रबन्ध में शिक्षा एवं साहित्य को एक ही सिक्के के दो पहलू बताया गया है। जो समाज में प्राचीन भारतीय संस्कृति के प्रचार-प्रसार हेतु तथा भावी आदर्श नागरिकों के निर्माण हेतु

आधुनिक शिक्षा एवं प्राचीन संस्कृति शिक्षा को समन्वित कर प्रदान करके हम स्वस्थ एवं शैक्षिक समाज का निर्माण कर सकते हैं।

6.5 भावी शोध हेतु सुझाव

- भावी शोध में डॉ० शशिभूषण मिश्र जी की आलोचनाओं में निहित मूल्यों का अध्ययन किया जा सकता है।
- भावी शोध में बुन्देलखण्ड के अन्य साहित्यकारों को सम्मिलित किया जा सकता है।
- भावी शोध में आलोचनाकार डॉ० शशिभूषण मिश्र जी के साथ अन्य आलोचकों के शैक्षिक योगदान का तुलनात्मक अध्ययन किया जा सकता है।
- प्रस्तुत अध्ययन हिन्दी भाषा के युवा आलोचक डॉ० शशिभूषण मिश्र जी के साहित्यिक एवं शैक्षिक योगदान पर आधारित है, भावी शोध में हिन्दी के अतिरिक्त अन्य भाषा के साहित्यकारों को सम्मिलित किया जा सकता है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

तिवारी, बाबूलाल (1996-97)। *वर्तमान भारतीय राष्ट्रीय परिवेश में पं० दीनदयाल उपाध्याय के शैक्षिक विचारों का आलोचनात्मक अध्ययन।* पी-एच०डी० शोध। बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय, झाँसी (उ०प्र०)। <http://hdl.handle.net/10603/10744>

सिंह, नीलम(1999)। *भारत वर्ष में मिशनरी शिक्षा: योगदान तथा वर्तमान समय में उपादेयता का अध्ययन।* पी-एच०डी० शोध। बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय, झाँसी (उ०प्र०)। <http://hdl.handle.net/10603/11762>

मिश्रा, शशि (2002)। *समाजवादी चिन्तकों के शैक्षिक विचारों का तुलनात्मक अध्ययन।* पी-एच०डी० शोध। बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय, झाँसी (उ०प्र०)। <http://hdl.handle.net/10603/11762>

वर्मा, रामनिवास **(2005)**। *भारतीय जीवन मूल्य आधारित शिक्षा व्यवस्था के सन्दर्भ में स्वामी शिवानन्द जी के शैक्षिक विचारों की प्रासंगिकता उत्थान में अध्ययन।* पी-एच०डी० शोध। डॉ० भीमराव अम्बेदकर विश्वविद्यालय आगरा (उ०प्र०) <http://hdl.handle.net/10603/361860>

बलहारा, अजय (2007)। *गिजू भाई बधेका का शैक्षिक चिन्तन एवं आधुनिक भारतीय बाल-शिक्षा परिदृश्य में इसकी प्रासंगिकता का अध्ययन।* पी-एच०डी० शोध। बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय, झाँसी (उ०प्र०)। <http://hdl.handle.net/10603/12530>

सिंह, किरन (2008) *रवीन्द्रनाथ टैगोर के शैक्षिक योगदान का वर्तमान सन्दर्भ में प्रासंगिकता आलोचनात्मक अध्ययन।* पी-एच०डी० शोध। वीर बहादुर सिंह पूर्वांचल विश्वविद्यालय, जौनपुर (उ०प्र०)। <http://hdl.handle.net/10603/178440>

सिंह, अनन्त बहादुर (2008)। *मूल्य शिक्षा के विशेष संदर्भ में रवीन्द्र नाथ टैगोर तथा महात्मा गाँधी के शैक्षिक विचारों का एक तुलनात्मक अध्ययन।* पी-एच०डी० शोध। डॉ० राम मनोहर लोहिया अवध विश्वविद्यालय, फैजाबाद (उ०प्र०)। <http://hdl.handle.net/10603/239635>

सिंह, रेनू (2008)। *भारत में छत्रपति शाहू जी महाराज का शैक्षिक योगदान विशेष रूप से दलितों के शैक्षिक उत्थान में अध्ययन। पी-एच०डी० शोध। बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय, झाँसी (उ०प्र०)*। <http://hdl.handle.net/10603/12262>

तिवारी, सुधा (2009)। *लोकतान्त्रिक भारत कि शिक्षा में महात्मा गाँधी एवं पण्डित दीन दयाल उपाध्याय जी के शैक्षिक योगदान का तुलनात्मक अध्ययन। पी-एच०डी० शोध। बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय, झाँसी (उ०प्र०)*। <http://hdl.handle.net/10603/14905>

शादाब, आबी (2009)। *जाकिर हुसैन एवं ए.पी.जे. अब्दलु कलाम के शैक्षिक विचारों का तलुनात्मक अध्ययन। पी-एच०डी० शोध। डॉ० राम मनोहर लोहिया अवध विश्वविद्यालय, फैजाबाद (उ०प्र०)*। <*http://hdl.handle.net/10603/235529*>

लाल, रमन बिहारी एवं तोमर, गजेन्द्र सिंह (2014)। *शिक्षा के दार्शनिक आधार* (संशोधित संस्करण)। मेरठ: आर० लाल० बुक डिपो।

मिश्र, शशिभूषण (मई-जून 2016)। *भय और क्रूरता की सांस्कृतिक ठेकेदारी का समकाल*। **बनासजन,** पृष्ठ 192-195।

मिश्र, शशिभूषण (2018)। *सूरदास के भ्रमरगीत के प्रगतिशील आयाम*। **कालजयी और युवा,** पृष्ठ 204-210।

तिवारी, अंकिता एवं मिश्र, शशिभूषण (सम्पादक)। (2018)। *भूमंडलीय और तकनीकी समय में हिन्दी* (प्रथम संस्करण)। कानपुर: विद्या प्रकाशन।

मिश्र, शशिभूषण (जुलाई 2018)। *दृष्टिबोध का उर्वर धरातल*। **पहल,** पृष्ठ 196-207।

मिश्र, शशिभूषण (सितम्बर 2018)। *कथा के नए आनुभूतिक प्रस्थान*। **पहल,** पृष्ठ 168-179।

मिश्र, शशिभूषण (नवम्बर 2018)। *सभ्यता के छद्म को भेदती कथादृष्टि*। **पहल,** पृष्ठ 168-179।

मिश्र, शशिभूषण (जून-जुलाई 2020)। *कारोबारी विकास और विकास का कारोबार*। **पहल,** पृष्ठ 130-142।

गुप्ता, एस०पी० (2022)। *अनुसंधान संदर्शिका- सम्प्रत्यय, कार्यविधि एवं प्रविधि* (पुन: मुद्रित संस्करण)। प्रयागराज: शारदा पुस्तक भवन।

कुमार, अशोक (2022)। *रामावतार साहू जी का शैक्षिक योगदान*। *लघु शोध-प्रबन्ध*। *बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय, झाँसी (उ०प्र०)*।

मिश्र, शशिभूषण (2022)। *झूंठ की दुनिया में कबीर की जरुरत*। **बदलते वैश्विक परिवेश में कबीर की प्रासंगिकता**, पृष्ठ 140-144।

मिश्र, शशिभूषण (अतिथि सम्पादक)। (2022)। **माटी** *(अंक 18)*। नई दिल्ली: लिटिल बर्ड पब्लिकेशन्स।

मिश्र, शशिभूषण (जनवरी 2022)। *कविता उल्लंघन की सतत प्रक्रिया है*। **तद्भव,** पृष्ठ 276-280।

मिश्र, शशिभूषण (अक्टूबर-दिसम्बर 2022)। *निराला के काव्य में जन-जागरण और राष्ट्रीयता का स्वर*। **समीचीन,** पृष्ठ 295-298।

मिश्र, शशिभूषण (अतिथि सम्पादक)। (अक्टूबर-दिसम्बर 2022)। **समीचीन** *(वर्ष-15, अंक 33)*। मुम्बई: देवेश ठाकुर।

शुक्ल, राकेश; मिश्र, शशिभूषण एवं तिवारी, अंकिता (2023)। *साहित्यशास्त्र एवं हिन्दी आलोचना*। कानपुर: अमन प्रकाशन।

मिश्र, शशिभूषण (अतिथि सम्पादक)। (जनवरी-जून 2023)। **लमही** *(वर्ष-15, अंक 3 एवं 4)*। लखनऊ: मन्जरी राय।

मिश्र, शशिभूषण (अतिथि सम्पादक)। (जुलाई-सितम्बर 2023)। **लमही** *(वर्ष-16, अंक 1)*। लखनऊ: मन्जरी राय।

मिश्र, शशिभूषण (अक्टूबर 2022-सितम्बर 2023)। *कथा-दृष्टि का बहु आयामी धरातल*। **पल प्रतिपल,** पृष्ठ 128-143।

मिश्र, शशिभूषण (अक्टूबर-दिसम्बर 2023)। *उत्तर आधुनिकता की स्थापनाएँ और सीमाएँ*। **समीचीन,** पृष्ठ 259-263।

मिश्र, शशिभूषण (दिसम्बर 2023)। *स्त्री दृष्टि वस्तुत: मनुष्यता की दृष्टि है*। **अन्विति,** पृष्ठ 78-80।

मिश्र, शशिभूषण (2024)। *भक्ति कविता का लोक-आलोक (प्रथम संस्करण)*। प्रयागराज: अनामिका प्रकाशन।

मिश्र, शशिभूषण (2024)। *छायावाद की सांस्कृतिक चेतना*। **भारतीय साहित्य का सांस्कृतिक सन्दर्भ**, पृष्ठ 50-56।

मिश्र, शशिभूषण (2024)। *दहशत की विभीषिका से जूझता कश्मीरी जन-जीवन*। **कश्मीर: उपन्यासों के आइने में,** पृष्ठ 105-109।

मिश्र, शशिभूषण (जनवरी 2024)। *धरती का गुरुत्वाकर्षण और कवि का शहर*। **तद्भव,** पृष्ठ 237-241।

मिश्र, शशिभूषण (अतिथि सम्पादक)। (अक्टूबर-दिसम्बर 2023 से जनवरी-मार्च 2024)। **लमही** *(वर्ष-16, अंक 2 एवं 3)*। लखनऊ: मन्जरी राय।

परिशिष्ट

I- डॉ० शशिभूषण मिश्र के साथ शोधार्थी की चित्रावली

II- प्रसिद्ध साहित्यकारों के साथ डॉ० शशिभूषण मिश्र की चित्रावली

III- समाचार पत्रों में डॉ० शशिभूषण मिश्र

IV- डॉ० शशिभूषण मिश्र के विभिन्न साहित्यिक कार्यक्रमों में वक्तव्य

V- डॉ० शशिभूषण मिश्र द्वारा प्रतिभागित सेमिनार

VI- डॉ० शशिभूषण मिश्र द्वारा किए गए रिफ्रेशर कोर्स एवं पी०-एच०डी० उपाधि

परिशिष्ट- I

डॉ० शशिभूषण मिश्र के साथ शोधार्थी की चित्रवली



डॉ० शशिभूषण मिश्र के साथ शोधार्थी विकास तिवारी



डॉ० शशिभूषण मिश्र के साथ विकास तिवारी, राजकीय महिला स्नातकोत्तर महाविद्यालय, बाँदा



डॉ० शशिभूषण मिश्र के साथ उनके आवास में शोध सम्बन्धित साहित्य का अध्ययन करते हुए शोधार्थी



डॉ० शशिभूषण मिश्र के साथ उनके पुस्तकालय में विकास तिवारी



डॉ० शशिभूषण मिश्र के साथ उनके आवास 'अन्वेषण' में विकास तिवारी, बाँदा



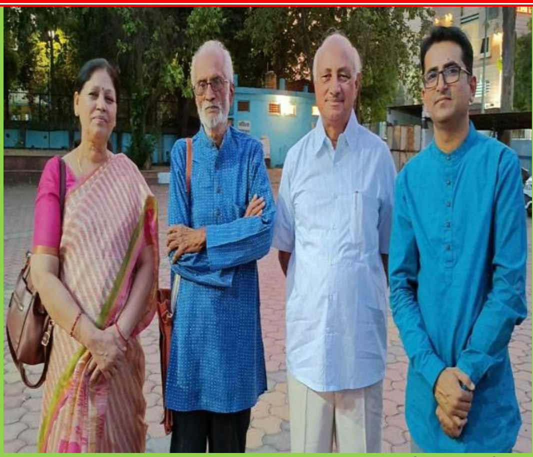
डॉ० शशिभूषण मिश्र जी से शोध सम्बन्धित मार्गदर्शन प्राप्त करते हुए विकास तिवारी

परिशिष्ट- II

प्रसिद्ध साहित्यकारों के साथ डॉ० शशिभूषण मिश्र



कथाकार एस०आर० हारनोट के साथ डॉ० शशिभूषण मिश्र एवं डॉ० अंकिता तिवारी



प्रख्यात कहानीकार ज्ञानरंजन एवं आलोचक प्रो० सूरज पालीवाल के साथ डॉ० शशिभूषण मिश्र



मित्र लेखकों के साथ डॉ० शशिभूषण मिश्र



इलाहाबाद वि०वि० के प्रोफेसर प्रणय कृष्ण के साथ डॉ० शशिभूषण मिश्र, नौका विहार



पहल पत्रिका के कार्यक्रम में लेखकों के साथ डॉ० शशिभूषण मिश्र



युवा-2021 कार्यक्रम में लेखकों के साथ डॉ० शशिभूषण मिश्र

प्रसिद्ध साहित्यकारों के साथ डॉ० शशिभूषण मिश्र



दिल्ली वि०वि० के प्रोफेसर एवं आलोचना पत्रिका के सम्पादक प्रो० आशुतोष कुमार के साथ डॉ० शशिभूषण मिश्र



केदार सम्मान से सम्मानित कवि मदन कश्यप के साथ डॉ० शशिभूषण मिश्र



प्रख्यात कवि राजेश जोशी के साथ डॉ० शशिभूषण मिश्र



कवि संतोष चतुर्वेदी के साथ डॉ० शशिभूषण मिश्र



लेखक देवी प्रसाद मिश्र के साथ डॉ० शशिभूषण मिश्र उनकी पत्नी डॉ० अंकिता तिवारी एवं छात्राएँ



कवि अशोक बाजपेई के साथ डॉ० शशिभूषण मिश्र एवं डॉ० अंकिता तिवारी

परिशिष्ट- III

समाचार पत्रों में डॉ० शशिभूषण मिश्र



भूमण्डलीय व तकनीकी में हिन्दी की चुनौतियां व संभावनायें

बांदा। राजकीय महिला स्नातकोत्तर महाविद्यालय में शनिवार को राष्ट्रीय हिन्दी संगोष्ठी का आयोजन किया गया। भूमण्डलीय और तकनीकी समय में हिन्दीः चुनौतियां एवं संभावनायें विषय पर आधारित इस संगोष्ठी में शिक्षकों और विद्वानों ने अपनी-अपनी राय पेश की। कार्यक्रम का शुभारम्भ सरस्वती चित्र पर दीप प्रज्ज्वलन से किया गया। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में मौजूद रामभद्राचार्य विश्वविद्यालय प्रोफेसर योगेश चन्द्र दुबे ने कहा भूमण्डलीय और तकनीकी समय में हिन्दी के समक्ष अपने अस्तित्व को बचाने के लिए अनेक चुनौतियां हैं। अगर हम अपनी भाषा नही बचा पाये तो हमारी संस्कृति और समाज को संगठित करना मुश्किल होगा। प्राचार्य डा०बालकृष्ण पाण्डेय ने कहा कि हिन्दी हमारा गौरव और सम्मान है। इसे सरंक्षित करने हम सबका दायित्व है। इसके पहले प्रोफेसर योगेन्द्र चन्द्र दुबे का प्राचार्य द्वारा बैज अलंकृत किया गया। डा०सबीहा रहमानी ने स्वागत गीत गाया। उद्घाटन सत्र का संचालन डा०अंकिता तिवारी ने किया। द्वितीय तकनीकी सत्र का शुभारम्भ तुलसीदास राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय कर्वी प्रोफेसर प्रेम शंकर सिंह ने किया। मुख्य अतिथि डा० दुर्गेश कुमार शुक्ल मानिकपुर रहे। मुख्य वक्ता प्रोफेसर कुसुम सिंह ने हिन्दी पर अपने विचार रखे। विशिष्ट अधिवक्ता के तौर पर डा०अनिल अविश्रान्त झांसी ने हिन्दी भाषा और उसके सामने आने वाली चुनौतियों को गंभीरता से समझने की बात कही। संगोष्ठी के मौके पर प्रभा श्रीवास्तव, प्रेमलता मिश्रा, अश्वनी कुमार मिश्र, देवलाल मौर्य, जवाहर लाल जलज, सुधीर सिंह, धीरेन्द्र कुमार सिंह, मीनाक्षी सिंह, जेबा खान, ज्योति मिश्रा सहित महाविद्यालय का समस्त स्टाफ मौजूद रहा।



जागरण

दैनिक जागरण झाँसी, 11 फरवरी 2018

बाँदा समाचार

भूमण्डलीय और तकनीकि विषय पर चर्चा

- राजकीय महिला महाविद्यालय में हुआ कार्यक्रम

बाँदा ब्यूरो : शनिवार को राजकीय महिला महाविद्यालय मे राष्ट्रीय संगोष्ठी हिन्दी विभाग के द्वारा भूमण्डलीय व तकनीकी विषय पर आयोजित की गयी। संगोष्ठी में विषय पर चर्चा करते हुये सैकड़ों लोग मौजूद रहे।

संगोष्ठी का शुभारम्भ रामभद्राचार्य विकलांग विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. योगेश चन्द्र दुबे ने दीप प्रज्ज्वलन कर किया। इस मौके पर प्रो. आशीष त्रिपाठी, विशिष्ट अतिथि व विशिष्ट वक्ता संतोष भदौरिया मौजूद रहे। कार्यक्रम की शुरूआत में डॉ. ज्योति मिश्रा ने सरस्वती वन्दना कर मुख्य अतिथियों को बुके भेंट कर सम्मान दिया। वही प्राचार्य बालकृष्ण पाण्डेय ने अतिथियों को बैच लगाकर स्वागत किया। उद्घाटन सत्र में शशि भूषण मिश्रा ने संयोजित प्रवर्तन पर वर्तमान में हिन्दी भाषा के आस्तित्व पर प्रकाश डाला। वहीं बीज प्रवक्ता के रूप में बनारस विश्व विद्यालय से आये प्रो. आशीष त्रिपाठी ने हिन्दी भाषा के सामने आने वाली चुनौतियों के अत्यन्त स्पष्ट के रूप मे प्रकाश डालकर लोगों को जानकारी दी। विशिष्ट वक्ता प्रो. संतोष भदौरिया ने कहा कि हिन्दी हमारे राष्ट्र का अभिमान है। मातृभाषा के रूप में इसमें हम सबके प्राण बसते है। मुख्य अतिथि प्रो. योगेश चन्द्र ने भूमण्डलीय और तकनीकी विषय पर कहा कि हिन्दी के सामने अपने आस्तित्व को बचाने के लिये अनेक चुनौतियां है। हमें अपनी संस्कृति और समाज को संगठित रखने के लिये अपनी भाषा बचाना जरूरी है। कार्यक्रम का संचालन डॉ. अंकिता तिवारी ने किया। इस दौरान प्रेमशंकर मिश्र, प्रो. कुसुम सिंह, प्रभा श्रीवास्तव, प्रेमलता मिश्रा, अश्वनी कुमार, दीपाली गुप्ता, माया वर्मा, पंकज सिंह सहित छात्रायें व शोधछात्र बड़ी संख्या में मौजूद रहे।



भूमण्डलीय और तकनीकी समय में हिन्दी विषय पर हुई गोष्ठी

हिन्दी राष्ट्र का अभिमानः प्रो. संतोष

बांदा | हिन्दुस्तान संवाद

शनिवार को महिला डिग्री कॉलेज में हिन्दी विषय में आयोजित गोष्ठी में बोलते बीएचयू के प्रोफेसर। • हिन्दुस्तान

राजकीय महिला महाविद्यालय में शनिवार को भूमण्डलीय और तकनीकी समय में हिन्दी चुनौतियां एवं संभावनाएं पर गोष्ठी हुई। विद्वानों ने कहा कि हिन्दी हमारे राष्ट्र का अभिमान है।

गोष्ठी में मुख्य अतिथि विकलांग विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. योगेशचन्द्र दुबे रहे। डॉ. ज्योति मिश्रा ने मां सरस्वती वंदना प्रस्तुत की। प्रो. आशीष त्रिपाठी ने हिन्दी भाषा के समक्ष आने वाली चुनौतियों के संबंध पर प्रकाश डाला।

मुख्य अतिथि कुलपति योगेशचन्द्र दुबे ने कहा कि भूमण्डलीय और तकनीकी समय में हिन्दी के समक्ष अपने अस्तित्व को बचाने के लिए अनेक चुनौतियां है, यदि हम अपनी भाषा नहीं बचा पाए तो हमारी संस्कृति और समाज को संगठित करना मुश्किल होगा। प्रो. संतोष भदौरिया ने कहा कि हिन्दी हमारे राष्ट्र का अभिमान है, लेकिन पश्चिमीकरण व संस्कृतीकरण और ब्रिटिश साम्राज्यवादी नीतियों ने हमारी संस्कृति, भाषा को हीन माना, और इस साम्राज्यवाद के तले हमारा राजनैतिक सामाजिक और सांस्कृतिक पतन शुरू हुआ। प्राचार्य डॉ. बालकृष्ण पाण्डेय ने कहा कि हिन्दी हमारा गौरव और सम्मान है। इसे संरक्षित करना हम सब का दायित्व है। इस मौके पर प्रो. आशीष त्रिपाठी, डॉ. शशी भूषण मिश्र, डॉ. पंकज सिंह, प्रो. प्रेमशंकर मिश्र, तुलसीदास, डॉ. दुर्गेश कुमार शुक्ल, प्रो. कुसुम सिंह, डॉ. अनिल अविश्रांत, प्रो. प्रभा श्रीवास्तव, डॉ. प्रेमलता मिश्रा, डॉ. अश्विनी कुमार मिश्र, डॉ. देवलाल मौर्य, जवाहर लाल जलज, डॉ. सबीहा रहमानी, डॉ. दीपाली गुप्ता, डॉ. जितेन्द्र रहे।



अमर उजाला

तकनीक से होगा हिंदी की चुनौतियों का समाधान

राष्ट्रीय संगोष्ठी के अंतिम दिन विद्वानों के व्याख्यान

अमर उजाला ब्यूरो

बांदा।

संगोष्ठी को संबोधित करते आलोचक डॉ. चंद्र कुमार पांडेय। अमर उजाला

राजकीय महिला डिग्री कॉलेज में भूमंडलीय और तकनीकी समय में हिंदी की चुनौतियां और संभावनाएं विषय पर आयोजित दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी रविवार को समाप्त हो गई। अंतिम दिन हिंदी विद्वानों ने व्याख्यान दिए और छात्र-छात्राओं ने शोध पत्र प्रस्तुत किए। तकनीकी चुनौतियों का तकनीक से ही समाधान खोजने की बात कही।

जबलपुर से आए क्षेत्रीय निदेशक डॉ. विवेक श्रीवास्तव ने कहा कि हिंदी के सामने तकनीकी कई चुनौतियां हैं। लेकिन तकनीक के द्वारा ही धीरे-धीरे समाधान भी खोजा जा रहा है। चिरमिरी से आए सहायक प्रोफेसर डॉ. रामकिंकर पांडेय ने कहा कि तकनीक को अपनाने और हिंदी को तकनीकी में समृद्ध करने के लिए लगातार काम करने की जरूरत है। बनारस विश्वविद्यालय के शोध छात्र जगन्नाथ दुबे ने हिंदी सिनेमा में भाषा के बदलते रूप पर चर्चा की। दिल्ली विश्वविद्यालय की छात्रा अरुणा ने हिंदी के समक्ष तकनीकी कारण बताए। ग्वालियर से आए संदीप भट्ट ने भी संबोधित किया।

महाविद्यालय प्रवक्ता डा. जितेंद्र कुमार ने हिंदी में भविष्य में आने वाले साफ्टवेयर के बारे में बताया। प्रवक्ता डा. विनोद ने अर्थशास्त्र में हिंदी पठन-पाठन पर चर्चा की। अंतिम दिन संगोष्ठी तीन सत्रों में हुई। अध्यक्षता आलोचक चंद्र कुमार पांडेय ने की। प्राचार्य डा. बालकृष्ण पांडेय ने दीप प्रज्ज्वलन किया। डा. चंद्रिका प्रसाद दीक्षित ललित, लद्दाख से आए डा. राहुल मिश्र, इलाहाबाद विश्वविद्यालय के प्रोफेसर डा. संतोष चतुर्वेदी ने भी संबोधित किया। बनारस, लखनऊ, कानपुर आदि से आए छात्र-छात्राओं ने शोध प्रस्तुत किए। संचालन डा. शशिभूषण मिश्र ने किया। आयोजन सचिव डा. अंकिता तिवारी ने धन्यवाद जताया। संगोष्ठी में महाविद्यालय की सुमन निगम, रजनी भार्गव, डा. राजनारायण, डा. सबीहा रहमानी, डा. दीपाली गुप्ता, डा. जितेंद्र कुमार, डा. माया वर्मा, डा. पंकज सिंह, दाऊद अहमद, डा. अंकिता, जेबा खां, ज्योति मिश्रा, अजय कुमार मिश्र, डा. मनोरमा यादव, डा.राकेश कुमार शर्मा शामिल रहे।



4 | बुलंद दस्तक गुरुवार, 15 सितम्बर, 2022 | बांदा | चित्रकूट

हिंदी राष्ट्रीय एकता और अखंडता की सेतुः आयुक्त

महिला महाविद्यालय में हिंदी दिवस समारोह आयोजित

बाँदा ब्यूरो। हिंदी राष्ट्रीय एकता और अखंडता की सेतु है और उसे मजबूत बनाए रखना हम सबकी जिम्मेदारी है। यह उद्गार मंडलायुक्त आरपी सिंह ने राजकीय महिला महाविद्यालय में हिंदी दिवस समारोह मे छात्रा प्रियांशी रैकवार, मेधा मिश्रा को हिंदी के क्षेत्र मे दिया जाने वाला चंद्रपाल कश्यप स्मृति कविता सम्मान प्रदान करते हुए यह बात कही। आयुक्त श्री सिंह ने हिंदी के साथ अन्य भाषाओ से सामंजस की बात रेखांकित करते हुए कहा कि भले ही हम अंग्रेजी मे ज्ञान प्राप्त कर ले, लेकिन हमारा दिल हिंदी वाला होना चाहिए। इस अवसर पर विशिष्ट अतिथि के रूप मे मौजूद वरिष्ठ कवि नरेंद्र पुण्डरीक ने अपनी कविताओं के माध्यम से कवि की समाज में भूमिका को रेखांकित किया। डीसीडीएफ के अध्यक्ष सुधीर सिंह ने हिंदी के वर्तमान और भविष्य की चुनौतियों तथा संभावनाओं को रेखांकित किया, वही सीआरपीएफ में असिस्टेंट कमांडेंट विकास कुमार सिंह ने भी अपनी कविता के माध्यम से विचार साझा किए। कॉलेज की प्राचार्य डॉ. दीपाली गुप्ता ने भी हिंदी को भारतीय जनमानस की भाषा बताते हुए कहा कि हिंदी को एक नई वैश्विक पहचान मिली है। इसी प्रकार से सहायक प्रोफेसर डॉ. अंकिता तिवारी ने भी हिंदी पर अपने विचार व्यक्त किए। संचालन डॉ. शशिभूषण मिश्र ने किया। इस अवसर पर रामनरेश त्रिपाठी ने कविता पाठ किया, जबकि डॉ. सबीहा रहमानी, डॉ. जितेंद्र कुमार समेत बड़ी संख्या में विभाग के प्रवक्ता व छात्राएं मौजूद रही। ज्ञात रहे चंद्रपाल कश्यप स्मृति कविता सम्मान वर्ष 2020 मे शुरू किया गया था। यह पुरस्कार महिला डिग्री कॉलेज के हिंदी विभाग द्वारा कविता और साहित्य मे अभिरुचि रखने वाली छात्राओं को प्रदान किया जाता है। इसमे 22 सौ रुपए की नगद धनराशि की व्यवस्था स्व. चंद्रपाल कश्यप के पुत्र प्रारम्भ कश्यप द्वारा प्रदान की जाती है।

सुलेख प्रतियोगिता में छात्रा खुशी रही अव्वल

अतर्रा, बाँदा ब्यूरो। हिन्दी दिवस के उपलक्ष्य मे कस्बे के ब्रह्म विज्ञान इण्टर कॉलेज मे सुलेख प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। जिसमे करीब एक सैकड़ा बच्चो ने प्रतिभाग किया। शीर्ष पांच बच्चो को प्रधानाचार्य के द्वारा सम्मानित किया गया। प्रतियोगिता मे मात्रा व विराम चिन्हों का विशेष ध्यान रखा गया। परीक्षा का संचालन हिन्दी के प्रवक्ता चेतराम ने किया। प्रतियोगिता मे खुशी शुक्ला ने प्रथम, अंजली द्विवेदी ने द्वितीय व अनल पटेल ने तृतीय स्थान प्राप्त किया। प्रधानाचार्य शिवदत्त त्रिपाठी ने शीर्ष पाँच बच्चो को सम्मानित करते हुये बताया कि हमारे देश ने आजादी मिलने बाद 14 सितम्बर सन 1949 को हिन्दी को राष्ट्रभाषा के रूप मे स्वीकार किया, लेकिन आज भी देश मे हिन्दी का सम्पूर्ण विकास नही हो सका है। इस अवसर पर गिरिजेश मिश्र, सुरेन्द्र शर्माए, बीरेंद्र दीक्षित, सुरेश चंद्र, मधु सविता, प्रेमलता आदि शिक्षक उपस्थित रहे।



बांदा | amarujala.com | कानपुर | बुधवार, 15 सितंबर 2021 | 8

भारत को एकता के सूत्र में बांधती है हिंदी : आईजी

महिला कालेज में हिंदी दिवस पर कार्यक्रम, चंद्रपाल कश्यप स्मृति कविता सम्मान छात्रा प्राची को मिला

संवाद न्यूज एजेंसी

बांदा। हिंदी दिवस पर मंगलवार को चंद्रपाल कश्यप स्मृति कविता सम्मान इस वर्ष राजकीय महिला डिग्री कालेज की छात्रा प्राची मिश्रा को दिया गया। केदार स्मृति न्यास से जुड़े बांदा के कवि चंद्रपाल कश्यप की स्मृति में कविता लेखन में रुचि रखने वाली छात्रा प्राची को आईजी ने 2100 रुपये व सम्मानपत्र सौंपा। आईजी के. सत्यनारायणा ने कहा कि हिंदी भाषा भारत को एकता के सूत्र में बांधती है।

राजकीय महिला स्नातकोत्तर महाविद्यालय में हिंदी दिवस पर हुए

छात्रा प्राची।

हिंदी दिवस समारोह में मौजूद प्राध्यापक व छात्राएं। संवाद

संबोधित करती साक्षी। उपस्थित आईजी के. सत्यनारायणा, प्राचार्य व प्रवक्ता।

बांदा के कवि चंद्रपाल की स्मृति में सम्मान की घोषणा

समारोह को संबोधित करते हुए पुलिस महानिरीक्षक के. सत्यनारायणा ने कहा कि हिंदी जनभावनाओं का प्रतिनिधित्व करने वाली और भारत को एकता के सूत्र में बांधने वाली भाषा है। प्राचार्य डॉ.

हिंदी रोजगार देने वाली भाषा के रूप में स्थापित : दीपाली

दीपाली गुप्ता ने कहा कि हिंदी विभिन्न क्षेत्रों में रोजगार देने वाली भाषा के रूप में स्थापित हुई है। हिंदी विभागाध्यक्ष डॉ. शशि भूषण मिश्र ने चंद्रपाल कश्यप स्मृति कविता सम्मान-2021 की घोषणा की। कवि के पुत्र प्रारब्ध कश्यप ने बताया कि कोरोना काल में उनके पिता चंद्रपाल कश्यप का निधन हो गया था। उन्हीं की स्मृति में सम्मान दिया गया है।

समारोह में छात्रा साक्षी द्विवेदी, सुभद्रा कुमारी चौहान, सावित्री निषाद, नैन्सी सोनी, शिवी गुप्ता, अंकिता गुप्ता, अनन्या मिश्रा, मंजू पाल, विभा विश्वकर्मा, नम्रता, सादिया आदि ने काव्य पाठ किया। प्राध्यापकों में डॉ. अफजल और डॉ. विनय कुमार ने भी कविता पेश की। संचालन डॉ. अंकिता तिवारी ने किया। इस अवसर पर डॉ. सबीहा रहमानी, डॉ. जितेंद्र कुमार, डॉ. माया वर्मा, डॉ. जय कुमार चौरसिया ...

आईजी ने वॉल आफ फेम पहल को सराहा

राजकीय महिला स्नातकोत्तर महाविद्यालय में वॉल आफ फेम में स्थापित शहीदों के चित्रों का अवलोकन पुलिस महानिरीक्षक के. सत्यनारायणा ने किया। इस पहल का उन्होंने स्वागत किया। शहीदों के सम्मान में वह महाविद्यालय के पूरे स्टाफ के साथ शामिल भी हुए।

सिंह, डॉ. जयंती सिंह, डॉ. ज्योति मिश्रा, डॉ. सपना सिंह, डॉ. विनेन्द्र सिंह चंदेल, डॉ. सुधा तिवारी, डॉ. वीरेंद्र प्रताप चौरसिया, डॉ. अशु वर्मा, डॉ. नीतू सिंह समेत छात्राएं उपस्थित रहीं।

परिशिष्ट- III जारी

समाचार पत्रों में डॉ० शशिभूषण मिश्र

अंग्रेजी पढ़ें पर दिल हिंदी वाला रहे: कमिश्नर

- राजकीय महिला डिग्री कालेज में हिंदी दिवस पर लंबा खिंचा कविताओं और विचारों का प्रवाह
- मेधा मिश्रा और प्रियांशी रैकवार को मिला 2022 का चंद्रपाल कश्यप स्मृति कविता सम्मान



भारत कनेक्ट संवाददाता

बांदा। चित्रकूटधाम कमिश्नर आरपी सिंह ने कहा- हिंदी राष्ट्रीय एकता और अखंडता का सेतु है। इस सेतु को मजबूत बनाए रखना हमारी सामूहिक जिम्मेदारी है। हम भले ही अंग्रेजी में ज्ञान प्राप्त करें लेकिन हमारा दिल हिंदी वाला होना चाहिए। राजकीय महिला स्नातकोत्तर महाविद्यालय में हिंदी दिवस पर आयोजित कार्यक्रम को संबोधित करने से पहले कमिश्नर सिंह ने छात्राओं मेधा मिश्रा और प्रियांशी रैकवार को चंद्रपाल कश्यप स्मृति कविता सम्मान 2022 से सम्मानित किया। वरिष्ठ कवि नरेंद्र पुंडरीक ने कविताओं के जरिए समाज में कवि की भूमिका को रेखांकित किया।

डीसीडीएफ अध्यक्ष सुधीर सिंह ने हिंदी के वर्तमान और भविष्य की चुनौतियों का जिक्र कर कहा कि साहित्य मनुष्य को संवेदनशील बनाता है। सीआरपीएफ में असिस्टेंट कमांडेंट विकास कुमार सिंह ने कविताएं और विचार साझा किए। महाविद्यालय प्राचार्य डा. दीपाली गुप्ता ने कहा कि हिंदी भारतीय जनमानस की भाषा है। हिंदी विभाग में सहायक प्रोफेसर डा. अंकिता तिवारी ने हिंदी को किसान, मजदूर और संघर्षशील चेतना की भाषा बताया। डा. शशिभूषण मिश्र ने रामनरेश त्रिपाठी की कविताओं का पाठ किया। इस अवसर पर डा. सबीहा रहमानी, डा. जितेंद्र कुमार, डा. जय कुमार चैरसिया, डा. माया वर्मा, डा. जेपी सिंह, डा. सपना सिंह, डा. ज्योति मिश्रा, डा. विनोद चंदेल, डा. मोहम्मद अफजल, डा. सुधा तिवारी, डा. स्तुति वर्मा और डा. नीतू सिंह आदि मौजूद रहे।

कार्यक्रम महिला स्नातकोत्तर महाविद्यालय में हिन्दी दिवस पर चंद्रपाल कश्यप स्मृति कविता सम्मान कार्यक्रम का हुआ आयोजन

हिंदी भाषा के प्रचार-प्रसार के लिए अपनी भाषा के प्रति आत्मविश्वास रखें

विश्ववार्ता संवाददाता



बांदा। राजकीय महिला स्नातकोत्तर महाविद्यालय के हिंदी विभाग द्वारा हिन्दी दिवस के अवसर पर हिन्दी भाषा की पहचान के लिये कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि चित्रकूट धाम मण्डल के डीआईजी डा० विपिन कुमार मिश्रा रहे। डीआईजी ने कार्यक्रम के दौरान कहा कि हमें हिन्दी के साथ क्षेत्रीय बोलियों को बचाना होगा। हिन्दी क्षेत्रीय बोलियों का समुच्चय है और बोलियां ही हिन्दी की ताकत है। उन्होंने कहा कि जिस भाषा में जितना आत्मविश्वास होता है उसे उतना ही स्वीकारा जाता है। डीआईजी ने भारतेन्दु हरिश्चन्द्र से लेकर कई साहित्यकारों के योगदान को याद किया और इस बात पर बल दिया कि सतत बदलती परिस्थितियों के अनुसार प्रत्येक भाषा को भी बदलना पड़ता है। उन्होंने कहा कि हिंदी के प्रचार प्रसार के लिए यह बहुत आवश्यक है कि हिंदी पट्टी के लोग अपनी भाषा के प्रति आत्मविश्वास रखें। मुख्य अतिथि ने कार्यक्रम के दौरान महाविद्यालय की दो छात्राओं शिवा देवी और सादिया को संयुक्त रूप से चंद्रपाल कश्यप स्मृति कविता सम्मान प्रदान किया गया। दोनों छात्राओं को सम्मान पत्र और 2100 रु की नकद धनराशि प्रदान की। यह पुरस्कार वर्ष 2020 से बाँदा के कवि चंद्रपाल कश्यप की स्मृति में प्रदान किया जाता है। सम्मान की धनराशि प्रशान्त कश्यप द्वारा उपलब्ध कराई जाती है। पुरस्कारों की श्रृंखला में हिंदी में जेआरएफ परीक्षा उत्तीर्ण करने वाली मेधा मिश्रा और नेट उत्तीर्ण करने वाली प्रियांशी रैकवार को प्रतिभा पुरस्कार प्रदान किया गया। इस अवसर पर महाविद्यालय की प्राचार्य प्रोफेसर दीपाली गुप्ता ने अपने उद्बोधन में कहा कि हिंदी हमारे दिल की भाषा है इसलिए उसकी जगह कोई अन्य भाषा नहीं ले सकती। उन्होंने निज भाषा उन्नति है सब उन्नति को मूल सूत्र को किसी भाषा और संस्कृति के विकास के लिए जरूरी बताया। स्वागत वक्तव्य देते हुए हिंदी विभाग के डॉ. सचिन मिश्रा ने सभी अतिथियों का स्वागत करते हुए यह सवाल उठाया कि हमें क्या पढ़ना चाहिए। उन्होंने केदारनाथ सिंह की कविता के हवाले से भाषा के महत्व पर प्रकाश डाला। कार्यक्रम का संचालन करते हुए हिंदी विभाग के डॉ. शशिभूषण मिश्र ने कहा कि हिंदी भाषा की आज वैश्विक पहचान बनी है। उन्होंने कहा कि अगर भूमंडलीकरण ने हिंदी के सामने चुनौतियां प्रस्तुत की हैं तो कई विकल्प भी खोले हैं। इस अवसर पर प्रो. जितेंद्र कुमार, डॉ. सबीहा रहमानी, डॉ. जयकुमार चौरसिया, डॉ. माया वर्मा, डॉ. जयप्रकाश सिंह, डॉ. जयेंद्र सिंह, डॉ. सपना सिंह, डॉ. अंकिता तिवारी, डॉ. विनोद सिंह चंदेल, डॉ. विनय कुमार पटेल, डॉ. वीरेंद्र प्रताप चौरसिया, डॉ. नीतू सिंह, डॉ. अस्तुति वर्मा, डॉ. संदीप सामंत सिंह, डॉ. रश्मि, डॉ. रामनरेश, डॉ. नीलमणि त्रिपाठी आदि शिक्षक मौजूद रहे। इस अवसर पर हिंदी विभाग की पूर्व छात्राएं भी उपस्थित रहीं।

हिंदी विभाग की दो छात्राओं का नेट में चयन होने पर खुशी

एमए फाइनल की छात्राएं हैं मेधा व प्रियांशी

संवाद न्यूज एजेंसी



नेट परीक्षा में चयनित छात्रा मेधा मिश्रा व प्रियांशी रैकवार के साथ प्रवक्ता डा.शशिभूषण मिश्र व डा.अंकिता तिवारी। संवाद

बांदा। राजकीय महिला स्नातकोत्तर महाविद्यालय की एमए उत्तरार्ध की दो मेधावी छात्राओं मेधा मिश्रा और प्रियांशी रैकवार का यूजीसी नेट परीक्षा में चयन हुआ है। उनका चयन हिंदी विषय से हुआ है। एमए फाइनल की परीक्षाएं दे रहीं इन छात्राओं ने अपने पहले ही प्रयास में यह सफलता पाई है।

छात्रा मेधा और प्रियांशी ने अपनी सफलता का श्रेय गुरु डॉ.शशि भूषण मिश्र और डॉ.अंकिता तिवारी को दिया। छात्राओं का कहना है कि जब तक उनका चयन जेआरएफ में नहीं होता तब तक वो प्रयास करती रहेंगी।

मेधा मिश्रा और प्रियांशी रैकवार साहित्यिक गतिविधियों और रचनात्मक लेखन में भी सक्रिय रहती हैं। उनका सपना डिग्री कॉलेज में प्राध्यापक बनना है।

छात्राओं की इस सफलता पर महिला डिग्री कॉलेज हिंदी विभागाध्यक्ष डॉ.शशिभूषण मिश्र और डा.अंकिता तिवारी ने दोनों छात्राओं को शाबासी दी। प्रवक्ताओं ने बताया कि नेट के पाठ्यक्रम में प्रत्येक यूनिट की योजना के अनुसार छात्राओं से चर्चा करते हैं। उनकी कठिनाइयों का समाधान की कोशिश करते हैं। प्राचार्य प्रो.दीपाली गुप्ता ने नेट उत्तीर्ण छात्राओं को कहा कि उनका प्रयास है कि महाविद्यालय में बेहतर अकादमिक माहौल बने और छात्राएं सफलता की ऊंचाइयां प्राप्त करें।

82 जागरण बाँदा 18
झाँसी, 20 अगस्त 2024

तिरहार पुस्तक भौगोलिक व सामाजिक जीवन का दस्तावेज

केडी सिंह की प्रकाशित पुस्तक तिरहार का समारोह के साथ हुआ विमोचन

समारोह में बड़ी संख्या में शामिल रहे साहित्यकार, कवि व पुस्तक प्रेमी



बाँदा : प्रकाशित तिरहार पुस्तक पर प्रकाश डालते लेखक केडी सिंह।



समारोह में मौजूद साहित्यकार, कवि व गणमान्य लोग।

बाँदा : तिरहार की कहानियां लेखक की स्मृतियों से निर्मित है, जिन्हें उसने स्वयं जिया है। यह तिरहार का पंचनामा है जो अवध और बुन्देलखण्ड के सूत्र कथाएं है। इसकी भाषा ठसक है और लेखक की भाषा भी बहुत शक्तिशाली है। पुस्तक के पात्रों के बोलचाल मे गलियो का प्रयोग, घटनाओ का जीवन्त सृजन करता है।

साहित्य अकादमी युवा कविता पुरस्कार से सम्मानित एवं मुख्य वक्ता गौरव पाण्डेय ने केडी सिंह की पिछले दिनों प्रकाशित पुस्तक तिरहार पर चर्चा के लिए एलआइसी के सभागार में आयोजित समारोह को संबोधित करते हुए पुस्तक के संदर्भ में यह विचार व्यक्त किए। तिरहार पुस्तक पर चर्चा की शुरूआत मयंक खरे ने की और कहा कि तिरहार पुस्तक में किसानो के दर्द को जो व्यक्त किया गया है वह निसंदेह राष्ट्रीय दर्द है। कवि केशव तिवारी ने अपने संबोधन में कहा कि अवधी और बुंदेली गद्य में कोई खास काम नहीं हुआ है। यह किताब एक शुरूआत है। उन्होंने तिरहार पुस्तक के लेखक केडी सिंह के बारे मे कहा कि उन्होंने अपने जीवन के विचारो को पुस्तक में संजोया है। उन्होंने कहा कि श्री सिंह जीवन से विचार की ओर ले जाने वाले रचनाकार है। ब्राह्मणवाद, सामंत वाद का गठजोड़ ही शोषण का आधार है। इस किताब के पात्र इसके प्रमाण है। समीक्षक एवं संपादक शशिभूषण मिश्र ने कहा कि भाषा का जीवंत रूप इस किताब मे सम्मोहित करता है। यह कथाएं तिरहार के भौगोलिक, सामाजिक जीवन का दस्तावेज है। चरित्रों को बुनने का तरीका गद्य की अनूठी देन है। उन्होंने पुस्तक के लिए केडी सिंह की प्रशंसा की है। कहा कि वह परिदृश्य की बुनावट के रचनाकार है। इसी क्रम मे समारोह की अध्यक्षता करते हुए साहित्यकार एवं कवि प्रो. चंद्रिका प्रसाद दीक्षित ने कहा कि केडी सिंह ने जिस प्रकार तिरहार के जन जीवन को रचा है वह गद्य की ताकत और जरूरत का प्रतिमान है। समारोह को संबोधित करते हुए तिरहार पुस्तक के लेखक जो कि संभागीय परिवहन अधिकारी आरटीओ भी है ने प्रकाशित अपनी पुस्तक का परिचय कराते हुए पुस्तक मे दिए गए अनेक उदाहरणो को प्रस्तुत किया और पाठको को समर्पित किया। समारोह मे मौजूद पुस्तक प्रेमी का धन्यवाद ज्ञापन किताब के प्रकाशक विनोद कुमार शुक्ल अनामिका प्रकाशन ने किया, जबकि संचालन सुधीर सिंह ने किया। कार्यक्रम मे प्रेम सिंह, आनंद सिन्हा, राजकुमार राज, पुष्पेंद्र भाई, जयराम सिंह बछेउरा, अखिलेश शुक्ल, राजेश गुप्ता, मर्दन सिंह, आदित्य सिंह परिहार, अरविंद सिंह एवं आरपी कुशवाहा, पूर्व प्रधान रामकिशोर सिंह पट्टीदार, ब्रह्मदत्त सिंह, मन्नू भइया आदि मौजूद रहे।

सार्वभौमिकता, सार्वजनिकता, समकालीनता व किस्सागोई के कथाकार हैं तरुण भटनागर





जबलपुर, दलुक

'पहल' के तत्वावधान में गत दिवस रानी दुर्गावती संग्रहालय की कला वीथिका में कथाकार तरुण भटनागर के कहानी संग्रह 'प्रलय में नाव' का विमोचन वरिष्ठ आलोचक व 'अक्सर' के संपादक सूरज पालीवाल, युवा आलोचक शशिभूषण मिश्र व ज्ञानरंजन ने किया। विमोचन कार्यक्रम के लिए जयपुर से आए सूरज पालीवाल ने कहा कि एक कथाकार के लिए कथ्य और शिल्प का तालमेल बैठा पाना कठिन होता है। यह काम तरुण भटनागर बखूबी करते है। वे अपनी कहानियों में शिल्प का नया प्रयोग करते हैं। 'प्रलय में नाव' कहानी संग्रह की आठों कहानियों में शिल्प का अलग-अलग प्रयोग है। कहानियों का कथ्य ज्ञान बोझिल नहीं है। उसमें किस्सागोई है जिसमें अद्भुत सूक्ष्म जानकारी है, जो साफगोई के साथ कहानी को आज के संदर्भों से जोड़ देती है। तरुण भटनागर की लम्बी कहानियां बार-बार पाठ की मांग करती हैं। इन कहानियों में सार्वभौमिकता, सार्वजनिकता और समकालीनता देखने को मिलती है। इन कहानियों में शोषितों, उत्पीड़ितों, उपेक्षितों, दमितों के प्रति पक्षधरता मिलती है और अप-संस्कृति पर तीखा प्रहार भी साफतौर पर दिखाई देता है। पात्रों के प्रति उनकी तटस्थता उनकी कहानियों को बड़ा बनाती है।

युवा और चर्चित आलोचक शशिभूषण मिश्र ने विस्तार से तरुण भटनागर की कहानियों पर चर्चा करते हुए कहा कि इक्कीसवीं सदी की हिन्दी कहानी में विषयों के अंतरानुशासन को संभव करने, कहानी के भूगोल का विस्तार करने और नवतामूलक कहन भंगिमाओं से समृद्ध करने वाले कथाकार तरुण भटनागर का 'प्रलय में नाव' संग्रह कई दृष्टियों से रेखांकनीय है। उन्होंने संग्रह का अधिकतर रकबा घेरे दो कहानियों, 'प्रलय में नाव' और 'जखूमे-कुहन' की विस्तार से चर्चा की। शशिभूषण मिश्र ने कहा कि इन दो कहानियों से क्या इक्कीसवीं सदी की मुकम्मल पहचान उभरती है और उसमें तरुण भटनागर की उपस्थिति के क्या मायने हैं, इसे देखा जाना चाहिए। ये दोनों कहानियां पर्यावरण और पारिस्थितिकी के विनाश और मनुष्य की बेमुरव्वती को लक्षित करती हैं।

'प्रलय में नाव' जहाँ 'कारोबारी सभ्यता की विनाशलीला' का बहुआयामी पाठ है तो 'जखूम-ए-कुहन' झूठ और फरेब में लिपटी हमारी शिक्षा व्यवस्था की धुंधलाती समझ का प्रतिपाठ है।- उन्होंने कहा कि तरुण भटनागर इक्कीसवीं सदी में आदिवासी जीवन, जंगल और विशेष तौर पर बस्तर के आदिवासी जीवन के विश्वस्त कथाकार हैं। कथाकार तरुण भटनागर ने कहा कि 'पहल' पत्रिका के रूप में जबलपुर की साहित्यिक-सांस्कृतिक पहचान रही है और उससे मुझे लिखने का हौसला मिलता है। एक रचनाकार धारा के विपरीत लिखता है। अपनी रचना प्रक्रिया पर संक्षेप में बोलते हुए उन्होंने कहा कि आपसी तालमेल, जुड़ाव और सहयोग से हमारी यह दुनिया कितनी खूबसूरत हो सकती है।

कार्यक्रम में जबलपुर के साहित्यिक-सांस्कृतिक और कला से जुड़े महत्वपूर्ण व्यक्तियों ने शिरकत की। कार्यक्रम का संचालन और आभार प्रदर्शन कथाकार पंकज स्वामी ने किया। आयोजन के निर्देशन, संचालन, व्यवस्था आदि में राजेन्द्र दानी, मनोहर बिल्लौरे, अवधेश वाजपेयी, शरद उपाध्याय व मुकुल यादव की भूमिका महत्वपूर्ण रही।

पुस्तक 'तिरहार' पर हुई चर्चा, साहित्य प्रेमियों ने सराहा

- किसानों की दास्तां बयां करती है यह पुस्तक
- साहित्यकारों ने क्षेत्र में गद्य का पहला सृजन बताया



तिरहार पर चर्चा के दौरान बोलते साहित्यकार। जागरण

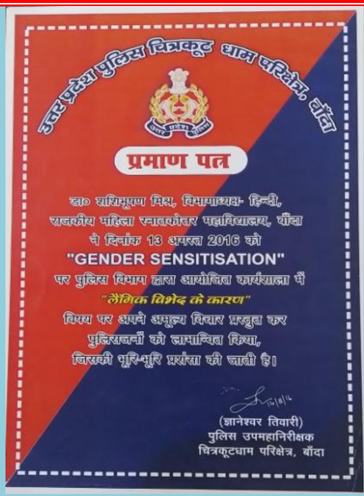
जागरण संवाददाता, बांदा: तिरहार के किसानों के दर्द को महसूस कर लेखक केडी सिंह ने अपनी पुस्तक में किसानों की परिस्थितियों का मार्मिक वर्णन किया है। इसे लेकर रविवार को शहर के एक सभागार में साहित्य की कार्यशाला हुई। इसमें जिले के साहित्य प्रेमी शामिल हुए।

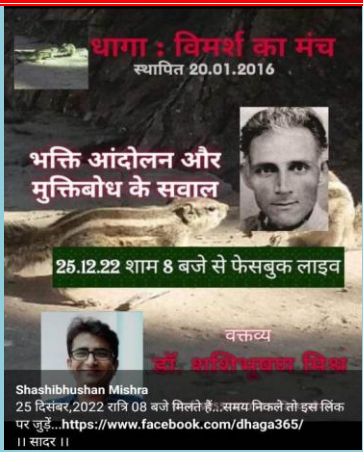
कार्यशाला में लेखक केडी सिंह ने पुस्तक तिरहार में संकलित कथाओं की रचना प्रक्रिया के बारे में जानकारी देते हुए पुस्तक को पाठकों को समर्पित किया। मयंक खरे ने कहा कि तिरहार के किसानों का दर्द किसानों का राष्ट्रीय दर्द है। अनिल शर्मा यह किताब इस क्षेत्र में गद्य का पहला सृजन है। समीक्षक व संपादक शशि भूषण मिश्र ने कहा कि भाषा का जीवंत रूप इस किताब में सम्मोहित करता है। गौरव पांडेय ने इसे तिरहार का पंचनामा बताया। जिसमें अवध और बुंदेलखंड के सूत्र कथाएं हैं। आयोजन के अध्यक्ष प्रो. चंद्रिका प्रसाद दीक्षित ने कहा कि केडी सिंह ने जिस प्रकार तिरहार के जनजीवन की रचना की है। वह गद्य की ताकत और जरूरत का प्रतिमान है। प्रकाशक विनोद कुमार शुक्ल, प्रेम सिंह, आनंद सिन्हा, राज कुमार राज, पुष्पेंद्र भाई, जयराम सिंह, अखिलेश शुक्ल, राजेश गुप्ता, अरविंद सिंह आदि उपस्थित रहे। संचालन सुधीर सिंह ने किया।

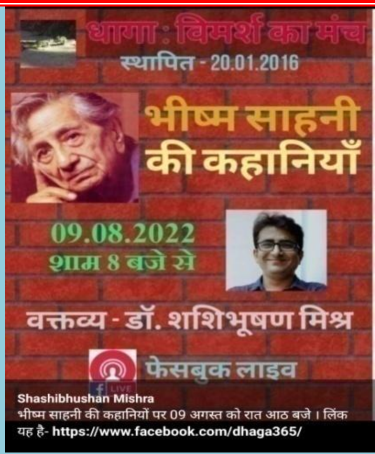
परिशिष्ट- IV

डॉ० शशिभूषण मिश्र के विभिन्न साहित्यिक कार्यक्रमों में वक्तव्य













परिशिष्ट- V

डॉ० शशिभूषण मिश्र द्वारा प्रतिभागित सेमिनार

Sr. No.	Title of the Paper Presented	Focal Theme of Conference/Seminar	Organized By
01	भक्ति आन्दोलन और लोक जागरण	लोक जागरण और हिन्दी साहित्य	शासकीय स्वशासी स्नातकोत्तर महाविद्यालय एवं शोध अध्ययन केन्द्र, सतना (म०प्र०) (22, 23 March, 2012)
02	भक्ति साहित्य की अर्थवत्ता	21वीं सदी के परिप्रेक्ष्य में हिन्दी व अन्य भारतीय साहित्य की अर्थवत्ता	शासकीय हमीदिया कला एवं वाणिज्य महाविद्यालय, बुधवारा, हाथीखाना रोड, भोपाल (म०प्र०) (08, 09 March, 2013)
03	संत कविता के प्रगतिशील आयाम	संत एवं भक्तिकालीन साहित्य: एक पुनर्मूल्यांकन	छत्रसाल शासकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, पन्ना (म०प्र०) (25, 26 April, 2015)
04	PARYAVARNEEY SANKAT AUR HINDI UPANYAS	Changing Environment: Issues and Challenges	Dr. B.R.A. Govt. Girls P.G. College, Fatehpur (U.P.) (19 September, 2015)
05	हिन्दी उपन्यासों में पर्यावरणीय चेतना	भारतीय संस्कृति में पारिस्थितिकी एवं पर्यावरण के विविध आयाम	उत्तर प्रदेश राजर्षि टण्डन मुक्त विश्वविद्यालय, इलाहाबाद (उ०प्र०) (28, 29 January, 2016)
06	उच्च शिक्षा के बुनियादी सवाल और इक्कीसवीं सदी का भारत	Recent Initiatives in Higher Education	Govt. Post Graduate College, Fatehabad, Agra (U.P.) (20, 21 February, 2016)
07	पाठ-निर्माण की व्यावहारिक समस्याएँ और संत साहित्य	पाठालोचन की प्रविधि: समस्याएँ और संभावनाएँ	पण्डित जवाहरलाल नेहरू महाविद्यालय, बाँदा (उ०प्र०) (10, 11 September, 2016)
08	भीष्म साहनी की कहानियाँ: पाठ की नई संभावनाएँ	भीष्म साहनी का रचना संसार	हिन्दी विभाग, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी (उ०प्र०) (01, 02 October, 2016)
09	उच्च शिक्षा का वैश्विक परिदृश्य और भारतीय शिक्षा व्यवस्था	Current Initiatives in Higher Education	Govt. Post Graduate College, Fatehabad, Agra (U.P.) (22 January, 2017)

डॉ० शशिभूषण मिश्र द्वारा प्रतिभागित सेमिनार

परिशिष्ट- V जारी

Sr. No.	Title of the Paper Presented	Focal Theme of Conference/Seminar	Organized By
10	भक्ति साहित्य में नैतिक मूल्य	Morality to Spirituality: Religion, Society and Development	Savitri Bai Fule Govt. Post Graduate College, Chakia, Chandauli, (U.P.) (29, 30 January, 2017)
11	भक्ति आन्दोलन के वर्गीय आधार और मुक्तिबोध के सवाल	मुक्तिबोध: सृजन और वैचारिकी का आत्मसंघर्ष	हिन्दी विभाग, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी (उ०प्र०) (25, 27 February, 2017)
12	राष्ट्रीयता की अविधारणा और मैथिलीशरण गुप्त का काव्य	भारत की राष्ट्रीय चेतना और राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त एवं लोकभाषा बुन्देली: वर्तमान दशा और नई सम्भावनाएँ	हिन्दी विभाग, बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय, झाँसी एवं अखिल भारतीय साहित्य परिषद्, झाँसी महानगर (उ०प्र०) (03, 04 August, 2017)
13	अभिमन्यु अनत के उपन्यासों में प्रश्नाकुल जीवन और संघर्ष के आयाम	प्रवासी हिन्दी साहित्य: दशा एवं दिशा	डॉ० भीमराव अम्बेडकर विश्वविद्यालय, आगरा, साहित्य अकादमी संस्कृति मन्त्रालय, भारत सरकार एवं हिन्दी वैश्विक संस्थान, नीदरलैण्ड्स, यूरोप (12, 13 January, 2018)
14	पण्डित दीनदयाल उपाध्याय का राजनीतिक चिन्तन	भारतीय संस्कृति और परम्परा के प्रणेता पण्डित दीनदयाल उपाध्याय की चिन्तन दृष्टि	समाजशास्त्र विभाग, डॉ० भीमराव अम्बेडकर राजकीय महिला स्नातकोत्तर महाविद्यालय, फतेहपुर (20, 21 January, 2018)
15	इक्कीसवीं सदी: राजनीति और महिला सहभागिता	Women in 21st Century: Status and Analysis	Department of Political Science, Dr. B.R.A. Govt. Girls P.G. College, Fatehpur (U.P.) (10, 11 February, 2018)
16	जायसी के काव्य में लोक	हिन्दी साहित्य के व्यापक परिदृश्य में लोक साहित्य का महत्व	राजर्षि पुरुषोत्तम दास टंडन राजकीय महाविद्यालय, तालबेहट, ललितपुर (उ०प्र०) (24, 25 February, 2018)
17	समकालीन उपन्यासों में शहरीकरण की समस्या	Relevance of Smart Cities in Context of Rising Urbanization in India	Department of Economics, Govt. Girls P.G. College, Bindki, Fatehpur (U.P.) (26, 27 February, 2018)

डॉ० शशिभूषण मिश्र द्वारा प्रतिभागित सेमिनार

परिशिष्ट- V जारी

Sr. No.	Title of the Paper Presented	Focal Theme of Conference/Seminar	Organized By
18	उच्च शिक्षा का आर्थिक ढाँचा	Emerging Scenario In Indian Higher Education System: Issues and Challenges	Lalta Singh Rajkiya Mahila P.G. College, Adalhat, Mirzapur (U.P.) (22, 23 September, 2018)
19	नए भारत में स्त्री लेखन का चेहरा	Role of Women in New India	Department of Sociology, Govt. Girls P.G. College, Banda (U.P.) (03, 04 November, 2018)
20	समकालीन हिन्दी कहानी में चित्रित सामाजिक चुनौतियाँ	Contemporary Social and Health Issues: Global Perspectives	Contemporary Literary Society of Amlor, Banda and Government Allopathic Medical College, Banda (U.P.) (29 June, 2019)
21	भक्ति संवेदना में जैन दर्शन की भूमिका	जैन साहित्य का हिन्दी भक्तिकाल पर प्रभाव	हिन्दी तथा आधुनिक भारतीय भाषा विभाग, लखनऊ विश्वविद्यालय, लखनऊ (उ०प्र०) (01 December, 2019)
22	उच्च शिक्षा की वर्तमान दशा और दिशा	Quality Concerns in Higher Education in India	Department of Political Science, Govt. Girls P.G. College, Bindki, Fatehpur (U.P.) (11, 12 February, 2020)
23	उच्च शिक्षा पाठ्यक्रमों की नवीनता और प्रश्न	Environmental Challenges and their Socio-economic Traditional and Cultural Solutions in India	Department of Zoology and Hindi, Dr. B.R.A. Govt. Girls P.G. College, Fatehpur (U.P.) (15, 16 February, 2020)
24	समकालीन कथा साहित्य में आदिवासी समाज	भारतीय भाषा महोत्सव-2020	उत्तर प्रदेश भाषा संस्थान एवं हिन्दी तथा आधुनिक भारतीय भाषा विभाग, लखनऊ विश्वविद्यालय, लखनऊ (उ०प्र०) (22, 23, 24 February, 2020)

डॉ० शशिभूषण मिश्र द्वारा प्रतिभागित सेमिनार **परिशिष्ट- V जारी**

Sr. No.	Title of the Paper Presented	Focal Theme of Conference/Seminar	Organized By
25	समकालीन ग्रामीण यथार्थ और इक्कसवीं सदी की हिन्दी कहानी	इक्कसवीं सदी की हिन्दी कहानी: कथा दृष्टि के बदलते आयाम	इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय, क्षेत्रीय केन्द्र जबलपुर (म०प्र०) (14, 15 August, 2021)
26	स्त्री अस्मिता के प्रश्न और समकालीन सरोकार	आज़ादी की पचहत्तर वर्षीय विकास यात्रा में महिलाओं की भूमिका	सौभाग्यवती बाई दानी महिला महाविद्यालय, धामपुर, बिजनौर (उ०प्र०) (22, 23 December, 2022)
27	सांस्कृतिक साम्राज्यवाद के समक्ष भारत	अमृत काल (2022-2047) में भारत के समक्ष चुनौतियाँ एवं अवसर	शासकीय तिलक स्नातकोत्तर महाविद्यालय, कटनी (म०प्र०) (17, 18 January, 2023)
28	समावेशी विकास	Sustainable Development and Globalization: New Challenges and Opportunities	Department of Sociology, Govt. Girls P.G. College, Banda (U.P.) (29, 30 March, 2023)
29	सन्त कविता में कबीर	सन्त कविता में मानव धर्म: कबीर से कीनाराम तक	हिन्दी विभाग, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी (उ०प्र०) (09, 10, 11 June, 2023)
30	साहित्य की मूल्य परम्परा और गाँधी	गाँधी और हिन्दी साहित्य	गाँधी भवन, दि०वि० एवं हिन्दी विभाग, गाँधी स्टडी सर्किल, आई०क्यू०ए०सी० श्यामलाल कॉलेज, दिल्ली (24 April, 2024)

परिशिष्ट- VI

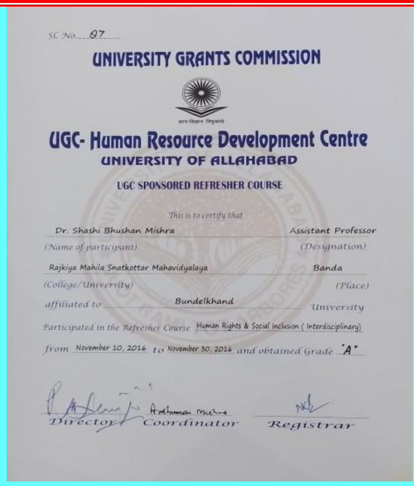
डॉ० शशिभूषण मिश्र द्वारा किए गए रिफ्रेशर कोर्स एवं पी०-एच०डी० उपाधि


Ministry of Human Resource Development
Pandit Madan Mohan Malaviya National Mission on Teachers and Teaching
Teaching Learning Centre
Ramanujan College
University of Delhi
And
IQAC, Kalindi College
University of Delhi

Certificate

This is to certify that
Dr. Shashibhushan Mishra
of
Assistant Professor, Govt.Girls P.G. College, Banda (U.P.)
has successfully completed 14 Days Interdisciplinary National Faculty Development Programme on "SAMKALIN SANDARBH MAI SAHITYA, RAJNITI, MEDIA AUR BAZAR"
July 27 - August 10, 2020

Dr. S.P. AGGARWAL (Principal) Director, TLC Ramanujan College — Dr. Meena Charanda Convener, FDP Kalindi College — Dr. Anjula Bansal Chairman, IQAC Kalindi College


Sl. No. 07
UNIVERSITY GRANTS COMMISSION
UGC- Human Resource Development Centre
UNIVERSITY OF ALLAHABAD
UGC SPONSORED REFRESHER COURSE

This is to certify that
Dr. Shashi Bhushan Mishra (Name of participant) — Assistant Professor (Designation)
Rajkiya Mahila Snatkottar Mahavidyalaya (College/University) — Banda (Place)
affiliated to Bundelkhand University
Participated in the Refresher Course Human Rights & Social Inclusion (Interdisciplinary)
from November 10, 2016 to November 30, 2016 and obtained Grade "A"

Director — Coordinator — Registrar






S.NO. SSA/SCERT/ACAD/2009-10/21610 — Year 2009-10
State Council of Educational Research and Training
(An Autonomous Organisation of Govt. of NCT of Delhi)
सर्व शिक्षा अभियान
YUVA SCHOOL LIFE SKILLS PROGRAMME

Certificate

Certified that Mr./Ms. Shashi Bhushan Mishra (2008/363) PGT / TGT / Assistant Teacher of G.B.S.S.S. No.3 Badar Pur (1925247) Delhi/New Delhi has participated in the 10 days SSA Training Programme for PGT / TGT / Assistant Teacher of MCD / NDMC / DCB / Directorate of Education from 16/06/09 to 26/6/09 except — days, organised by SCERT at K.C.S.B.V. Chirag Enclave Delhi/New Delhi.

Signature Academic Co-ordinator — District Co-ordinator (DIET - Principal) — Joint Director / Director SCERT


OFFICE OF THE DEPUTY DIRECTOR OF EDUCATION
GOVT. OF N.C.T. OF DELHI, DIRECTORATE OF EDUCATION
DISTT SOUTH, DEFENCE COLONY, NEW DELHI
GOVT. OF DELHI

Merit Certificate

I am pleased to appreciate that Sh. / Ms SHASHI BHUSHAN MISHRA working as P.G.T.(HINDI) in G.B.S.S. school, NO.3 BADAR PUR, New Delhi has shown 100 % result in the Subject HINDI in Sr. Secondary/Secondary Examination conducted by C.B.S.E in the Academic year 2008-09.

His/Her sincere effort made for achieving this outstanding performance is highly commendable and it is hoped that higher results and excellence in education will be accomplished in the years to follow.

EDN. OFFICER ZONE 25 DISTRICT SOUTH — (ANITA SATIA) DY. DIRECTOR OF EDUCATION DISTRICT SOUTH

डॉ० शशिभूषण मिश्र द्वारा किए गए रिफ्रेशर कोर्स एवं पी०-एच०डी० उपाधि


UNIVERSITY GRANTS COMMISSION
MALVIYA MISSION TEACHER TRAINING CENTRE (MMTTC)
RANCHI UNIVERSITY, RANCHI
(2023-2024 ONLINE COURSES)

This is to certify that Dr. Shashi Bhushan Mishra, Assistant Professor, Govt. Girls P.G. College, Banda (U.P.) delivered the following lecture as resource person to the participants of GURU DAKSHTA 19th Faculty Induction Programme (FIP), organized in this institute from 24.11.2023 to 21.12.2023 as per UGC guidelines.

Topic	Date	Time
मौलिक अधिकार और कर्तव्य	13-12-2023	02:00 pm to 03:30 pm

His/her services were appreciated by the participants.

Prof. (Dr.) Sudesh Kr. Sahu
Director


E-certificate No.
SRC-Hindi-01-14 Dec./2022/S. No-79
University Grants Commission
Human Resource Development Centre (HRDC)
Aligarh Muslim University, Aligarh
UGC Sponsored online Refresher Course
THIS IS TO CERTIFY THAT

Mr./Ms./Mrs./Dr. SHASHIBHUSHAN MISHRA, Assistant Professor, Govt. Girls PG. College, Banda (UP) (Bundelkhand University, Jhansi) participated in the online Subject Refresher Course in Hindi from 01 December 2022 to 14 December 2022 organized by UGC Human Resource Development Centre, Aligarh Muslim University, Aligarh and obtained Grade- 'A'.

Director | Course Co-ordinator | Registrar

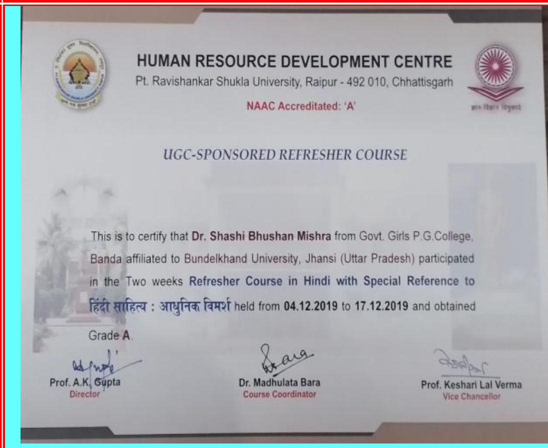

Spoken Tutorial Project at IIT Bombay
Certificate of Participation
NATIONAL MISSION ON TEACHERS AND TEACHING

This is to certify that Dr. Shashibhushan Mishra has participated in Paid FDP from 2020-11-06 to 2020-11-10 on Moodle Learning Management System organized by Government Girls P. G. College, Banda with course material provided by Spoken Tutorial Project, IIT Bombay.

This training is offered by the Spoken Tutorial Project, IIT Bombay.

Prof. Kannan M Moudgalya
IIT Bombay

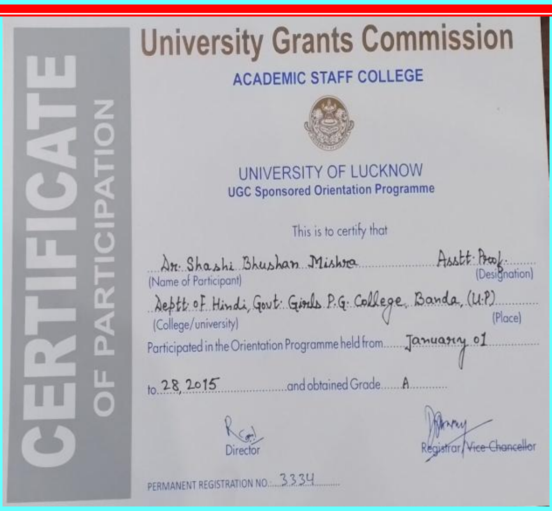
Spoken Tutorial is a project at IIT Bombay, started with funding from the National Mission on Education through ICT, Ministry of Education (previously MHRD), Govt. of India


HUMAN RESOURCE DEVELOPMENT CENTRE
Pt. Ravishankar Shukla University, Raipur - 492 010, Chhattisgarh
NAAC Accreditated: 'A'

UGC-SPONSORED REFRESHER COURSE

This is to certify that Dr. Shashi Bhushan Mishra from Govt. Girls P.G.College, Banda affiliated to Bundelkhand University, Jhansi (Uttar Pradesh) participated in the Two weeks Refresher Course in Hindi with Special Reference to हिंदी साहित्य : आधुनिक विमर्श held from 04.12.2019 to 17.12.2019 and obtained Grade A.

Prof. A.K. Gupta, Director | Dr. Madhulata Bara, Course Coordinator | Prof. Keshari Lal Verma, Vice Chancellor


CERTIFICATE OF PARTICIPATION
University Grants Commission
ACADEMIC STAFF COLLEGE
UNIVERSITY OF LUCKNOW
UGC Sponsored Orientation Programme

This is to certify that
Dr. Shashi Bhushan Mishra (Name of Participant) Asstt. Prof. (Designation)
Deptt. of Hindi, Govt. Girls P.G. College, Banda (U.P.) (College/university) (Place)
Participated in the Orientation Programme held from January 01 to 28, 2015 and obtained Grade A

Director | Registrar/Vice-Chancellor

PERMANENT REGISTRATION NO. 3334


दिल्ली विश्वविद्यालय
UNIVERSITY OF DELHI

प्रमाणित किया जाता है कि अगस्त, 2012 में शोध प्रबंध स्वीकृत हो जाने के उपरांत शशी भूषण मिश्रा को 2013 के दीक्षांत समारोह में दिल्ली विश्वविद्यालय की विद्या-वाचस्पति की उपाधि प्रदान की गई।
विभाग हिन्दी

This is to certify that on approval of the thesis in August, 2012 Shashibhushan Mishra qualified for the degree of Doctor of Philosophy (Ph.D.) of this University. The said degree was conferred upon him/her at the Convocation held in 2013.
Department Hindi

कुलसचिव, दिल्ली विश्वविद्यालय, Registrar, University of Delhi
दिल्ली, दिनांक 19 मार्च, 2013 / Delhi, Dated the 19th March, 2013
कुलपति, दिल्ली विश्वविद्यालय, Vice-Chancellor, University of Delhi



"आलोचना रचना तक पहुँचने वाली एक ऐसी पगडंडी है जो बहुत खतरनाक है तथा बहुत श्रम साध्य है। अपनी रचना की वाहवाही करना सरल है लेकिन दूसरे की रचना में प्रवेश करते हुए उसकी अच्छाइयों-बुराइयों को निकालना बहुत श्रम-साध्य है, इसी दोहरे श्रम के कारण ही सम्पूर्ण दुनिया में आलोचकों की संख्या बहुत कम है।"

ISBN : 978-93-341-2449-1